सूअर राजा जैसी कहानियाँ–2

संकलन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Book Title: Sooar Raja Jaisi Kahaniyan-8-2 (Pig King Like Stories-8-2)
Cover Page picture : Conversion of the Prince from a Serpent
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

एक कहानी कई रंग 5

सूअर राजा जैसी कहानियाँ–2 7

1 साँप बादशाह 9

2 शापित साँप 27

3 जादूगर सर फ़िओरान्ते 44

4 साँप राजकुमार 50

5 साँप सरदार 66

6 तालाब का रक्षक 74

7 एक लड़की और साँप 80

8 साँप राजकुमार और उसकी दो पत्नियाँ 83

9 शापित ज़ारेविच 95

10 क्यूपिड और साइक 102

11 अदृश्य दुलहा 127

12 एक आदमी जो केवल रात को बाहर निकलता था 141

13 मेंढक राजकुमार–1 149

14 मेंढक राजकुमार–2 156

15 शापित मेंढक 165

16 तीन पंख 170

17 लम्बी पूँछ वाला चूहा 178

एक कहानी कई रंग

लोक कथाओं के महत्व को ध्यान में रखते हुए कुछ समय पहले हमने कुछ लोक कथाऐं संकलित की थीं। उनको हमने "देश विदेश की लोक कथाऐं" सीरीज़ में प्रकाशित किया था। वे कथाऐं जब काफी संख्या में इकट्ठी हो गयीं, करीब करीब **2000,** तो उनमें एक तस्वीर देखी गयी। वह थी कि उनमें से कुछ कहानियाँ एक सी थीं और आपस में बहुत मिलती जुलती थीं। तो लोक कथाओं की एक और सीरीज़ शुरू की गयी और वह है "एक कहानी कई रंग"।

कितना अच्छा लगता है जब एक ही कहानी के कई रूप पढ़ने को मिलते हैं। इन पुस्तकों में ये कहानियाँ कुछ इसी तरह की कहानियाँ दी गयी हैं। सबसे पहले इसमें सबसे ज़्यादा लोकप्रिय कहानी दी गयी है और उसके बाद ही उसके जैसी दूसरी कहानियाँ दी गयी हैं जो दूसरी जगहों पर पायी जाती हैं। हम यह दावा तो नहीं करते कि वैसी सारी कहान्यिाँ हम यहाँ दे रहे हैं पर हमारी कोशिश यही रहेगी कि वैसी कहानियाँ हम एक जगह इकट्ठा कर दें।

इस सीरीज़ में हम सात पुस्तकें पहले ही प्रकाशित कर चुके हैं। यह इस सीरीज़ की आठवीं पुस्तक है "जूता पहने हुए बिल्ला जैसी कहानियाँ"। इस सीरीज़ में प्रकाशित कुछ पुस्तकों की सूची इस पुस्तक के अन्त में दी हुई है।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में यह जानने की प्रेरणा भी देंगी कि एक ही तरह की कहानी किस तरह से दूसरे देशों में पहुँची। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

सूअर राजा जैसी कहानियाँ–2

हमने एक नयी सीरीज़ शुरू की है "एक कहानी कई रंग"। इसमें वे कथाऐं शामिल की गयीं हैं जो सुनने में एक सी लगती हैं पर अलग अलग जगहों पर अलग अलग तरीके से कही सुनी जाती हैं। बच्चों जैसे तुम लोग कहानियाँ सुनते हो वैसे ही दूसरे देशों में भी वहाँ के बच्चे कहानियाँ सुनते हैं। क्योंकि कहानियाँ हर समाज की अलग अलग होती हैं इसलिये उन बच्चों की कहानियाँ भी तुम्हारी कहानियों से अलग हैं।

पर कुछ कहानियाँ ऐसी भी हैं जो भिन्न भिन्न देशों में कही सुनी जाती हैं पर सुनने में एक सी लगती हैं। यहाँ कुछ ऐसी ही कहानियाँ दी जा रही हैं। ये सब कहानियाँ कुछ इस तरह से चुनी गयी हैं कि ये सब कहानियाँ एक सी कहानियों की श्रेणी में रखी जा सकती हैं। ऐसी बहुत सी कहानियाँ हैं। ऐसी कहानियाँ हम "एक कहानी कई रंग" की सीरीज़ के अन्तर्गत प्रकाशित कर रहे हैं। अगर इन कहानियों के अलावा भी तुम और कोई ऐसी कहानी जानते हो तो हमें जरूर लिखना। हम उसको इसके अगले आने वाले संस्करण में शामिल करने का प्रयास करेंगे। इन सभी पुस्तकों में सबसे पहले मूल कहानी दी गयी है फिर उसके बाद वैसी ही दूसरे देशों में कही जाने वाली कहानियाँ कही गयीं हैं। इस सीरीज़ में, यानी "एक कहानी कई रंग" की सीरीज़ में, इससे पहले हम सात पुस्तकें प्रकाशित कर चुके हैं।

इन कहानियों की सीरीज़ में सबसे पहली पुस्तक थी "बिल्ला और चुहिया जैसी कहानियाँ"। इस पुस्तक में कुछ ऐसी कहानियाँ हैं जिनमें कोई एक किसी से कोई काम कराना चाहता है पर वह दूसरा उस काम को तब तक नहीं करता जब तक उसकी अपनी शर्त पूरी नहीं हो जाती सो उसको उसकी शर्त पूरी करने के लिये काम करने वाले को कहीं और जाना पड़ता है। और यह कड़ी तब तक चलती रहती है जब तक उसका अपना काम नहीं हो जाता।[1]

इसकी तीसरी पुस्तक में "टौम थम्ब जैसी कहानियाँ" दी गयीं हैं। इसमें बहुत छोटे बच्चे की करामातों की कथाऐं हैं।[2] इस सीरीज़ की चौथी पुस्तक "छह हंस" जैसी कुछ कहानियों का संग्रह है जिसकी कहानियों की हीरोइन एक छोटी लड़की, साधारणतया सबसे छोटी बहिन, होती है जो अपने दो या चार या सात भाइयों को पक्षी या जानवर बन जाने के शाप से छुटकारा दिलाती है। ये सब कहानियाँ बहिन भाई के प्यार की कहानियाँ हैं।[3]

इस सीरीज़ की पाँचवीं पुस्तक कुछ ऐसी कहानियों का संग्रह है जो "तीन सन्तरे" कहानी जैसी हैं।[4] इसी सीरीज़ की छठी पुस्तक में "सफेद राजकुमारी और सात बौने"[5] वाली कहानी जैसी कुछ कहानियाँ दी गयी हैं। यह कहानी यूरोप के देशों की एक बहुत ही लोकप्रिय कहानी है। इस सीरीज़ की सातवीं पुस्तक में "सोती हुई सुन्दरी" जैसी कहानियाँ हैं।[6]

इस सीरीज़ की आठवीं पुस्तक "सूअर राजा"[7] में सूअर राजा जैसी कुछ कहानियाँ दी जा रही हैं। इन कहानियों में राजकुमार शाप के कारण एक जानवर बन जाते हैं और वे उन शापों से तभी आजाद होते हैं जब कोई उनसे शादी करता है। ऐसी कई कहानियाँ हैं। आसानी के लिये इन कहानियों को अभी तीन भागों में बाँटा गया है।

---

[1] "One Story Many Colors-1" – "Cat and Rat Like Stories"
[2] "One Story Many Colors-3" – "Tom Thumb Like Stories"
[3] "One Story Many Colors-4" – "Six Swans Like Stories"
[4] "One Story Many Colors-5" – "Three Oranges Like Stories"
[5] "One Story Many Colors-6" – " Snow White and the Seven Dwarves Like Stories"
[6] "One Story Many Colors-7" – "Sleeping Beauty Like Stories"
[7] "One Story Many Colors-8-1" – like "The Pig King-1"

इसके पहले भाग में वे कहानियाँ हैं जिनमें शाप के कारण राजकुमार सूअर बन गये हैं। इसके दूसरे भाग में वे कहानियाँ है जिनमें शाप के कारण राजकुमार या फिर कोई साधारण आदमी सूअर के अलावा कोई दूसरा जानवर बन गया है। इसके तीसरे भाग में वे शेष कहानियाँ हैं जिनमें "कोई" जानवर के अलावा "कुछ और" बन गया है।

ऐसी कुछ कहानियों का पहला संग्रह हिन्दी में हम प्रकाशित कर चुके हैं जिसकी सब कहानियों में राजकुमार सूअर बन जाते हैं। अब प्रस्तुत है इसी तरह की कुछ और कहानियाँ जिनमें कोई आदमी सूअर नहीं बना है बल्कि कोई और जानवर बन गया है। आशा है कि तुम लोगों को इस सीरीज़ में प्रकाशित की गयी दूसरी पुस्तकों की तरह यह पुस्तक भी बहुत पसन्द आयेगी। इसका तीसरा संग्रह भी हम जल्दी ही प्रकाशित करने जा रहे हैं। उसमें हम वैसी कहानियाँ प्रकाशित करेंगे जिनमें लोग सूअर और दूसरे जानवर के अलावा कुछ और बन गये हैं या उनमें से निकले हैं।

तो लो पढ़ो ऐसी कुछ कहानियाँ "सूअर राजा जैसी कहानियाँ–**2**" पुस्तक में जिनमें लोग सूअर की बजाय कोई और जानवर बन जाते हैं। आशा है कि तुम लोगों को इस सीरीज़ में प्रकाशित की गयी दूसरी पुस्तकों की तरह यह पुस्तक भी बहुत पसन्द आयेगी। अभी ये कहानियाँ पूरी नहीं हुई हैं इसलिये इन्तजार करो इस पुस्तक के तीसरे भाग के प्रकाशित होने का।

1 सॉप बादशाह[8]

सूअर राजा जैसी कहानियों की इस दूसरी पुस्तक की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है। इस कहानी में एक राजकुमार पर जादू डाल कर उसको एक सॉप बना दिया जाता है।

एक बार एक राजा और रानी थे जिनके कोई बच्चा नहीं था। रानी एक बच्चे के लिये रोज प्रार्थना करती, बहुत सारे उपवास रखती पर उसको कोई बच्चा नहीं हुआ।

एक दिन वह एक खेत में घूम रही थी। वहॉ उसने कई किस्म के बहुत सारे जानवर देखे – छिपकलियॉ, चिड़ियें, सॉप। सब अपने अपने बच्चों के साथ घूम रहे थे।

वह सोच रही थी — "देखो ये सारे जानवर अपने अपने बच्चों के साथ घूम रहे हैं और मेरे कोई बच्चा नहीं है।"

तभी एक सॉप अपने बच्चों के साथ उसके पास से गुजरा तो रानी के मुॅह से निकला — "काश मेरे एक सॉप का बच्चा ही हो जाये तो मैं तो एक सॉप के बच्चे से ही सन्तुष्ट हो जाऊॅगी।"

---

[8] Serpent King – a folktale from Italy from its Calabria area. Adapted from the book "Italian Folktales", by Italo Calvino". Translated by George Martin in 1980. Hindi translation of this book is available from hindifolktales@gmail.com

अब कुछ ऐसा हुआ कि उसके ऐसा बोलते ही उसको बच्चे की आशा हो गयी। सारे राज्य के लोग बहुत खुश हुए। पर जब बच्चे के पैदा होने का दिन आया तो रानी ने एक साँप को ही जन्म दिया।

यह देख कर सबकी बोलती बन्द हो गयी। पर रानी को अपनी कही बात याद आ गयी। यह सोचते हुए कि उसकी प्रार्थना का उसको जवाब मिल गया वह अपने साँप बच्चे को बहुत प्यार करने लगी और उसको पा कर इतनी खुश हुई जैसे कि वह उसका बेटा ही हो।

उसने उसको एक लोहे के पिंजरे में रख दिया और उसको वही खिलाया जो साँप खाते थे – सूप और माँस, दोपहर को और शाम को। वह साँप खाता भी खूब था – दो के बराबर और दिन ब दिन बड़ा हो रहा था।

जब वह साँप बहुत बड़ा हो गया तो एक दिन जब उसकी नौकरानी उसके लिये उसका बिस्तर ठीक करने आयी तो उसने उससे कहा — "मेरे प्यारे पिता से कहना कि अब मुझे एक ऐसी पत्नी की जरूरत है जो सुन्दर हो और अमीर हो।"

यह सुन कर वह नौकरानी तो बहुत डर गयी और अब तो वह उसके पिंजरे के पास भी जाना नहीं चाहती थी।

पर रानी ने जब उसको साँप राजकुमार के लिये खाना ले जाने के लिये कहा तो वह बेचारी डरती डरती उसके लिये खाना ले कर आयी तो साँप ने अपनी बात फिर दोहरायी — "मेरे प्यारे पिता से

कहना कि अब मुझे एक ऐसी पत्नी की जरूरत है जो सुन्दर हो और अमीर हो।"

नौकरानी ने जा कर यह सब रानी से कहा तो रानी बोली — "अब हम क्या करें?"

उसने अपने एक किसान को बुलवाया और उससे कहा — "तुम जो कहोगे मैं तुमको वही दूँगी अगर तुम अपनी बेटी मुझे ला दो तो। मैं उसकी शादी अपने बेटे से करना चाहती हूँ।"

वह किसान रानी को मना तो नहीं कर सकता था सो वह बेचारा राजी हो गया और अपनी बेटी को रानी के पास ले आया। साँप और उस किसान की बेटी की शादी धूमधाम से हो गयी। साँप दावत की मेज पर भी बैठा। शाम को दोनों अपने कमरे में सोने चले गये।

रात को साँप ने अपनी पत्नी को जगाया और उससे पूछा — "क्या समय है?"

उस समय सुबह के चार बजे थे। पत्नी ने जवाब दिया — "यह वही समय है जब मेरे पिता सुबह उठते हैं, अपना हल उठाते हैं और खेतों को जाते हैं।"

साँप बोला — "तो तुम किसान की बेटी हो।" कह कर उसने उसके गले पर काट लिया और उसको मार दिया।

अगली सुबह जब नौकरानी सुबह का नाश्ता ले कर आयी तो उसने देखा कि बहू तो मरी पड़ी है।

वह साँप फिर बोला — "मेरे प्यारे पिता से कहना कि अब मुझे एक ऐसी पत्नी की जरूरत है जो सुन्दर हो और अमीर हो। हाँ ध्यान रखना कि वह सुन्दर भी हो और अमीर भी।"

अबकी बार रानी ने एक चमार को बुलाया जो वहीं सड़क के उस पार रहता था। उसकी भी एक बेटी थी। रानी ने उससे भी वही कहा जो उसने किसान से कहा था — "तुम जो कहोगे मैं तुमको वही दूँगी अगर तुम अपनी बेटी मुझे ला दो तो। मैं उसकी शादी अपने बेटे से करना चाहती हूँ।"

चमार जब राजी हो गया तो साँप राजकुमार की शादी उसकी बेटी के साथ धूमधाम से की गयी। रात को साँप ने अपनी पत्नी को जगाया और उससे पूछा कि उस समय क्या समय था।

उसकी पत्नी बोली — "यह वही समय है जब मेरे पिता सुबह उठते हैं और अपनी काम की जगह जा कर हथौड़ी मारते हैं।"

साँप बोला — "तो तुम चमार की बेटी हो।" कह कर उसने उसके गले पर भी काट लिया और वह भी मर गयी।

अगली बार रानी ने एक बादशाह की लड़की से उसकी शादी करने के लिये कहा। वह बादशाह अपनी बेटी की शादी एक साँप से नहीं करना चाहता था सो उसने इस बारे में अपनी पत्नी से भी सलाह की।

इत्तफाक से उसकी पत्नी उस लड़की की सौतेली माँ थी जो उससे छुटकारा पाना चाहती थी सो उसने बादशाह को कह सुन कर

उस लड़की की शादी उस साँप राजकुमार से करने के लिये राजी कर लिया।

वह लड़की बेचारी और तो कुछ कर नहीं सकी सो वह अपनी माँ की कब्र पर गयी और रो कर उससे पूछा — "मैं क्या करूँ माँ? मेरी सौतेली माँ मेरी शादी एक साँप से कर रही है।"

उसकी माँ ने कब्र में से जवाब दिया — "तुम उस साँप राजकुमार से शादी कर लो मेरी बेटी। पर अपनी शादी के दिन तुम एक के ऊपर एक सात पोशाक पहनना।

जब तुम सोने जाओ तो कह देना कि तुमको कोई नौकरानी नहीं चाहिये और अपने कपड़े तुम खुद ही उतार लोगी।

जब तुम उस साँप के साथ अकेली रह जाओ तो उस साँप राजकुमार से कहना कि एक पोशाक तुम अपनी उतारोगी और एक खाल वह अपनी उतारेगा।

फिर पहले तुम अपनी पहली पोशाक उतारना और फिर वह अपनी पहली खाल उतारेगा। तुम फिर वही कहना कि एक पोशाक मैं अपनी उतारती हूँ और एक खाल तुम अपनी उतारो। इस तरह से एक एक कर के तुम दोनों अपने अपने कपड़े उतारते रहना।"

माँ के कहने पर उस लड़की ने उस साँप राजकुमार से शादी कर ली और उसने वैसा ही किया जैसा कि उसकी माँ ने उससे करने के लिये कहा था। वह हर बार जब अपनी एक पोशाक उतारती थी तब साँप भी अपनी एक खाल उतारता था।

जैसे ही उस सॉप राजकुमार ने अपनी सातवीं खाल उतारी तो वहॉ तो दुनियॉ का सबसे सुन्दर राजकुमार खड़ा था। उस राजकुमारी ने भी अपनी सातवीं पोशाक उतारी और फिर वे सोने चले गये।

सुबह के दो बजे दुलहे ने पूछा — "इस समय क्या बजा है?"

पत्नी बोली — "यह तो वह समय है जब मेरे पिता थियेटर से वापस घर लौटते हैं।"

कुछ देर बाद उसने फिर पूछा — "इस समय क्या बजा है?"

पत्नी बोली — "यह वह समय है जब मेरे पिता रात का खाना खाते हैं।"

जब दिन निकल आया तो उसने एक बार फिर पूछा — "इस समय क्या बजा है?"

पत्नी बोली — "यह वह समय है जब मेरे पिता को कौफ़ी चाहिये।"

यह सुन कर उस छोटे सॉप राजा ने उसको चूम लिया और बोला — "तुम मेरी सच्ची पत्नी हो। पर तुम यह बात किसी और को मत बताना कि मैं रात को आदमी बन जाता हूॅ। और अगर तुमने ऐसा किया तो तुम मुझको खो दोगी।"

और उसके बाद वह फिर सॉप में बदल गया।

एक रात साँप ने अपनी पत्नी से कहा — "अगर तुम यह चाहती हो कि मैं दिन में भी आदमी के रूप में रहूँ तो तुम वही करो जो मैं कहता हूँ।"

पत्नी बोली — "यकीनन मैं वही करूँगी जो तुम कहोगे।"

साँप बोला — "दरबार में रोज रात को नाच गाना होता है। तुम वहाँ जाओ। हर एक तुमको वहाँ नाच के लिये बुलायेगा पर तुम किसी के साथ नहीं नाचोगी।

जब तुम एक नाइट[9] को देखो जो लाल कपड़े पहने हो तब तुम अपनी जगह से उठना और केवल उसी के साथ नाचना। वह नाइट मैं होऊँगा।"

समय हुआ और दरबार में सब नाचने के लिये इकट्ठा होने लगे। राजकुमारी भी उस कमरे में आयी और आ कर एक जगह बैठ गयी।

उसको देख कर तुरन्त ही कई राजकुमार और कुलीन लोगों ने उसको नाच के लिये बुलाया तो उसने जवाब दिया कि वह वहीं ठीक थी और वहीं से केवल नाच देख कर ही खुश थी सो वह वहाँ से नहीं उठी और उनमें से किसी के साथ नहीं नाची।

राजा और रानी को उसका यह बरताव कुछ अच्छा नहीं लगा पर उन्होंने यह सोच लिया कि शायद वह अपने पति की इज़्ज़त की वजह से उनके साथ नाचना पसन्द नहीं कर रही थी।

---

[9] Knight – a certain status in the European kingdoms

अब क्योंकि उसका पति नाच में आ नहीं सकता था इसलिये उन्होंने उसको कुछ नहीं कहा।

अचानक एक नाइट लाल पोशाक में उस कमरे में घुसा। उसी समय वह राजकुमारी अपनी जगह से उठी और उसने उसके साथ नाचना शुरू कर दिया और वह सारी शाम उसी के साथ नाचती रही।

नाच खत्म हो गया और राजा और रानी जब अपनी बहू के साथ अकले रह गये तो उन्होंने उसके बाल पकड़े और बोले — "इसका क्या मतलब होता है कि तुमने हर एक को तो नाचने के लिये मना कर दिया और उस अजनबी के साथ सारी शाम नाचती रहीं। यह तो हमारा बहुत बड़ा अपमान था। हम लोगों का इतना बड़ा अपमान करने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई?"

पर वह लड़की कुछ नहीं बोली। यह सब कह सुन कर वे वहाँ से चले गये।

उनके जाने के बाद राजकुमारी ने अपने साँप पति को बताया कि किस तरह से उसके माता पिता ने उसका अपमान किया था।

साँप बोला — "तुम उनकी बातों पर ध्यान मत दो। तुमको यह सब तीन रात तक लगातार सहना पड़ेगा। और तीसरी रात के आखीर में मैं हमेशा के लिये आदमी बन जाऊँगा।

कल रात मैं काले कपड़े पहन कर आऊँगा। और तुम बस मेरे ही साथ नाचना। अगर वे तुमको इस बात के लिये मारें भी तो मेहरबानी कर के उसे मेरे लिये सह लेना।"

अगली शाम राजकुमारी ने फिर से सबको नाच के लिये मना कर दिया पर जब एक नाइट काले रंग की पोशाक पहन कर आया तो वह उसके साथ सारी शाम नाचती रही।

उस दिन राजा और रानी ने उससे कहा — "क्या तुम हर रात इसी तरह से हमारा अपमान करती रहोगी? तो या तो जो हम कहते हैं वह करो वरना. . ." यह कह कर उन्होंने एक डंडी उठायी और उन्होंने उसको उस डंडी से बहुत मारा।

उस रात उसका सारा शरीर बहुत दर्द कर रहा था। उसने रोते हुए अपने पति को सब कुछ बताया तो उसका पति बोला — "प्रिये बस एक शाम और। कल मैं साधु के वेश में आऊँगा।"

अगली तीसरी और आखिरी रात भी फिर उसने सब लोगों को नाच के लिये मना कर दिया पर जब वह साधु आया तो उसके साथ वह फिर सारी शाम नाचती रही।

जैसे ही शाम का नाच खत्म हुआ तो वहीं उसी समय सबके सामने राजा और रानी ने एक डंडी उठायी और राजकुमारी और उस साधु को उससे मारना शुरू कर दिया।

साधु ने उस मार से बचने की बहुत कोशिश की पर जब वह नहीं बच पाया सो वह एक बहुत बड़ी चिड़िया बन गया और खिड़की के शीशे तोड़ कर बाहर उड़ गया।

राजकुमारी चिल्लायी — "अब देखो ज़रा कि आप लोगों ने क्या किया है। क्या आपको मालूम है वह आपका बेटा था।"

जब उन्होंने यह सुना कि यह सब उनके बेटे के ऊपर से जादू उतारने के लिये किया जा रहा था जिससे कि वह हमेशा के लिये आदमी के रूप में आ जाता तो वे दोनों बेचारे बहुत परेशान हुए पर अब वे कर ही क्या सकते थे।

उन्होंने अपनी बहू को गले से लगा लिया और उससे बहुत माफी माँगी। पर राजकुमारी ने जवाब दिया — "अब हमारे पास समय नहीं है। मुझे उनके पीछे पीछे जाना है।"

उसने तुरन्त ही पैसों के दो थैले उठाये और उसी दिशा में चल दी जिधर वह चिड़िया उड़ कर गयी थी। बीच में वह एक दूकान वाले से मिली जो अपनी दूकान के टूटे शीशे पर रो रहा था।

उसने उससे पूछा — "जनाब, क्या बात है आप क्यों रो रहे हैं?"

वह बोला — "एक चिड़िया अभी अभी यहाँ से उड़ कर गयी है जिसने मेरी यह सारी दूकान तोड़ दी है।"

राजकुमारी ने पूछा — "और इस शीशे की क्या कीमत होगी क्योंकि वह चिड़िया मेरी थी?"

“मेरे मालिक ने मुझे बताया कि उसकी कीमत पचास क्राउन[10] के करीब होगी।”

राजकुमारी ने पैसों का एक थैला खोला उसमें से पचास क्राउन निकाल कर उस दूकान वाले को दिये और उससे पूछा कि वह चिड़िया किधर की तरफ गयी थी।

दूकान वाले ने एक तरफ इशारा करते हुए कहा — “उस तरफ, बिल्कुल सीधी।”

राजकुमारी उधर ही चल दी। कुछ दूर चलने के बाद वह एक सुनार की दूकान पर आयी। उस दूकान का मालिक तो वहाँ था नहीं पर उसके नौकर चाकर उस दूकान पर थे और रो रहे थे।

उसने उनमें से एक नौकर से पूछा — “ओ नौजवान, क्या बात है आप लोग क्यों रो रहे हैं?”

वह बोला — “एक चिड़िया अभी अभी यहाँ से उड़ कर गयी है जिसने हमारी यह सारी दूकान तोड़ दी है। अब हमारा मालिक यहाँ आयेगा तो हमको तो वह पीट पीट कर मार ही देगा।”

“इन सब सोने की चीज़ों की क्या कीमत होगी?”

“मुझे मर जाने दो। मुझे कुछ नहीं मालूम। मैं इस समय कुछ और सोच ही नहीं सकता कि अब मेरा मालिक मेरा क्या हाल करेगा।”

---

[10] Crown was the currency there.

"नहीं नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। मैं इसका हरजाना जरूर भरूँगी क्योंकि वह चिड़िया मेरी थी।"

उस नौजवान ने एक लम्बी लिस्ट बनायी और सबको जोड़ कर उसको बताया कि उसका वह सब सामान छह हजार क्राउन का रहा होगा।

राजकुमारी ने उसको वे पैसे दिये और उससे भी पूछा कि वह चिड़िया किधर गयी थी। उसने भी एक तरफ को इशारा कर के कहा कि वह चिड़िया उधर सीधी चली गयी थी।

राजकुमारी उसी दिशा में चल दी। उस नौजवान ने उन छह हजार क्राउन में से तीन हजार क्राउन अपने मालिक को दिये और तीन हजार क्राउन अपने पास रख लिये। इस पैसे से उसने अपनी एक नयी दूकान खोल ली।

कुछ दूर चलने के बाद राजकुमारी एक पेड़ के पास आयी जिस पर बहुत सारी चिड़ियें बैठी हुई थीं और सब की सब चिड़ियें बहुत ज़ोर ज़ोर से शोर मचा रही थी। उन्हीं चिड़ियों में उसको अपना पति दिखायी दे गया।

वह बोली — "प्रिय, मेरे साथ घर चलो।"

पर वह चिड़िया तो हिली भी नहीं। राजकुमारी बेचारी पेड़ पर चढ़ गयी और रो रो कर उससे प्रार्थना करने लगी कि वह घर वापस चले।

उसका रोना और प्रार्थना तो ऐसी थी कि पत्थर भी पिघल जाये। वहाँ और चिड़ियें भी जो बैठी हुई थीं वे भी उसका रोना सुन कर बहुत परेशान हो रहीं थीं।

वे उस चिड़िया से बोलीं — "जाओ न, तुम अपनी पत्नी के साथ घर जाओ। तुम उसके साथ घर क्यों नहीं जाना चाहते?"

पर इस सबका जवाब उस चिड़िया ने ऐसे दिया कि उसने अपनी चोंच से उस राजकुमारी की एक आँख निकाल ली। पर उसकी पत्नी फिर भी उससे घर चलने की प्रार्थना करती रही और अपनी दूसरी आँख से रोती रही।

अब उस चिड़िया ने उसकी दूसरी आँख भी निकाल ली। राजकुमारी रो कर बोली — "अब तो मैं अन्धी हो गयी हूँ। मेहरबानी कर के प्रिय मुझे रास्ता दिखाओ।"

इसके बाद वह चिड़िया दो बार नीचे आयी और उसके दोनों हाथ काट कर अपने माता पिता के महल की छत पर उड़ कर चली गयी। वहाँ जा कर वह एक आदमी के रूप में बदल गयी। सारे महल में खुशियाँ छा गयीं।

उसकी माँ ने उसके कान में फुसफुसाया — "तुमने अच्छा किया जो उस बुरी लड़की को मार दिया।"

इस बीच वह राजकुमारी किसी तरह से रास्ता ढूँढती ढूँढती यह कहते हुए घर चल दी — "अब मेरा क्या होगा। मेरे अब न तो आँखें हैं और न ही हाथ हैं।"

रास्ते में एक छोटी सी बुढ़िया जा रही थी। उसने उससे पूछ लिया — "क्या बात है बेटी तुम ऐसे क्यों रो रही हो?" राजकुमारी ने उसको अपनी कहानी सुना दी।

वह बुढ़िया मडोना[11] थी। वह बोली — "बेटी अपने हाथ इस फव्वारे के पानी में डालो।" उसने ऐसा ही किया तो उसके हाथ फिर से बढ़ कर पहले की तरह हो गये।

बुढ़िया ने कहा — "अब इस पानी से अपना चेहरा धो लो।" उसने उस फव्वारे के पानी से अपना चेहरा धोया तो उसकी आँखें भी वापस आ गयीं।

फिर उस बुढ़िया ने उसको एक जादुई छड़ी देते हुए कहा — "लो यह छड़ी ले लो। यह तुमको वह सब कुछ देगी जो भी तुम इससे माँगोगी।"

राजकुमारी ने तुरन्त ही उस छड़ी से अपने ससुर के महल के सामने एक महल चाहा तो तुरन्त ही वहाँ एक बहुत ही सुन्दर महल खड़ा हो गया। उस महल में अन्दर और बाहर सब जगह हीरे जड़े हुए थे।

उसके कमरों में एक सुनहरी मुर्गी भी अपने बच्चों के साथ घूम रही थी। और उन कमरों की ऊँची छतों के आस पास बहुत सारी सुनहरी चिड़ियें उड़ रही थीं।

[11] Madonna is another name of Mother Mary. Both Christians and Muslims regard her.

वहाँ सुनहरी पोशाक पहने कई नौकर चाकर और चौकीदार घूम रहे थे। और वह खुद एक सिंहासन पर बैठी हुई थी जिसके ऊपर एक छत्र लगा हुआ था और उसके चारों तरफ मलमल के परदे पड़े हुए थे। इस तरह वह किसी को भी दिखायी नहीं दे रही थी।

X X X X X X X

जब सुबह हुई तो राजकुमार ने अपने महल के सामने एक और महल देखा। वह उसको बहुत सुन्दर लगा तो वह राजा से बोला — "पिता जी देखिये कितना सुन्दर महल है।"

वह किसी भी तरफ देखता तो उसको उधर ही सुनहरे जानवर घूमते और उड़ते हुए दिखायी देते। उसने सोचा कि ऐसे कौन से यहाँ बड़े आदमी आ गये जिन्होंने रातों रात यह महल बनवा लिया।

उसी समय राजकुमारी खड़ी हुई और उसने परदे में से अपना सिर बाहर निकाला तो राजकुमार तो उसको देखता का देखता ही रह गया।

उसको देखते ही वह बोला — "पिता जी देखिये वह कितनी सुन्दर लड़की है। मुझे उससे शादी करनी है।"

राजा बोला — "हाँ हाँ जाओ। कहने की जरूरत नहीं है कि वह कौन है। तुम क्या सोचते हो कि वह तुम्हारी तरफ देखेगी भी? तुम तो उसकी तरफ देख कर ही अपना समय बरबाद कर रहे हो।"

लेकिन राजकुमार ने तो अपना मन बना रखा था सो उसने अपनी एक नौकरानी के हाथों सुनहरी कढ़ाई किया हुआ एक कपड़ा उसको भेज दिया। उस राजकुमारी ने उस कपड़े को लिया और उसको अपनी मुर्गी और उसके बच्चों की तरफ उछाल दिया।

नौकरानी घर वापस गयी और राजकुमार को सब बताया। तो राजा और रानी ने उससे कहा — "देखा न हमने तुमसे क्या कहा था। वह तो तुमको बिल्कुल भी पसन्द नहीं करती।"

राजकुमार बोला — "पर मैं तो उसको पसन्द करता हूँ।" और अबकी बार उसने उसके लिये एक ॲगूठी भेजी। वह ॲगूठी उस राजकुमारी ने अपनी चिड़ियों की तरफ फेंक दी।

जो नौकरानी इन चीज़ों को ले कर उस महल में गयी थी इन चीज़ों की यह हालत देख कर दोबारा वहाँ जाने में हिचकिचा रही थी।

पर राजकुमार ने भी उम्मीद नहीं छोड़ी थी। बहुत सोचने के बाद उसने एक ताबूत[12] बनवाया। वह उसमें अन्दर लेट गया और अपने नौकरों से कहा कि वह उस ताबूत को उसके पड़ोसी के महल में ले जायें।

[12] Coffin in which Christians and Muslims keep their dead bodies to bury after death. See its picture above

वे उस ताबूत को वहाँ ले कर गये। वहाँ जा कर राजकुमारी ने उस ताबूत को खोला तो उसमें राजकुमार को देखा। वह उसके पास आयी और उसको और पास से देखने के लिये उसके ऊपर झुकी।

राजकुमार भी उठा और राजकुमारी की तरफ देखा तो उसने राजकुमारी को पहचान लिया और खुशी से बोला — "अरे तुम तो मेरी पत्नी हो। तुमको यहाँ देख कर मुझे कितनी खुशी हो रही है। चलो घर वापस चलो।"

राजकुमारी ने उसको बड़ी कड़ी निगाहों से देखा और बोली — "क्या तुम भूल गये कि तुमने मेरे साथ क्या क्या किया?"

"प्रिये उस समय मैं जादू के असर में था।"

"पर तुमको उस जादू के असर से निकालने के लिये ही तो मैं तुम्हारे साथ तीन शाम नाची और तुम्हारे माता पिता ने मुझे मारा।"

"अगर तुमने ऐसा न किया होता तो मैं तो फिर एक साँप ही रह जाता।"

"और जब तुम चिड़िया बन गये तब भी क्या तुम साँप ही थे? तब तुमने अपनी चोंच से मेरी दोनों आँखें निकाल लीं और मेरे हाथ घायल कर दिये।"

"अगर मैं यह सब न करता तो फिर मैं एक चिड़िया ही रह जाता।"

अब राजकुमारी ने कुछ सोचा और बोली — "इस तरह तो तुम ठीक थे। चलो हम अब पति पत्नी की तरह से रहते हैं।"

जब राजा और रानी ने पूरी कहानी सुनी तो उन्होंने राजकुमारी से माफी माँगी। उन्होंने उस राजकुमारी के पिता को भी बुला लिया और फिर एक महीने तक नाच गाना चलता रहा।

2 शापित साँप[13]

सूअर राजा जैसी कहानियों के इस संग्रह की यह कहानी यूरोप के इटली देश की कहानियों से ली गयी है। इस कहानी में भी एक राजकुमार को शाप दे कर साँप बना दिया जाता है।

एक बार की बात है कि एक जगह एक बहुत ही गरीब स्त्री रहती थी जो एक बच्चे के लिये जो भी उसके पास था वह सब कुछ देने को तैयार थी पर उसके कोई बच्चा नहीं था।

अब एक दिन ऐसा हुआ कि उसका पति जंगल से लकड़ी काटने गया और वहाँ से जब वह लकड़ी ले कर आया तो उस लकड़ी के साथ में उसको एक साँप का बच्चा मिला।

जब सबाटैला[14] ने उस छोटे से जानवर को देखा तो उसने एक गहरी साँस भरी और बोली — "यहाँ तक कि साँपों के भी बच्चे होते हैं। एक मैं ही इतनी बदकिस्मत हूँ कि मेरे कोई बच्चा नहीं है।"

जैसे ही उसके मुँह से ये शब्द निकले तो वह तो यह देख कर दंग रह गयी कि वह साँप खड़े हो कर उससे बोला — "क्योंकि तुम्हारे कोई बच्चा नहीं है तो तुम मेरी माँ बन जाओ। मैं तुमसे

---

[13] The Enchanted Snake – a folktale from Italy, Europe. Taken from the Web Site : http://www.surlalunefairytales.com/eastsunwestmoon/stories/enchsnake.html
Taken from the book: "The Green Fairy Book", by Andrew Lang. NY: Dover. 1965. Originally published in 1892.]

[14] Sabatella – the name of the peasant's wife.

वायदा करता हूँ कि तुम्हें इसके लिये कभी पछताना नहीं पड़ेगा क्योंकि मैं भी तुम्हें वैसे ही प्यार करूँगा जैसे मैं तुम्हारा बेटा हूँ।"

पहले तो एक साँप को बोलते सुन कर सबाटैला डर के मारे मरी सी हो गयी पर फिर वह हिम्मत बटोर कर बोली — "अगर कोई दूसरी वजह नहीं होती सिवाय तुम्हारे इस दयापूर्ण व्यवहार के तो जो तुम कह रहे हो मैं उस पर राजी हो जाती। पर अब तो मैं तुमको वैसे ही प्यार करूँगी और तुम्हारी देखभाल करूँगी जैसे एक माँ अपने बच्चे की करती है।"

सो उसने उस साँप को अपने घर में रहने के लिये सोने के लिये एक बिल दे दिया। उसने उसको जो कुछ भी वह सोच सकी और जो जो उससे बन सके उसे बढ़िया बढ़िया खाने खिलाये। फिर भी उसको हमेशा यही लगता रहा कि वह उसको अपनी पूरी कृतज्ञता नहीं दिखा पा रही है।

दिन पर दिन वह साँप बड़ा और मोटा होता गया। एक दिन उसने किसान कोला मैथियो[15] जिसको वह अपना पिता मानता था कहा — "पिता जी अब मेरी उम्र शादी लायक हो गयी है अब मैं शादी करना चाहता हूँ।"

मैथियो बोला — "हाँ यह तो तुम ठीक कहते हो बेटा। मैं तुम्हारे लिये तुम्हारे जैसी एक साँपिन ढूँढने की कोशिश करूँगा और फिर उससे तुम्हारी शादी करा दूँगा।"

---

[15] Cola-Mattheo – the name of the peasant

साँप बोला — "क्यों? अगर आप ऐसा करेंगे तो हमारे बच्चे भी किसी रेंगने वाले जानवर जैसे ही होंगे जो मैं नहीं चाहता। मैं चाहता हूँ कि आप मेरी शादी किसी राजा की बेटी से कर दें।

इसलिये मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप जल्दी से जल्दी यहाँ से जायें और राजा से मिल कर उससे कहें कि एक साँप आपकी बेटी से शादी करना चाहता है।"

कोला मैथियो एक सीधा सादा सा आदमी था। जैसा कि उसका बेटा चाहता था वह राजा के पास गया और उससे मुलाकात का समय ले कर उससे कहा — "योर मैजेस्टी। मैंने अक्सर सुना है कि लोग माँगने से कुछ खोते नहीं इसलिये मैं आपसे यह कहने आया हूँ कि एक साँप आपकी बेटी से शादी करना चाहता है। मुझे यह जान कर बहुत खुशी होगी अगर आप एक फाख्ता की शादी एक साँप से कर देंगे।"

राजा जो एक नजर में ही जान गया कि यह आदमी कोई बेवकूफ नजर आता है उससे पीछा छुड़ाने के लिये उससे कहा — "अच्छा ऐसा करो कि तुम घर जाओ और अपने दोस्त साँप से कहो कि अगर वह कल दोपहर के बारह बजे तक यह पूरा महल हाथी दाँत का बनवा दे जिसमें सोने चाँदी के डिजाइन खुदे हों तो मैं अपनी बेटी की शादी उससे कर दूँगा।"

यह कह कर वह बहुत ज़ोर से हँसा और उसे वहाँ से भेज दिया। जब कोला मैथियो इस जवाब के साथ साँप के पास घर

वापस लौटा तो वह छोटा सा जानवर बिल्कुल भी परेशान नहीं दिखायी दिया।

उसने कहा — "पिता जी कल सुबह सूरज निकलने से पहले पहले आप जंगल जायें और वहाँ से हरे पत्तों का एक गुच्छा तोड़ लायें। उसको आप महल की देहरी पर मल दें तब आप देखें कि वहाँ क्या होता है।"

कोला मैथियो ने जैसा कि हम पहले ही कह चुके हैं कि एक बहुत ही सीधा सादा आदमी था साँप को कोई जवाब नहीं दिया। पर वह अगले दिन सुबह ही वह उठा और पत्ते लाने के लिये जंगल चला गया।

उसने सेन्ट जौन्स वौर्ट, रोज़मैरी[16] और कुछ और पत्ते इकट्ठे किये और जैसा कि उससे कहा गया था उसने उनको ले जा कर महल की दहलीज़ पर मल दिया।

जैसे ही उसने यह किया कि महल की दीवारें सब हाथी दाँत की हो गयीं और उन पर सोने चाँदी का इतना बढ़िया काम किया गया था कि देखने वाले की आँखें चौंधिया जायें।

राजा सुबह को जब सो कर उठा तो उसने भी यह जादू देखा तो आश्चर्य में वह इतना खो गया कि उसे अपनी भी सुध नहीं रही। उसको तो यही समझ में ही नहीं आया कि वह करे क्या।

[16] St John's Wort is a medicinal herb. Rosemary is a herb used in Italian food for flavor.

पर जब कोला मैथियो अगले दिन राजा के पास आया तो उसने फिर से साँप के लिये उसकी बेटी का हाथ माँगा।

राजा बोला — "इतनी भी जल्दी क्या है। अगर साँप वाकई मेरी बेटी से शादी करना चाहता है इससे पहले उसको कुछ और काम करने चाहिये। उसको मेरे बागीचे की दीवार और रास्ते कल दोपहर के बारह बजे से पहले पहले सब सोने के बनवा देने चाहिये।"

साँप ने जब यह नयी शर्त सुनी तो उसने अपने पिता से कहा कि वह सुबह सवेरे ही शहर की सड़कों पर से बहुत सारा कूड़ा इकट्ठा कर लाये और उसको बागीचे की दीवार और सड़कों पर फेंक दे। तब वह देखेगा कि हम राजा के बराबर से भी ज़्यादा हैं कि नहीं।

सो कोला मैथियो सुबह मुर्गे की बाँग पर उठा और एक बड़ी सी टोकरी ले कर शहर में से कूड़ा उठाने चल दिया। वहाँ से उसने टूटे बरतन उठाये जग और लैम्प उठाये और उसी तरह का कुछ और कूड़ा उठाया और उसको राजा के बागीचे की दीवार और सड़कों पर डाल आया तो लो वे तो सब सोने की हो गयीं।

यह देख कर तो हर किसी की आँखों चौंधियाने लगीं और हर कोई आश्चर्य करने लगा। राजा भी यह देख कर आश्चर्यचकित रह गया। पर अभी भी वह अपनी बेटी से अलग होने के बारे में नहीं सोच पा रहा था।

सो जब कोला मैथियो उसको अपना वायदा याद दिलाने के लिये उसके पास आया तो उसने उससे कहा — "मेरी अभी एक तीसरी माँग और है। अगर तुम्हारा साँप मेरे सारे पेड़ और फल जवाहरात में बदल सकता है तो मैं वायदा करता हू कि फिर मैं उसको अपनी बेटी दे दूँगा।"

किसान यह सुन कर वापस लौट गया और जा कर साँप को बताया कि राजा ने क्या कहा था तो साँप बोला — "पिता जी कल सुबह ही आप बाजार जायें और वहाँ आपको जितने भी फल दिखायी दें वे सब खरीद लें और उनकी गुठलियाँ और बीज राजा के बागीचे में बो दें। और अगर मैं गलती पर नहीं हूँ तो राजा इसके नतीजे से सन्तुष्ट हो जायेगा।"

सो अगले दिन कोला मैथियो फिर सुबह सवेरे ही उठा और एक टोकरी ले कर बाजार जा पहुँचा। वहाँ से उसने अनार खूबानी चैरीज़ और जो भी कोई और फल मिला सब खरीद लिये और उनकी गुठलियाँ और बीज ले जा कर राजा के बागीचे में बो दिये।

एक पल में ही राजा के बागीचे के सारे पेड़ों पर लाल पन्ने हीरे और जो कोई भी जावहरात तुम सोच सकते हो वे सब दमदमाने लगे।

अब तो राजा को अपना वायदा रखना पड़ा। उसने अपनी बेटी को बुलाया और उससे कहा — "मेरी प्यारी ग्रेनोनिया[17]। मैंने तो

[17] Grannonia – name of the Princess

केवल मजाक में ही तुम्हारे पति से यह सब नामुमकिन माँगा था पर उसने तो मेरी सारी माँगें पूरी कर दीं तो अब यह मेरा फर्ज बन जाता है कि मैं अपना वायदा पूरा करूँ।

सो अब अच्छे बच्चे की तरह जैसे तुम मुझे प्यार करती हो मेरा वायदा तोड़ने के लिये मुझे मजबूर मत करना बल्कि अपनी इस बदकिस्मती को शान से झेल लेना।"

ग्रैनोनिया बोली — "पिता जी आप जैसा चाहते हैं मेरे साथ वैसा ही करें। आप ही मेरे स्वामी हैं और आपकी इच्छा ही मेरे लिये कानून है।"

राजा ने जब यह सुना तो वह कोला मैथियो से बोला — "अब तुम अपने साँप को यहाँ महल में ले आओ मैं उसका अपने दामाद की तरह से स्वागत करूँगा।"

साँप राज दरबार में एक सोने की गाड़ी में बैठ कर आया जिसे छह सफेद हाथी खींच रहे थे पर जिस जिस रास्ते से हो कर वह आया और जहाँ जहाँ उस डरावने साँप को लोगों ने देखा तो वे डर के मारे वहाँ से भाग लिये।

जब साँप महल पहुँचा तो राजा के सारे दरबारी डर के मारे काँपने लगे। और ये सब लोग ही नहीं बल्कि राजा और रानी भी बेहोश होते होते बचे और दूर जा कर छिप गये।

पर ग्रैनोनिया ने अपना दिल और दिमाग ठीक रखा। हालाँकि उसको माता पिता दोनों ने उससे अपनी जान बचाने के लिये वहाँ से भाग जाने के लिये कहा फिर भी वह एक कदम भी नहीं हिली।

वह बोली — "मैं यहाँ से किसी भी हालत में उस आदमी से भागने वाली नहीं हूँ जिसे आपने मेरे लिये मेरा पति चुना है।"

जैसे ही साँप ने ग्रैनोनिया को देखा तो उसने अपनी पूँछ उसके चारों तरफ लपेट दी और उसको चूम लिया। फिर वह उसको एक कमरे में ले गया और कमरे का दरवाजा अन्दर से बन्द कर लिया।

अन्दर जा कर उसने अपनी खाल निकाल दी और अपने आपको एक सुन्दर सुनहरे घुँघराले बालों और चमकीली आँखों वाले नौजवान में बदल लिया। धीरे से ग्रैनोनिया को गले लगाया और उससे बहुत सारी मीठी मीठी बातें कीं।

जब राजा ने यह देखा कि वह साँप उसकी बेटी को एक कमरे में ले गया और कमरे का दरवाजा अन्दर से बन्द कर लिया तो उसने अपनी पत्नी से कहा — "भगवान हमारी बेटी पर रहम करे। मुझे तो डर है कि बस अब तो हमारी बेटी का सब कुछ खत्म हो गया। इस नीच साँप ने तो उसे अब खा ही लिया होगा।"

कह कर उन्होंने अपनी आँखें उस कमरे की चाभी वाले छेद पर गड़ा दीं कि देखें अन्दर क्या हो रहा है। उनके आश्चर्य की तो हद ही नहीं रही जब उन्होंने देखा कि एक बहुत सुन्दर नौजवान उनकी

बेटी के सामने खड़ा है और एक साँप की खाल उसी के पास नीचे फर्श पर पड़ी हुई है।

यह देख कर तो वे इतने खुश हुए कि उन्होंने दरवाजा तोड़ डाला और उसकी साँप की खाल उठा कर आग में डाल दी।

पर जैसे ही उन्होंने यह किया कि वह नौजवान चिल्लाया — “ओ नीच लोगों यह तुम लोगों ने क्या किया।”

और इससे पहले कि वे पलट कर देखते कि क्या हुआ उसने अपने आपको एक फाख्ता में बदल लिया और खिड़की की तरफ उड़ते हुए उसका एक शीशा तोड़ा और उसमें से बाहर निकल कर उनकी आँखों से ओझल हो गया।

पर ग्रेनोनिया तो उसी पल खुश भी हुई और दुखी भी हो गयी। अपने आपको अमीर भी समझा और भिखारी भी। वह अपनी इस खुशी को इस तरह से छिन जाने पर बहुत शिकायत करने लगी जैसे उसकी खुशी में जहर मिल गया हो। खुशकिस्मती पर बदकिस्मती की मार लग गयी हो।

उसने इस सबके लिये अपने माता पिता को दोषी ठहराया हालाँकि उसके माता पिता ने उसको बहुत समझाया कि ऐसा करने में उनका उसको किसी तरह का नुकसान पहुँचाने का कोई उद्देश्य नहीं था। लेकिन राजकुमारी को इस सबसे कोई तसल्ली नहीं मिली।

रात को जब सब लोग सो गये तो राजकुमारी पिछले दरवाजे से बाहर निकली और एक देहाती स्त्री का रूप बनाया और अपनी खुशी को ढूँढने का इरादा किया जब तक कि वह उसको मिल न जाये।

चाँद की रोशनी में वह चलती जा रही थी चलती जा रही थी। जब वह शहर के बाहर पहुँची तो उसको एक लोमड़ा मिला जिसने उसके साथ चलने के लिये कहा।

ग्रैनोनिया ने तुरन्त ही उसको अपने साथ ले लिया क्योंकि वह तो अपने पड़ोस के रास्तों को भी नहीं जानती थी।

सो वे दोनों एक साथ चलते रहे और एक जंगल में आ पहुँचे। इतना सब चलते चलते वे थक गये थे सो एक पेड़ के नीचे आराम करने के लिये बैठ गये। वहीं पास में पानी का एक सोता[18] बह रहा था। उससे उन्होंने पानी पिया और फिर हरी मुलायम घास पर लेट गये।

वे थके थे सो जल्दी ही सो गये और जब वे उठे तो सूरज आसमान में ऊपर चमक रहा था। वे उठे और कुछ देर तक चिड़ियों के गाने की आवाजें सुनते रहे क्योंकि ग्रैनोनिया को उनका गाना बहुत अच्छा लग रहा था।

लोमड़े ने जब यह देखा तो वह बोला — "अगर तुम समझ सकतीं कि ये चिड़ियें क्या कह रही हैं जैसे कि मैं समझ रहा हूँ तो

---

[18] Translated for the word "Spring"

तुम्हारी खुशी और बहुत बढ़ जाती।" यह सुन कर राजकुमारी की उत्सुकता और बढ़ गयी और जैसा कि हम सभी के साथ होता है खास कर के लड़कियों के साथ क्योंकि उनको बात करने की इच्छा बहुत होती है ग्रैनोनिया ने उससे पूछा कि वे क्या कह रही थीं।

पहले तो लोमड़े ने उसे जो कुछ भी उसने चिड़ियों की बातचीत से पता लगाया था उसे उसको बताने से मना कर दिया पर फिर उसकी प्रार्थना को स्वीकार करते हुए उससे कहा कि वे उस नौजवान राजकुमार की बदकिस्मती के बारे में बात कर रही थीं जिसको एक नीच जादूगरनी ने अपने जादू से सात साल के लिये एक साँप में बदल दिया था।

जब यह समय खत्म होने को होता है तो वह एक सुन्दर राजकुमारी के प्यार में पड़ जाता है और जब वह अपने आपको उसके साथ एक कमरे में बन्द कर लेता है और अपनी साँप वाली खाल उतार देता है तो राजकुमारी के माता पिता उस कमरे में जबरदस्ती घुस जाते हैं और उसकी साँप की खाल को जला देते हैं।

उसके बाद राजकुमार एक फाख्ता बन जाता है और बाहर जाने की कोशिश में खिड़की एक शीशा तोड़ देता है। इससे वह इतना ज़्यादा घायल हो जाता है कि डाक्टरों ने तो उसकी ज़िन्दगी की आशा ही छोड़ दी है।"

ग्रैनोनियाँ ने जब यह सुना कि वे चिड़ियें उसके पति के बारे में ये बात कर रही हैं तो उसने पूछा कि वह किसका बेटा था। क्या उसके ठीक होने की कोई आशा है।

तो लोमड़े ने जवाब दिया कि चिड़ियाँ कह रही हैं कि वह राजा वैलोन ग्रौसो[19] का बेटा है। उसका केवल एक ही इलाज है जो उसे ठीक कर सकता है और वह है उन चिड़ियों के खून को उसके सिर के घावों पर मलना जिन्होंने यह कहानी सुनायी है।

यह सुन कर ग्रैनोनिया लोमड़े के पैरों में पड़ गयी और उससे अपनी सबसे मीठी आवाज में उन चिड़ियों का खून लाने की प्रार्थना की और वायदा किया कि अगर वह उसे उनका खून ला देगा तो वह उसको बहुत सारा इनाम देगी।

लोमड़ा बोला — "ठीक है ठीक है। पर इतनी जल्दी भी मत करो। रात हो जाने तक इन्तजार करो। जब सब चिड़ियें सोने चली जायेंगी तब मैं पेड़ पर चढ़ जाऊँगा और तुमको उन सारी चिड़ियों को पकड़ कर ला दूँगा।"

सो उन्होंने सारा दिन बात कर के गुजारा कभी राजकुमार की सुन्दरता के बारे में कभी राजकुमारी के पिता के बारे में तो कभी राजकुमारी की बदकिस्मती के बारे में।

रात हुई तो सारी चिड़ियें सो गयीं। लोमड़ा बड़ी धीरे से पेड़ के ऊपर चढ़ा और अपने पंजों में एक के बाद एक चिड़ियें पकड़ लाया

[19] Vallone Frosso – name of the father of the Snake Prince

और जब उसने उन सबको मार दिया तो उसने उनका खून एक बोतल में रख दिया जो उसकी बगल में लटक रही थी।

उसको ले कर वह ग्रैगोनिया के पास आया तो वह उसको देख कर लोमड़े के हमले की खुशी से पागल सी हो गयी।

लोमड़ा बोला — "मेरी प्यारी बच्ची। तुम्हारी यह खुशी अभी बेकार है। क्योंकि मैं तुम्हें यह बता दूँ कि धरती के जीवों का यह खून तुम्हारे किसी काम का नहीं जब तक कि इसमें मेरा खून न मिला हो।" और यह कह कर वह वहाँ से भाग गया।

ग्रिगोनिया ने जब देखा कि उसकी आशाओं पर इस बेरहमी से पानी फिर गया तो उसने चापलूसी और चालाकी की चाल अपनाने की सोची। क्योंकि ये एक ऐसे हथियार थे जो किसी भी नर या मादा को खुश कर सकते थे।

सो उसने लोमड़े को पीछे से पुकारा — "ओ पिता लोमड़े। तुम बिल्कुल ठीक हो कि तुमको अपनी ज़िन्दगी बचानी ही चाहिये। पर तुम्हें तो मालूम है कि मैं तुम्हारी कितनी कृतज्ञ हूँ। और क्योंकि दुनियाँ में और भी बहुत सारे लोमड़े मौजूद हैं पर तुममें मेरा विश्वास बहुत है।

मेहरबानी कर के तुम उस गाय की तरह से तो मुझसे बरताव मत करो जो उसी बालटी में लात मार देती है जिसको उसने अपने दूध से भरा हो। कम से कम तुम मेरे साथ कुछ दूर तक तो चल ही सकते हो न।

और जब हम राजा के शहर पहुँच जायें तो मुझे राजा को उसकी नौकरानी की तरह से बेच देना।"

लोमड़े के दिमाग में यह कभी आया ही नहीं कि लोमड़े को भी बेवकूफ बनाया जा सकता है। सो एक पल सोचने के बाद वह उसके साथ चलने के लिये तैयार हो गया।

पर वह ज़्यादा दूर नहीं गया था कि लड़की ने एक डंडी उठायी और उसके सिर पर इतने ज़ोर से दे कर मारी कि वह वहीं का वहीं मर गया। ग्रैनोनिया ने उसका खून निकाला और अपनी खून वाली शीशी में डाल लिया। बस फिर वह जितनी तेज़ वहाँ से चल सकती थी उतनी तेज़ वैलोन ग्रौसो के पास चल दी।

जब वह वहाँ पहुँच गयी तो वह सीधी राजमहल में पहुँची और वहाँ जा कर राजा को कहलवाया कि वह राजकुमार को ठीक करने आयी है। राजा ने तुरन्त ही उसे अपने सामने बुलवा लिया।

राजा को यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह तो एक लड़की थी जो उस काम का बीड़ा उठाने आयी थी जिसको उसके राज्य के अच्छे से अच्छे डाक्टर नहीं कर पाये थे।

कोशिश करने में कोई नुकसान नहीं था सो उसने लड़की को जो कुछ वह करना चाहती थी वह करने की इजाज़त दे दी।

ग्रैनोनिया बोली — "बस मैं यह चाहती हूँ कि अगर मैं उस काम में कामयाब हो जाऊँ जो मैं करने आयी हूँ तो आप मेरी शादी अपने बेटे से कर दें।"

राजा जिसने अपने बेटे की ज़िन्दगी की सारी आशाऐं छोड़ दी थीं बोला — "तुम बस उसे ज़िन्दा और तन्दुरुस्त कर दो फिर वह तुम्हारा है। यह बात तो ठीक लगती है कि जो मुझे बेटा दे मैं उसको पति दे दूँ।"

सो वे राजकुमार के कमरे में चले गये। जैसे ही ग्रैनोनिया ने वह खून राजकुमार के घावों पर लगाया उसकी बीमारी चली गयी। वह जैसा पहले तन्दुरुस्त था वैसा ही तन्दुरुस्त फिर से हो गया।

जब राजा ने यह जादू भरा इलाज देखा और अपने बेटे को उससे ठीक होते देखा तो वह उससे बोला — "ओ मेरे प्यारे बेटे। मुझे तो लगा कि तुम मर गये हो। और अब तो मेरी खुशी और आश्चर्य की कोई हद ही नहीं है जब मैं तुम्हें ज़िन्दा देख रहा हूँ।

मैंने इस नौजवान लड़की से वायदा किया है कि अगर यह तुमको ठीक कर देगी तो मैं तुम्हारा हाथ इसके हाथ में दे दूँगा। यह देख कर कि भगवान हमसे खुश है तो तुम मेरा किया गया वायदा पूरा करो। इसके अलावा कृतज्ञता के बदले में भी तो मुझे इसका कर्जा उतारना है।"

लेकिन राजकुमार ने जवाब दिया — "पिता जी। मेरी मरजी भी उतनी ही आजाद है जितना ज़्यादा आपके लिये मेरा प्यार। पर क्योंकि मैंने किसी दूसरी लड़की से शादी करने का वायदा किया है तो अब आप खुद ही देखें और यह लड़की भी। मैं अपने वायदे से

कैसे मुकर सकता हूँ और उससे बेवफा कैसे हो सकता हूँ जिसको मैं प्यार करता हूँ।"

जब ग्रैनोनिया ने यह सुना और देखा कि राजकुमार उसे कितना प्यार करता है तो वह बहुत खुश हुई। उसका चेहरा शरम से लाल पड़ गया। वह बोली — "और अगर मैं उस दूसरी लड़की से कहूँ कि वह तुम्हारे ऊपर से अपना हक छोड़ दे तो क्या फिर तुम मुझसे शादी कर लोगे?"

राजकुमार बोला — "यह तो बहुत दूर की बात है कि तुम मेरे दिल से मेरे प्यार की तस्वीर निकाल दो। वह कुछ भी कहे मेरा दिल और मेरी इच्छा उसको लिये हमेशा वही रहेगी। और अगर मुझे उसके लिये अपनी जान भी गँवानी पड़े तो भी मैं इस अदला बदली के लिये तैयार नहीं हूँ।"

यह सुनने के बाद ग्रैनोनिया चुप नहीं रह सकी। उसने अपना देहातिन को वेश उतार दिया और अपना असली रूप राजकुमार को दिखाया। जब राजकुमार ने अपने प्यार को वहाँ इस तरह देखा तो उसको देख कर तो वह अपने आपे में ही नहीं रहा।

फिर उसने अपने पिता को बताया कि वह कौन थी और उसने उसके लिये क्या क्या किया और क्या क्या सहा।

फिर उन्होंने स्टारज़ा लौंगा[20] के राजा और रानी को अपने दरबार में बुलवाया और शादी की एक बहुत बड़ी दावत का इन्तजाम किया गया।

इससे यह साबित हो गया कि कुछ दुख उठाने के बाद जो खुशी मिलती है उसकी तो बस बात ही कुछ और है।

[20] Starza-Longa

3 जादूगर सर फ़िओरान्ते[21]

सूअर राजा जैसी यह कहानी यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है। यह कहानी वहाँ की बहुत पुरानी कहानी है जिसे 1885 में प्रकाशित किया गया था।

एक बार एक लकड़हारा था जिसके तीन बेटियाँ थीं। हर सुबह उनमें से एक उसके लिये जंगल खाना ले कर जाती थी। एक बार पिता और बेटियों ने एक झाड़ी में एक बड़ा सा साँप देखा।

एक दिन उसने उस लकड़हारे से पूछा कि क्या वह अपनी एक बेटी की शादी उससे करेगा। और अगर उसकी तीनों बेटियों में से उसकी कोई भी बेटी उससे शादी करने के लिये तैयार न हुई तो वह उसको मार देगा।

पिता ने जब उसकी यह बात अपनी बेटियों से कही तो उसकी दोनों बड़ी बेटियों ने तो सुनते ही मना कर दिया। पर अगर उसकी तीसरी बेटी भी मना कर देती तो फिर तो लकड़हारे के ज़िन्दा रहने का कोई मौका ही नहीं था।

सो उसने यह रिश्ता यह कहते हुए मंजूर कर लिया कि साँप तो उसको पहले से ही बहुत पसन्द हैं और जिस साँप का रिश्ता उसके पिता उसके लिये ले कर आये हैं वह तो बहुत सुन्दर है।

[21] Sir Fiorante, Magician – a folktale from Italy, Europe. Taken from the Book "Italian Popular Tales". by Thomas Frederick Crane. 1885. Hindi translation of this book is available from hindifolktales@gmail.com in four parts. This story is in its first part.

यह सुन कर खुशी के मारे साँप ने अपनी पूँछ हिलायी और अपनी दुलहिन को अपनी पीठ पर बिठा कर वह उसको एक बहुत बड़े घास के मैदान के बीच ले गया जहाँ उसने एक बहुत ही आलीशान महल बनवाया और वह खुद एक बहुत सुन्दर नौजवान बन गया।

उसने लड़की को बताया कि वह सर फ़िओरान्ते था और उसने लाल और सफेद मोजे पहने हुए थे। उसने साथ में यह भी कहा कि अगर उसने किसी से उसके बारे में कुछ भी कहा यहाँ तक कि उसका नाम भी बताया तो वह उससे बहुत गुस्सा हो जायेगा और वह फिर उसको हमेशा के लिये खो देगी।

फिर अगर उसे उसको दोबारा पाना होगा तो उसको एक जोड़ी लोहे के जूते, एक डंडा और एक टोप फाड़ना होगा और सात बोतलें आँसुओं से भरनी होंगी।

लड़की ने इस बात का वायदा किया कि वह यह बात किसी से नहीं कहेगी पर फिर भी थी तो वह एक लड़की ही। कुछ दिन बाद वह अपनी चालाक बहिनों से मिलने गयी तो उनमें से एक ने उससे उसके पति का नाम जानना चाहा।

हालाँकि वह बताना नहीं चाहती थी फिर भी वह इतनी चालाक थी कि उसने उसको उसका नाम बताने पर मजबूर कर दिया।

जब वह बेचारी लड़की अपने घर वापस गयी तो उसे न तो अपना महल ही दिखायी दिया और न ही अपना पति। अपने पति को पाने के लिये उसको तपस्या करनी ही पड़ी।

वह चलती रही चलती रही चलती रही रोती रही रोती रही और रोती रही। इस तरह एक बोतल ऑसू तो उसने इकट्ठा कर लिये थे। इसी तरह चलते चलते वह एक बुढ़िया के घर पहुँच गयी।

वहाँ उस बुढ़िया ने उसे एक बहुत ही बढ़िया अखरोट दिया और कहा कि जब भी उसको जरूरत हो वह उसे तोड़ ले और गायब हो गयी।

वह फिर रोती हुई आगे चली। जब उसकी चार बोतलें ऑसुओं से भर गयीं तो उसको एक और बुढ़िया मिली। उसने

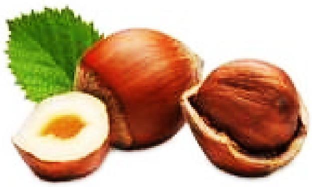

उसको एक हैज़ल नट दिया और कहा कि वह उसे जरूरत के समय तोड़ ले। और हैज़ल नट दे कर वह भी गायब हो गयी।

वह फिर से आगे चली। जब उसकी सातों बोतलें ऑसुओं से भर गयीं तब उसको एक और बुढ़िया मिली। उसने उसे एक बादाम दिया और कहा कि जब उसे जरूरत हो तो वह उस बादाम को तोड़ ले। यह कह कर वह भी गायब हो गयी।

आखीर में वह लड़की सर फ़िओरान्ते के किले में पहुँच गयी। वहाँ पहुँच कर उसे पता चला कि सर फ़िओरान्ते ने तो एक और लड़की से शादी कर ली है।

लड़की को इस समय जरूरत महसूस हुई तो उसने अपना अखरोट तोड़ दिया। उसमें से एक बहुत सुन्दर पोशाक निकल पड़ी। सर फ़िओरान्ते की पत्नी उसे खुद के लिये खरीदना चाहती थी पर लड़की ने कहा कि वह उसे ले सकती थी अगर वह उसे एक रात सर फ़िओरान्ते के कमरे में सोने दे तो।

उसकी दूसरी पत्नी ने उसको उसके कमरे में सोने की इजाज़त तो दे दी पर इस बीच उसने सर फ़िओरान्ते को अफीम खिला दी सो रात को जब लड़की ने उससे कहा — "ओ सर फ़िओरान्ते सफेद और लाल मोजे पहनने वाले। देखो मैंने एक जोड़ी लोहे के जूते एक डंडा और एक टोप फाड़ दिये हैं। सात बोतल ऑसू भी बहा दिये हैं। अब तो तुमको अपनी पहली पत्नी को पहचान जानना चाहिये।"

तो सर फ़िओरान्ते सोता ही रहा क्योंकि वह तो अफीम के नशे में बेहोश सो रहा था। उसको कुछ सुनायी ही नहीं पड़ा सो वह जागा ही नहीं। लड़की बेचारी सुबह होने पर वहाँ से चली आयी।

अगले दिन उसने हैज़ल नट तोड़ दिया। इस बार उसमें से एक और पोशाक निकल पड़ी जो पहली पोशाक से भी ज़्यादा सुन्दर थी। जब सर फ़िओरान्ते की दूसरी पत्नी ने उसकी वह पोशाक देखी तो उससे उसको उसे भी बेचने के लिये कहा।

लड़की ने उसे फिर वही जवाब दिया कि वह उसे मुफ्त ले सकती थी अगर वह उसे एक रात फिर से सर फ़िओरान्ते के कमरे में सोने देने दे तो।

उसकी दूसरी पत्नी ने उसको उसके कमरे में सोने की इजाज़त दे तो दी पर इस बीच उसने सर फ़िओरान्ते को फिर से अफीम खिला दी सो रात को जब लड़की ने उससे कहा — "ओ सर फ़िओरान्ते सफेद और लाल मोजे पहनने वाले। देखो मैंने एक जोड़ी लोहे के जूते एक डंडा और एक टोप फाड़ दिये हैं। सात बोतल आँसू भी बहा दिये हैं। अब तो तुमको अपनी पहली पत्नी को पहचान जानना चाहिये।"

पर सर फ़िओरान्ते तो अफीम के नशे में बेहोश सो रहा था। उसको कुछ सुनायी ही नहीं पड़ा सो वह जागा ही नहीं। लड़की बेचारी सुबह होने पर एक बार फिर वहाँ से चली आयी।

तीसरे दिन सर फ़िओरान्ते की एक वफादार दासी ने उससे कहा — "सर क्या कल रात आपने सुना कि कोई आपके पास बैठा रो रहा था?"

सर फ़िओरान्ते ने कहा कि नहीं ऐसा तो उसने कुछ नहीं सुना। पर उस रात वह सावधान रहा कि वह कुछ न खाये। उस दिन लड़की ने अपनी आखिरी गिरी बादाम तोड़ दी तो उसमें से एक इतनी सुन्दर पोशाक निकली कि वह तो उसको देख कर दंग रह गयी।

सर फ़िओरान्ते की दूसरी पत्नी ने जब वह पोशाक देखी तो वह उसको भी खरीदना चाहती थी पर उस लड़की ने उसे फिर वही जवाब दिया कि अगर वह उसे सर फ़िओरान्ते के कमरे में आखिरी बार रात को सोने देगी तो वह उस पोशाक को उसे मुफ्त में ही दे देगी।

दूसरी पत्नी ने इस बार भी उसकी बात मान ली और उसको उस रात सर फ़िओरान्ते के कमरे में सोने दिया। सर फ़िओरान्ते ने उस रात अफीम खाने का बहाना तो किया पर खायी नहीं। वह चुपचाप पड़ा रहा ताकि वह यह देख सके कि कौन उसको पुकार रहा था।

जब रात को उसकी छोड़ी हुई पत्नी आयी और रोयी तो उसने उसको पहचान लिया और वह उसको गले लगाये बिना न रह सका। अगले दिन उन दोनों ने महल सर फ़िओरान्ते की दूसरी पत्नी के लिये छोड़ दिया और वहाँ से किसी दूसरे किले में खुशी खुशी रहने के लिये चले गये।

4 साँप राजकुमार[22]

सूअर राजा जैसी कहानियों के इस दूसरे संग्रह की यह कहानी हमने तुम्हारे लिये एशिया महाद्वीप के भारत देश के पंजाब प्रान्त की लोक कथाओं से ली है।

एक बार की बात है कि किसी शहर में एक बुढ़िया अकेली रहती थी। वह बहुत ज़्यादा गरीब थी। एक दिन उसने देखा कि उसके घर में उसके पास केवल एक मुट्ठी आटा ही बचा है। और आटा खरीदने के लिये उसके पास पैसे भी नहीं हैं और ना ही कमाई का कोई और जरिया है।

बड़ी दुखी हो कर उसने अपना पीतल का बरतन उठाया और नदी पर नहाने और वहाँ से पानी लाने के लिये चल दी। उसने सोचा कि वहाँ से आ कर वह उस आटे की रोटी बना लेगी। और उसके बाद तो उसका पता नहीं क्या होना था।

नदी पहुँच कर उसने अपना बरतन किनारे पर रखा और नदी में नहाने चली गयी। बरतन उसने अन्दर से साफ रखने के लिये एक कपड़े से ढक दिया था। पर जब नदी से नहा कर निकली तो उसने

[22] The Snake Prince – a folktale from Punjab, India, Asia. Taken from the Book "The Olive Fairy Book". Edited by Andrew Lang. NY: Dover. 1968. Taken from the Web Site: http://www.surlalunefairytales.com/eastsunwestmoon/stories/snakeprince.html
By Major Campbell Feroshepore

देखा कि उस बरतन के अन्दर तो एक बहुत ही जानलेवा साँप कुंडली मारे बैठा है।

उसने तुरन्त ही उस बरतन के मुँह में वह कपड़ा फिर से ठूँस दिया और उसको वहीं दबाये रखा। वह बोली — “ओ मेहरबान मौत मैं तुझे पहले अपने घर ले जाऊँगी और वहाँ ले जा कर ही मैं तुझे अपने बरतन में से बाहर निकाल फेंकूँगी। तू मुझे वहाँ काट लेना फिर मैं मर जाऊँगी और मेरी सारी मुसीबतें खत्म हो जायेंगी।”

इन दुखी विचारों के साथ उसने अपना पीतल का बरतन उठाया और उसके मुँह को कपड़े से कस कर दबाये दबाये अपने घर चल दी। घर पहुँच कर उसने अपने घर के सारे दरवाजे और खिड़कियाँ बन्द किये और बरतन के मुँह पर लगा हुआ कपड़ा खोल कर उसे उलटा कर दिया।

वह तो यह सोच रही थी कि उस बरतन में से अब साँप निकलेगा और उसको काट लेगा पर उसको तो यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि उसमें से साँप निकलने की बजाय झन झन की आवाज के साथ चमकदार जवाहरातों का एक हार नीचे गिर पड़ा।

कुछ मिनट तक तो वह न कुछ सोच सकी और न कुछ बोल ही सकी बल्कि खड़ी खड़ी उसको घूरती रही। पर फिर काँपते हाथों से उसने वह हार उठाया और उसे अपने दुपट्टे[23]

[23] Dupattaa is a part of Punjabi dress of Kurta Shalavaar. It is worn over the two shoulders with a little bit down in front. See the blue cloth in the picture above. It is normally made of more than two yards long and one yard wide thin cloth.

के पल्लू में बाँध लिया। उसको ले कर वह राजा के दरबार की तरफ जल्दी जल्दी चल दी।

वहाँ पहुँच कर वह बोली — "राजा साहब। मुझ पर दया करें। मैं आपसे अकेले में एक प्रार्थना करना चाहती हूँ।"

राजा ने तुरन्त ही उसको इस बात की इजाज़त दे दी तो उसने अपने दुपट्टे की गाँठ खोली और उसमें रखा हार राजा के पैरों पर उलट दिया। उसमें से चमकते हुए जवाहरातों का एक हार उसके पैरों पर गिर पड़ा।

जैसे ही राजा ने उसे देखा तो उसको आश्चर्य भी हुआ और खुशी भी हुई। जितना ज़्यादा वह उसकी तरफ देखता था उतना ही ज़्यादा उसको लगता था कि वह हार तो उसके पास होना चाहिये। सो उसने उस स्त्री को पाँच सौ चाँदी के सिक्के दिये और वह हार उससे खरीद कर तुरन्त ही सीधा अपनी जेब में रख लिया।

वह स्त्री खुशी खुशी घर वापस चली गयी क्योंकि जो पैसा उसको राजा ने दिया था वह तो उसकी सारी ज़िन्दगी के लिये काफी था। राजा का जैसे ही काम खत्म हुआ तो वह भी जल्दी ही महल पहुँचा और रानी को वह हार दिखाया। वह भी उसको देख कर उतनी ही खुश हुई जितना कि राजा उसको देख कर खुश हुआ था।

जब वे उसकी काफी तारीफ कर चुके तो उन्होंने उस हार को उसी तिजोरी में बन्द कर के रख दिया जहाँ रानी का और गहना

रखा रहता था और उस तिजोरी की चाभी हमेशा राजा के गले में लटकी रहती थी।

कुछ समय बाद एक पड़ोसी राजा ने इस राजा को एक सन्देश भेजा कि उसके घर एक बहुत सुन्दर बेटी पैदा हुई है और वह इस खुशी के मौके पर उसको अपने यहाँ दावत में बुलाना चाहता था।

रानी ने अपने पति से कहा कि उन दोनों को वहाँ जरूर जाना चाहिये और वह वहाँ अपना वही हार पहन कर जायेगी जो राजा ने उसे ला कर दिया था।

उनके पास जाने के लिये बहुत कम समय था। बिल्कुल आखिरी पल ही राजा रानी के लिये वह हार तिजोरी से निकालने गया पर वहाँ उसको वह हार तो कहीं दिखायी नहीं दिया बल्कि उसके आश्चर्य की कोई हद नहीं रही जब उसको हार की जगह वहाँ एक रोता चिल्लाता बच्चा लड़का दिखायी दिया।

उसको देख कर उसे इतना ज़्यादा आश्चर्य हुआ कि वह नीचे गिरते गिरते बचा। जब उसकी आवाज वापस आयी तो उसने अपनी पत्नी को इतनी ज़ोर से पुकारा कि वह भी बेचारी भागती भागती वहाँ आयी। उसको लगा कि किसी ने उसका वह हार चुरा लिया है इसलिये राजा चिल्ला रहा है।

राजा बोला — "अरे ज़रा यहाँ आ कर तो देखो। क्या तुमने एक बेटे की इच्छा प्रगट नहीं की थी? और देखो अब भगवान ने हमको यह बेटा दे दिया।"

रानी बोली — "यह तुम क्या कह रहे हो? क्या तुम पागल हो गये हो?"

राजा खुश हो कर उस तिजोरी के चारों तरफ नाचते हुए बोला — "क्या कहा मैं पागल? नहीं नहीं। तुम यहाँ आओ तो और अपने आप देखो कि हमको हार के बदले में क्या मिला।"

तभी बच्चे ने खुशी से एक ज़ोर की किलकारी मारी जैसे वह वहाँ से कूद कर बाहर आना चाहता हो और राजा के साथ नाचना चाहता हो। रानी ने भी उसकी तरफ आश्चर्य से देखा और दौड़ कर तिजोरी के पास पहुँच गयी।

उसने बच्चे को देखा तो उसके मुँह से निकला "कितना प्यारा बच्चा है। यह यहाँ कहाँ से आ सकता है।"

राजा बोला — "पता नहीं। मैं क्या बताऊँ। मैं तो बस इतना जानता हूँ कि मैंने इस तिजोरी में एक हार रखा था और जब मैंने इसे खोला तो इसमें हार तो था नहीं एक बच्चा मिला और वह भी इतना प्यारा बच्चा। ऐसा बच्चा तो मैंने पहले कभी नहीं देखा।"

अब तक रानी ने बच्चे को अपनी गोद में उठा लिया था। "ओह भगवान इसको खुश रखे। यह तो रानी के दिल के ऊपर उस हार से भी ज़्यादा कीमती गहना है जो आपने मुझे ला कर दिया था। आप अपने पड़ोसी को लिख दीजिये कि हम उनकी दावत में नहीं आ सकते क्योंकि अब तो हमारे अपने यहाँ दावत होने वाली

है। हमारे घर बेटा हुआ है। ओह आज कितनी ख़ुशी का दिन है।”

सो उस दिन पड़ोसी राज्य में जाना रद्द कर दिया गया और नये बच्चे के आने की ख़ुशी में सारे शहर में घंटियाँ बजीं, बाजे बजे और वहाँ के लोग चाहे वे बड़े हों या छोटे शायद ही किसी को उस पूरे हफ्ते आराम मिला हो। सारे राज्य में इतनी ख़ुशियाँ मनायीं गयीं इतनी आतिशबाजी हुई जितनी पहले कभी नहीं देखी गयी थी।

कुछ साल बीते। इस राजा का बेटा और पड़ोसी राजा की बेटी दोनों बड़े होते रहे। बाद में दोनों राजाओं ने यह तय किया कि उनके बच्चे जब बड़े हो जायेंगे तो वे उनकी शादी कर देंगे।

फिर कई कागजों पर दस्तख़त करने के बाद अक्लमन्दों से सलाह लेने के बाद लोगों को अपनी दाढ़ी सहलाने के बाद यह सम्बन्ध तय हो गया। कागजों पर दस्तख़त कर के कागज तब तक के लिये सील कर दिये गये जब तक उनके ख़ुलने का मौका आता है।

यह समय भी गुजर गया। दोनों बच्चे अठारह अठारह साल के हो गये। अब दोनों राजाओं ने सोचा कि यही समय है जब इन दोनों की शादी कर दी जाये। नौजवान राजकुमार अपने दुलहिन के पास पड़ोसी राज्य गया और वहाँ बड़ी धूमधाम से हँसी ख़ुशी के साथ उसकी शादी हुई।

यहाँ यह बताना जरूरी है कि जो स्त्री वह हार ले कर राजा के पास आयी थी राजा ने उसको राजकुमार की आया बना कर रख लिया था और हालाँकि वह अपना काम बहुत जिम्मेदारी से करती थी और बहुत ही वफादार नौकरानी थी पर वह बात करने से अपने आपको रोक ही नहीं पाती थी।

सो धीरे धीरे यह बात फैलती गयी कि नौजवान राजकुमार के जन्म से सम्बन्धित कोई भेद है उसके जन्म में कोई जादू है। और धीरे धीरे यह अफवाह राजकुमारी के पिता के कानों तक भी पहुँची।

तो अब क्योंकि वह उस राजकुमार की पत्नी बनने जा रही थी तो जैसे कि सारी स्त्रियाँ कुछ ज़रा ज़्यादा ही उत्सुक होती हैं उसकी माँ ने उसकी शादी की शाम उससे कहा —

"याद रखना कि सबसे पहले तो तुम यह जानने की कोशिश करना कि राजकुमार के जन्म के बारे की यह कहानी कहाँ तक सच है। और यह जानने के लिये यह बहुत जरूरी है कि वह तुमसे चाहे जो कहे तुम उससे बिल्कुल नहीं बोलना जब तक कि वह तुमसे यह न कहे कि "तुम चुप क्यों हो।"

तब तुम उससे यह पूछना कि तुम्हारे जन्म का क्या भेद है। और जब तक वह तुम्हें यह न बता दे कि उसके जन्म का क्या भेद है तब तक तुम फिर उससे नहीं बोलना।"

राजकुमारी ने कहा कि वह उसकी सलाह का जरूर ध्यान रखेगी और उसको मानेगी।

सो जब उनकी शादी हो गयी तब राजकुमार ने उससे बात करना चाही पर राजकुमारी कुछ बोल कर ही न दे। उसकी समझ में ही नहीं आया कि ऐसा क्या मामला हो सकता है जो राजकुमारी उससे बोल ही नहीं रही है। पर वह तो अपने पुराने घर के बारे में भी कुछ नहीं बोल रही थी।

आखिर उसने पूछा कि वह उससे क्यों नहीं बोल रही तब वह बोली — "आप मुझे अपने जन्म का भेद बतायें।"

यह सुन कर राजकुमार कुछ दुखी और नाराज हो गया। यह कोई खुशी की बात नहीं थी जो इस समय होनी चाहिये थी। हालाँकि वह उससे बार बार पूछती रही और वह बार बार यही जवाब देता रहा कि अगर मैं तुम्हें बता दूँगा तो तुम बार बार पछताओगी कि तुमने ऐसा सवाल मुझसे पूछा ही क्यों पर फिर भी वह मान ही नहीं रही थी।

उनको साथ साथ रहते कई महीने बीत गये पर उनका यह समय कोई खुशी का समय नहीं बीता जैसा कि बीतना चाहिये था क्योंकि भेद तो अभी तक भेद ही था जो उनके बीच एक बादल की तरह पड़ा हुआ था जैसे सूरज और धरती के बीच में होता है और तब धरती जो धूप से सुन्दर और चमकीली होनी चाहिये बड़ी उदास पड़ी रहती है।

आखिर राजकुमार इस तरह के वातावरण को और नहीं सह सका। एक दिन उसने अपनी पत्नी से कहा — “अगर तुम मेरी इतनी सारी चेतावनियों के बाद भी उसको जानना चाहती हो तो आज आधी रात को मैं तुम्हें अपने जन्म का भेद बताऊँगा। पर तुम इतना जान लो कि फिर तुम सारी ज़िन्दगी पछताती रहोगी।”

फिर भी राजकुमारी यह सुन कर बहुत खुश हो गयी कि वह अपने उद्देश्य में सफल हो गयी है और उसने उसकी चेतावनियों पर कोई ध्यान नहीं दिया।

उस रात आधी रात से कुछ देर पहले राजकुमार ने अपने और राजकुमारी के लिये दो घोड़ों का इन्तजाम किया। एक घोड़े पर वह खुद चढ़ा और दूसरे घोड़े पर राजकुमारी को चढ़ाया और दोनों नदी की तरफ उस जगह की तरफ चल पड़े जहाँ बुढ़िया ने एक साँप को अपने पीतल के बरतन में पहली बार पाया था।

वहाँ पहुँच कर राजकुमार ने अपने घोड़े की रास[24] खींची और फिर बहुत दुखी हो कर पूछा — “क्या तुम अब भी यही चाहती हो कि मैं तुम्हें अपने जन्म का भेद बताऊँ?”

राजकुमारी ने बिना किसी हिचक के कहा “हाँ।”

राजकुमार बोला — “अगर मैंने तुम्हें वह भेद बता दिया तो मैं एक बार फिर कह रहा हूँ कि तुम वह जान कर बहुत पछताओगी।”

---

[24] Translated for the word “Reins” - Raas or Lagaam.

पर राजकुमारी कहाँ मानने वाली थी वह बोली "बताओ।"

तब राजकुमार बोला — "मैं एक दूर देश के राजा का बेटा हूँ पर मुझ पर जादू डाल कर मुझे एक साँप बना दिया गया था।"

जैसे ही उसके मुँह से उसका वाक्य पूरा हुआ कि वह वहाँ से गायब हो गया। राजकुमारी ने एक सरसराहट की आवाज सुनी फिर पानी में किसी के जाने की आवाज सुनी। धीमी सी चाँदनी में उसने एक साँप पानी के ऊपर जाता हुआ देखा। अब वहाँ वह अकेली खड़ी थी।

वह वहाँ छाती पीट पीट कर रो रो कर इन्तजार करती रही कि शायद कुछ जादू हो जाये और राजकुमार उसके पास आ जाये पर ऐसा कुछ नहीं हुआ। राजकुमार भी वापस नहीं आया।

बस केवल हवा ही पेड़ों के बीच से सरसराती गुजरती सुनायी पड़ रही थी या फिर रात वाली चिड़ियें बोल रही थीं। नदी उसके पास से शान्त बह रही थी।

सुबह को राजा और रानी ने उसको नदी के किनारे बहुत दुखी हालत में पाया परन्तु कोई उससे या किसी और से यह नहीं जान सका कि उसके पति का क्या हुआ।

उसकी इच्छा अनुसार उन्होंने उसके लिये नदी के किनारे काले पत्थर का एक मकान बनवा दिया और वह वहाँ अपने कुछ नौकर और कुछ पहरेदारों के साथ अपने दुख के दिन गुजारने लगी।

समय गुजरता चला गया पर अभी भी राजकुमारी अपने राजकुमार के लिये दुख के समय में थी पर इस बीच नदी से न तो कोई उसके घर आया और न ही उसके घर से कोई नदी की तरफ या बागीचे की तरफ गया जो उसके घर के चारों तरफ बना हुआ था।

एक सुबह जब वह जागी तो उसने अपने कालीन पर ताजा कीचड़ का एक निशान देखा। उसने अपने पहरेदारों को बुलाया जो उसके घर दिन रात पहरा देते थे और उनसे पूछा कि जब वह सो रही थी तो उसके घर में कौन घुसा था।

उन्होंने कहा कि उसके घर में तो कोई घुस ही नहीं सकता था क्योंकि वे उसका पहरा बड़ी सावधानी से दे रहे थे कि उसमें तो बिना उनकी जानकारी के कोई चिड़िया भी पर नहीं मार सकती थी। कोई भी उस कीचड़ के निशान के वहाँ होने की वजह नहीं बता सका।

अगली सुबह राजकुमारी ने अपने कालीन पर फिर से गीली कीचड़ का एक निशान पाया। इस बार उसने सबसे बड़ी सावधानी से पूछताछ की पर इस बार भी कोई नहीं बता पाया कि वह निशान वहाँ कहाँ से आया।

तीसरे दिन रात को राजकुमारी ने खुद ने घर का पहरा देने का निश्चय किया। इस डर से कि कहीं वह बीच रात में सो न जाये उसने कागज काटने वाले चाकू से अपनी उँगली काट ली और उस

काटे की जगह नमक लगा लिया ताकि उस काटे का दर्द उसको रात भर सोने न दे।

इस तरह वह रात को जागती रही। करीब करीब आधी रात को उसने देखा कि एक साँप अपने मुँह में नदी की मिट्टी लिये हुए लहराता हुआ वहाँ आया और जब वह उसके बिस्तर के पास आ गया तो उसने अपना सिर कुछ पीछे किया और उसे राजकुमारी के बिस्तर पर रख दिया।

यह देख कर वह डर गयी पर जल्दी ही उसने अपने डर पर काबू पा लिया और बोली — "तुम कौन हो और तुम्हें क्या चाहिये?"

साँप बोला — "मैं राजकुमार हूँ तुम्हारा पति। तुमसे मिलने आया हूँ।"

यह सुन कर तो राजकुमारी रो ही पड़ी। साँप फिर बोला — "मुझे बहुत अफसोस है। पर क्या मैंने तुमसे यह नहीं कहा था कि अगर मैंने तुम्हें अपने जन्म का भेद बता दिया तो तुम बहुत पछताओगी। क्या तुमको पछतावा नहीं हुआ?"

राजकुमारी बोली — "हाँ हुआ। मुझे बहुत पछतावा हुआ और मैं ज़िन्दगी भर पछताती रहूँगी। क्या मैं अब कुछ कर सकती हूँ?"

साँप बोला — "हाँ तुम एक काम कर सकती हो अगर तुम्हारे अन्दर इतनी हिम्मत हो तो।"

राजकुमारी बोली — “बस तुम कह दो मैं सब कुछ करने को तैयार हूँ।”

इस पर साँप बोला — “फलाँ फलाँ रात को तुम चार बहुत बड़े बड़े बरतन भर कर चीनी मिला दूध लो और उन्हें अपने कमरे के चारों कोनों में रख दो। नदी के सारे साँप उनमें से दूध पीने आयेंगे। जो साँप उन सबमें आगे होगा वह साँपों की रानी होगी।

जैसे ही वह अन्दर आने की कोशिश करे तो तुम उसके रास्ते में खड़ी हो जाना और उससे कहना — “ओ साँपों की रानी। मेहरबानी कर के मेरा पति वापस कर दो।” शायद ऐसा करने से वह मुझे तुम्हें वापस कर दे।

पर अगर तुम डर गयीं और उसको अन्दर आने से नहीं रोक सकीं तब तुम मुझे कभी नहीं देख पाओगी।” इतना कह कर वह वहाँ से खिसक गया।

उस रात को जिस रात के लिये साँप ने उससे कहा था उसने चार बड़े बड़े बरतन भर कर चीनी मिला दूध अपने कमरे के चारों कोनों में रखवा दिया और खुद वह दरवाजे पर खड़ी हो कर साँपों के आने का इन्तजार करने लगी।

आधी रात के करीब नदी की तरफ से बहुत सारी सरसराहट की आवाज सुनायी पड़ने लगीं। तुरन्त ही धरती पर बहुत सारे साँप इधर उधर रेंगते हुए दिखायी देने लगे। जब वे राजकुमारी के घर

की तरफ बढ़ रहे थे तो उनकी लपलपाती जीभें इधर उधर हिलती दिखायी दे रही थीं।

उन सबके आगे एक बहुत बड़ा साँप था जो इस जानलेवा जुलूस के आगे आगे चला आ रहा था। राजकुमारी के पहरेदार तो इतना डर गये कि वे तो वहाँ से भाग ही गये लेकिन राजकुमारी दरवाजे में ही खड़ी रही।

वह तो डर के मारे सफेद पड़ गयी थी। उसके हाथ डर के मारे एक दूसरे में उलझ कर एक दूसरे को मल रहे थे। वह इतना डरी हुई थी कि कहीं ऐसा न हो कि वह अपना काम ही पूरा न कर पाये।

जब वे उसके और पास आये और उसको अपने रास्ते में खड़ा पाया तो सब साँपों ने अपने अपने भयानक सिर उठा लिये और उनको आगे पीछे हिलाने लगे। वे अपनी बटन जैसी आँखों से उसे देख रहे थे और उनकी हर साँस हवा में जहर फैला रही थी।

फिर भी राजकुमारी अपनी जगह जमी खड़ी रही। जब यह जुलूस उसके काफी पास तक आ गया तब वह चिल्लायी — "ओ साँपों की रानी ओ साँपों की रानी मेहरबानी कर के मेरे पति को वापस कर दो।"

यह सुन कर सारे साँपों की सरसराहट फुसफुसाहट में बदल गयी "इसका पति?"

पर साँपों की रानी आगे बढ़ती रही बढ़ती रही जब तक कि उसका मुँह राजकुमारी के मुँह के पास तक नहीं आ गया। तब उसने कहा — "कल तुमको अपना पति मिल जायेगा।"

जब उसने साँपों की रानी के ये शब्द सुने तो उसे विश्वास हो गया कि वह जीत गयी है। वह दरवाजे पर से हटी और बेहोश हो कर अपने पलंग पर गिर गयी।

जैसे कि वह सपना देख रही हो उसने देखा कि उसका सारा कमरा खुशी मनाते हुए साँपों से भर गया है और वे सब उन बरतनों से दूध पी रहे हैं और वे जब तक पीते रहे जब तक उन सब बरतनों में से दूध खत्म नहीं हो गया। उसके बाद वे चले गये।

सुबह को राजकुमारी देर से उठी। उसने अपनी दुख वाली पोशाक उतारी जो उसने पाँच साल से पहन रखी थी। उसने अपना घर झाड़ बुहार कर साफ किया। उसको फूलों से सजाया। और उसको ऐसे सजाया जैसे वहाँ कोई शादी होने वाली हो। अपने सुन्दर कीमती रंगीन कपड़े पहने।

जब रात हुई तो उसने जंगल और बागीचे में दिये जलाये। मेज पर दावत का खाना लगाया और घर को हजारों मोमबत्तियों से सजाया। फिर वह अपने पति का इन्तजार करती बैठ गयी। उसको तो यह भी पता नहीं था कि वह वहाँ किस रूप में प्रगट होगा।

आधी रात को राजकुमार नदी में से हँसते हुए पर आँखों में आँसू लिये हुए बाहर निकला। उसको देखते ही राजकुमारी भी

खुशी से रोते हुए उससे मिलने के लिये भागी और उसके गले लग गयी।

राजकुमार घर आया और अगले दिन वह फिर से महल वापस गया। राजा उनको देख कर खुशी से रो पड़ा। घंटे जो बहुत दिनों से शान्त पड़े थे बजने लगे। बन्दूकें छूटने लगीं। लोगों का खाना पीना बढ़ गया।

वह बुढ़िया जो पहले राजकुमार की आया थी अब उसके बच्चों की आया हो गयी – कम से कम वह तो यही कहती थी। हालाँकि वह अब इतनी बूढ़ी हो चुकी थी कि उससे कुछ काम नहीं हो पाता था पर वह राजकुमार के बच्चों को प्यार बहुत करती थी। वह सोचती थी कि वह उनके लिये अभी भी काम की थी।

राजकुमार और राजकुमारी भी बहुत खुश थे। समय आने पर वे राजा और रानी बन गये और उन्होंने बहुत दिनों तक राज किया।

5 साँप सरदार[25]

सूअर राजा जैसी कहानियों की इस दूसरी पुस्तक में साँप की एक और लोक कथा। शाप से साँप बनने की यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये अफ्रीका महाद्वीप के दक्षिण अफ्रीका देश की लोक कथाओं से ली है।

यह कथा वहाँ के जूलू लोगों में कही सुनी जाती है। इस कहानी में एक सरदार के बेटे पर जादू डाल कर उसको एक साँप बना दिया जाता है।

नैन्डी[26] एक बहुत ही गरीब औरत थी। उसका पति मर गया था और उसके कोई लड़का भी नहीं था जो उसके जानवरों को चराने ले जा सकता। उसके केवल एक लड़की थी जो उसकी उसके खेतों के काम में सहायता करती थी।

गरमियों में जब अमाडुम्बे[27] के पेड़ कपासी रंग के फूलों से भर जाते तो वह और उसकी बेटी उन पेड़ों की जड़ें खोद कर कुछ अमाडुम्बे निकाल लेतीं और उनको अपने मक्का के दलिये के साथ खा लेती थीं।

---

[25] The Snake Chief – a Nama folktale from Zululand, South Africa, Africa.
Adapted from the book “Favorite African Folktales”, edited by Nelson Mandela. Retold by Diana Pitcher. Hindi translation of this book is available from hindifolktales@gmail.com

[26] Nandi – name of the mother

[27] Amadumbe – a kind of tree whose tubers are eaten. It is like cocoa yam. See the picture of its tubers above.

पर पतझड़ के दिनों में जब अमाडुम्बे के कपासी रंग के फूल मर जाते थे तब वह अपने पड़ोसियों से उमडोनी बैरी[28] के बदले में बकरे के सूखे माँस या खूब गाढ़े मखनी खट्टे दूध[29] के कैलेबाश[30] खरीद लेती थी। ये उमडोनी बैरियाँ जामुनी रंग की होती थीं और बहुत ही मीठी होती थीं।

गरमी में एक दिन नैन्डी वे जामुनी बैरी इकट्ठा करने के लिये नदी की तरफ गयी पर उस दिन उसको वहाँ कुछ भी नहीं मिला। जब उसको वहाँ एक बैरी भी नहीं मिली तो वह घर खाली हाथ ही वापस लौटने लगी।

तभी उसने किसी साँप की बड़ी तेज़ फुँकार सुनी। उसने ऊपर देखा तो वहाँ एक मटमैले हरे रंग का साँप पेड़ के गहरे लाल रंग के तने से लिपटा हुआ था। उसका सिर पेड़ की शाखाओं में इधर उधर हिल रहा था और वह उस पेड़ पर लगी जामुनी बैरियाँ खा रहा था।

नैन्डी बोली — "तो वह तुम हो जो मेरी बैरियाँ चुरा रहे हो। अगर तुम मेरी

[28] Berries is a generic word for a kind of small sized fruit which grows on bushes. Some examples of berries are blackberry, blueberry, cranberry, raspberry etc. See the picture of Umdoni berries above.
[29] Thick creamy sour milk
[30] Calabash - dried outer cover of pumpkin type of fruit. It is like a clay pitcher and is used to keep dry and wet things. See its picture above below Umdoni berries.

सारी बैरियाँ ले लोगे तो मैं फिर माँस खरीदने के लिये उसके बदले में क्या दूँगी?"

सॉप ने फिर एक फुँकार मारी और उस पेड़ से नीचे उतरना शुरू किया। यह देख कर नैन्डी डर गयी मगर अगर वह डर कर वहाँ से भाग जाती तो समझो फिर उसके लिये कोई बैरी नहीं थी सो वह हिम्मत कर के वहीं खड़ी रही।

सॉप ने फुँकार मारते हुए कहा — "अगर मैं ये उमडोनी बैरी तुमको दे दूँ तो तुम मुझे इन बैरियों के बदले में क्या दोगी? अगर मैं इन उमडोनी बैरियों से तुम्हारी टोकरी भर दूँ तो क्या तुम मुझे अपनी बेटी दोगी?"

नैन्डी जल्दी से बिना कुछ सोचे समझे बोली — "हाँ मैं आज रात को ही अपनी बेटी तुम्हें दे दूँगी बस तुम मुझे मेरी टोकरी इन जामुनी बैरियों से भर लेने दो।"

जब उसकी टोकरी उन फलों से भर गयी तो वह तुरन्त ही अपने घर को चल दी। जो कुछ भी उसने उस सॉप को देने का वायदा किया था वह उससे बहुत डर गयी थी। वह एक ऐसे भद्दे जानवर को अपनी बेटी कैसे दे सकती थी?

घर लौटते समय उसने सोचा कि उसको इस बात का बहुत ध्यान रखना चाहिये कि सॉप को यह पता न चले कि उसका घर कहाँ है।

ऐसा न हो कि वह साँप उसको घर जाते हुए देख रहा हो और वह उसका पीछा करते करते उसके घर तक पहुँच जाये इसलिये उसको सीधे अपने घर नहीं जाना चाहिये।

इसलिये उसने नदी उस जगह से पार की जहाँ से पत्थरों के ऊपर से पानी उथला था। वहाँ से हो कर वह काँटों वाली झाड़ियों से हो कर नदी के उस पार जंगल में चली गयी।

लेकिन उसको पता ही नही चला कि कब एक काँटे में उलझ कर उसका चमड़े का स्कर्ट फट गया था और उसका एक छोटा सा टुकड़ा उस काँटे वाले पेड़ में फँसा रह गया।

वह सरकंडे[31] के जंगल में से बड़ी चुपचाप और सँभाल कर निकली। फिर वह गहरे तालाब में से मगर को देखती हुई भी आयी पर उसको यह ही पता नहीं चला कि कब उसकी एक जामुनी बैरी तालाब में गिर गयी और पानी में तैर गयी।

फिर वह एक तरफ को बने चींटियों के एक बड़े से घर की तरफ गयी और उसके पीछे जा कर छिप गयी। अब वहाँ उसको उमडोनी के पेड़ों से कोई भी नहीं देख सकता था।

---

[31] Translated for the word "Reed" – see its picture above.

पर फिर उसका पैर एक पानी के चूहे[32] के बिल के मुँह में उलझ गया और उसको फिर पता नहीं चला कि कब उसकी पायल[33] के तीन मोती वहाँ की मुलायम जमीन में गिर गये।

आखिर वह अपने घर आयी और अपनी बेटी से बोली — "बेटी मैंने आज एक बहुत ही बुरा काम कर दिया है। मैंने तुझको इस टोकरी भर फल के बदले में एक साँप को देने का वायदा कर दिया है।" और यह कहते कहते वह ज़ोर ज़ोर से रो पड़ी।

इस बीच में वह साँप पेड़ पर से उतर आया था और नैन्डी का पीछा कर रहा था। उसका सिर इधर से उधर घूम कर नैन्डी को ढूँढ रहा था कि उसको चमड़े की स्कर्ट का एक टुकड़ा एक काँटे में फँसा दिखायी दे गया। बस उसको पता चल गया कि उसको किधर जाना है।

उसने फिर इधर उधर देखा तो उसको एक पकी हुई जामुनी बैरी पानी पर तैरती हुई दिखायी दे गयी। उससे उसको फिर पता चल गया कि उसको किधर जाना है।

उसने अपना सिर एक बार फिर इधर उधर घुमाया तो उसको पानी के चूहे के बिल के मुँह के पास उस स्त्री की पायल के तीन मोती मिले और वह जान गया कि अब उसे किधर जाना है।

---

[32] Water Rat

[33] Anklet is an ornament to be worn in feet. See its picture above.

जैसे ही नैन्डी ने घर में रोना शुरू किया वैसे ही उसने अपने घर के दरवाजे पर साँप की फुँकार की बड़े ज़ोर की आवाज सुनी और साँप को अन्दर आते देखा। वह आ कर कुंडली मार कर बैठ गया।

नैन्डी चिल्लायी — "नहीं, नहीं। मेरे उस वायदे का कोई मतलब नहीं था। मैं तुमको अपनी बेटी नहीं दे सकती।"

नैन्डी की बेटी ने ऊपर देखा। उसकी गहरी भूरी आँखें बहुत ही नम्र और निडर थीं। वह बोली — "माँ, वायदा तो वायदा होता है। अगर तुमने इस साँप को मुझे देने का वायदा किया है तो तुमको मुझे इस साँप को दे देना चाहिये।"

कह कर उसने अपना हाथ बढ़ाया और साँप का मटमैले हरे रंग का सिर सहलाया और बोली — "आओ, मैं तुम्हारे लिये कुछ खाने का इन्तजाम करती हूँ।"

उसने गाढ़े मखनी खट्टे दूध का एक कैलेबाश उठाया और साँप को उसे पीने को दिया। फिर उसने अपना कम्बल तह किया और अपने साँप स्वामी के सोने के लिये बिछौना तैयार किया।

रात में नैन्डी कुलमुलायी। पर उसे किसने जगाया? क्या कोई चीता[34] खाँसा? या फिर किसी हयीना[35] ने

[34] Translated for the word "Leopard".

[35] Hyena – a tiger-like animal. See its picture above.

चाँद के लिये गाना गाया? कुछ तो था जिससे उसकी आँख खुल गयी थी।

उसने फिर से सुनने की कोशिश की। तो ये तो आवाजें थीं, आदमियों की आवाजें। उन आवाजों में से एक आवाज तो उसकी अपनी बेटी की ही थी पर यह दूसरी आवाज किसकी थी और उसकी बेटी किससे बात कर रही थी? यह दूसरी आवाज कुछ गहरी और मजबूत सी थी। कौन हो सकता है यह?

उससे रहा नहीं गया। वह अपनी खाल के कम्बल में से बाहर निकली और अपनी बेटी के कमरे की तरफ चल दी।

वहाँ जा कर उसने क्या देखा? वह अभी भी सो रही थी या सपना देख रही थी? उसकी बेटी के साथ एक बहुत ही सुन्दर नौजवान बैठा हुआ था। वह लम्बा था, साँवला था और मजबूत था। वह जरूर ही किसी सरदार का बेटा रहा होगा या फिर वह खुद भी सरदार हो सकता था।

और उसकी बेटी वहीं उसके पास में बैठी रंग बिरंगे मोतियों का एक इस तरह का हार बना रही थी जैसा शादी में इस्तेमाल होता है। और वह नौजवान उससे बहुत प्यार से बातें कर रहा था।

नैन्डी ने फिर उस कम्बल की तरफ देखा जो उसकी बेटी ने साँप के बिछौना बनाने के लिये तह किया था। उस कम्बल पर एक लम्बी सी मटमैले हरे रंग की साँप की खाल पड़ी हुई थी।

उससे फिर नहीं रहा गया। उसने तुरन्त ही वह खाल वहाँ से उठा ली और उसको आग में फेंक दिया जो तभी भी थोड़ी थोड़ी जल रही थी। वह खाल तुरन्त ही आग में जल कर राख हो गयी।

साँप सरदार बोला — "अब मेरा यह जादू टूट गया क्योंकि एक बहुत ही अच्छी लड़की ने मेरे ऊपर दया कर के मुझसे शादी कर ली और एक बेवकूफ औरत ने मेरी यह खाल जला दी।"

अपने इन कठोर शब्दों के बावजूद वह साँप सरदार नैन्डी की तरफ देख कर मुस्कुरा दिया।

नैन्डी के अब तीन धेवते धेवतियाँ हैं – एक धेवता जानवर चराने के लिये और दो धेवतियाँ उसके खेतों में सहायता करने के लिये और अमाडुम्बे खोदने के लिये।

अब उसको उमडोनी बैरियाँ तोड़ने की भी कोई जरूरत नहीं है क्योंकि अब सबके लिये घर में बहुत खाना है।

6 तालाब का रक्षक[36]

सूअर राजा जैसी कहानियों की इस दूसरी पुस्तक में यह लोक कथा अफ्रीका के मध्य अफ्रीका देश में कही सुनी जाती है। इसमें एक राजकुमार पर जादू डाल कर उसको अजगर में बदल दिया गया है।

मध्य अफ्रीका देश में बहुत दूर एक जगह पर एक झील थी। उस झील के एक तरफ पानी को निकलने को जगह मिल गयी थी सो वहाँ से वह पानी निकल कर मैदानों की तरफ चल पड़ा था।

तंग पहाड़ी रास्तों से होता हुआ, पहाड़ियों की चोटी से नीचे गिरता हुआ, कत्थई जमीन और हरे घास के सपाट मैदानों से होता हुआ वह पानी तीन चट्टानों के बीच में आ कर रुक गया।

वहाँ वह नदी चारों तरफ घूमती रही ताकि वह वहाँ से निकल जाये, गोल गोल और तेज़, पर वह वहाँ से निकल ही नहीं सकी और वहाँ पर उसका एक भँवर[37] बन गया जिसमें पानी नीचे की तरफ डूबता चला जाता है।

[36] The Guardian of the Pool – a folktale from Central Africa, Africa.
Adapted from the book: "Favorite African Folktales", edited by Nelson Mandela. Retold by Diana Pitcher in Zululand background. Hindi translation of this book is available from hindifolktales@gmail.com

[37] Translated for the word "Whirlpool". Whirlpools are of several kinds. Some are big and strong and swift, while others are small, weak, and slow. See the picture of a small and slow whirlpool above.

उस भँवर में पास में लगे पेड़ों के लाल और सुनहरी पत्ते भी डूबते चले जा रहे थे। और वे डंडियाँ भी डूबती चली जा रही थीं जो पानी के उस पार से पानी में आ गिरी थीं। और वे तितलियाँ भी जो पानी के किनारे लगे सफेद खुशबूदार फूलों पर मँडराती थीं।

उस भँवर की तली में एक बहुत बड़ा रुपहले रंग का पानी का अजगर[38] रहता था। वह वहाँ कुंडली मार कर बैठा रहता था।

जब सूरज निकलता तो उस साँप की आँखें उसकी चमकीली किरनों को देख कर झपकतीं और उसकी सुन्दर पर भयानक जीभ लपलपाती। वह रुपहला अजगर उस तालाब का चौकीदार था।

पर यह कोई मामूली अजगर नहीं था क्योंकि उसकी ठंडी भीगी खाल को केवल छूने से ही लोगों के बहुत सारे रोग और दर्द ठीक हो जाते थे। पर ठीक तो वे ही होते थे न जो उसके घर में, यानी तालाब की तली में जा कर उसको छू कर आते थे।

एनगोसा[39] उसी तालाब के किनारे बैठी हुई थी और उस तालाब में तेज़ घूमते भँवरों को देख रही थी। सूरज उसकी कत्थई खाल पर चमक रहा था और उसके काँपते हुए शरीर को गरम कर रहा था।

[38] Translated for the word “Silver Water Python”

[39] Ngosa – name of an African girl

उसकी माँ बीमार थी, बहुत बीमार। ऐनगोसा जानती थी कि वह अगर उसके लिये कोई सहायता ले कर नहीं गयी तो वह मर जायेगी।

पर उस भँवर की उन भयानक लहरों में से हो कर नीचे उतरना, फिर उस रुपहले अजगर को छूना, फिर उसकी काली आँखों में देखना, और फिर उसकी लपलपाती हुई जीभ ... उफ़, धूप की गरमी से गरम होते हुए भी ऐनगोसा डर से काँप गयी। वह बहुत डरी हुई थी। वह क्या करे।

पानी के नीचे से अजगर ने ऐनगोसा की तरफ देखा और देखा कि वह सुन्दर थी। उसने यह भी जान लिया कि वह उससे क्यों डर रही थी सो वह उसको कुछ तसल्ली देना चाहता था पर वह उसको तसल्ली कैसे दे। ऐनगोसा तो उससे बहुत दूर बैठी थी।

तभी ऐनगोसा ने अपने पीछे रोने की आवाज सुनी। उसने पीछे मुड़ कर देखा तो उसकी छोटी बहिन खेतों में से हो कर भागी चली आ रही थी।

उसने पुकारा — "ऐनगोसा, ऐनगोसा। जल्दी कर माँ की हालत बहुत खराब है। लगता है हमारी माँ अब मरने ही वाली है।"

यह सुन कर ऐनगोसा को अपनी माँ की बहुत सारी बातें याद आ गयीं – कैसे उसकी माँ उसको सहलाया करती थी और जब एक

बार मगर ने उसको पानी में खींच लिया था तो कैसे वह उसके पास बैठ कर सारी सारी रात उसके लिये लोरियाँ गाया करती थी।

एक बार जब उसको बिच्छू ने काट लिया था तो कैसे वह उसके लिये कई कई मील पैदल जा कर उसके दर्द को ठीक करने के लिये लाल मूली की जड़ ले कर आयी थी।

कैसे उसकी माँ ने एक बार एक बालों वाले बबून को खूब पीटा था जब उसने उसके छोटे भाई को चुराने की कोशिश की थी।

एक बार जब बहुत सूखा पड़ा था और सारे आदमी भूखे मर रहे थे तब कैसे उसकी माँ ने अपना मक्का का दलिया छिप कर अपने बच्चों से बाँट कर खाया था।

यही सोचते सोचते ऐनगोसा उठी और उस भँवर के पास जा कर रुक गयी।

अजगर ने ऐनगोसा के सामने एक बार अपनी जीभ लपलपायी और फिर शान्त हो गया। उसकी काली आँखें बन्द थीं। ऐनगोसा ने अपना हाथ बढ़ाया और उसकी ठंडी भीगी खाल को छुआ।

फिर पानी को अपनी बाँहों और टाँगों से हटाते हुए वह पानी की सतह के ऊपर आ गयी और खेतों से हो कर अजगर की दवा वाले गुणों से अपनी माँ को छूने के लिये अपने घर भाग गयी।

उस रात जब लाल रंग का पूनम का चाँद पहाड़ों के ऊपर निकला तो उस अजगर ने अपने रुपहले शरीर की कुंडली खोली

और धीरे से पानी की सतह के ऊपर आया। और जमीन पर एक नौजवान ने कदम रखा।

उसका सुन्दर ऊँचा सिर काले घुँघराले बालों से ढका हुआ था। उसकी कत्थई ऑखों मे कोई डर नहीं था। उसकी बॉहें और टॉगें बहुत मजबूत थीं। वह तो एक सरदार का बेटा था।

जैसे ही वह बाहर आया उसने अपने आपको देखा और फिर धरती को देखा तो उसने देखा कि धरती कितनी अच्छी थी।

खेतों में से होते हुए वह एक आधे गोलाकार में लगी हुई झोंपड़ियों के पास आ गया। उम झोंपड़ियों के आस पास जानवर चर रहे थे। उनकी काली और सफेद खाल चॉदनी में मुलायम और रेशमी लग रही थी। एक बकरी अपने मेमने के साथ खेल रही थी।

उस नौजवान ने पुकारा — "ऐनगोसा, ऐनगोसा। तुम्हारी हिम्मत ने मुझे बचा लिया। जब पानी वाली जादूगरनी ने मेरे ऊपर अपना जादू डाला था तो मैं उस तालाब की तली में डूब गया था। उसके बाद तो हमेशा के लिये रोज मुझे उस तालाब का चौकीदार ही रहना था।

पर तुम्हारी हिम्मत की वजह से कम से कम अब मैं रात को अपना पुराना आदमी का रूप रख सकता हूँ। रात को मैं अपने आपको उन लोगों को दिखा सकता हूँ जो बहादुर हैं और सुन्दर हैं।

तुम यकीनन बहादुर हो जो मुझसे मेरे अजगर के रूप में मिलने आयीं। और मैं देख रहा हूँ कि तुम सुन्दर भी हो। आओ मेरे पास आओ।"

ऐनगोसा अपनी झोंपड़ी से बाहर निकली तो सरदार का बेटा सफेद, नीले और हरे चाँद पत्थर[40] की माला बन कर उसके गले में जा पड़ा। वे चाँद पत्थर एक चाँदी के तार मे पिरोये हुए थे।

अब ऐनगोसा अपना सारा दिन उस भँवर के किनारे बैठ कर संगीत बजा कर बिताती है क्योंकि अजगर आदमियों का संगीत सुनना बहुत पसन्द करते हैं।

और रात को वह अपने चाँद पत्थरों की माला को अपने गले में पहन लेती है और सरदार के बेटे का पानी में से निकलने का इन्तजार करती है।

[40] Translated for the word "Moonstone" – Moonstone is a semi-precious stone

7 एक लड़की और साँप[41]

साँप की यह कहानी यूरोप महाद्वीप के स्वीडन देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि एक लड़की थी जो जंगल में अपने जानवर चराने जाया करती थी। पर अक्सर उसके जानवर खो जाया करते थे। एक दिन वह एक बड़ी सी पहाड़ी पर आयी तो उसने देखा कि वहाँ तो उसके फाटक और दरवाजे थे सो वह उसके अन्दर चली गयी।

अन्दर जा कर उसने देखा कि एक बड़ी सी मेज लगी हुई है और उस पर खाने की अच्छी अच्छी चीज़ें लगी हुई हैं। पास में ही एक पलंग भी पड़ा हुआ था जिस पर एक बहुत बड़ा साँप लेटा हुआ था।

साँप लड़की से बोला —"अगर तुम चाहो तो बैठ जाओ। अगर तुम चाहो तो कुछ खा पी भी लो। और अगर तुम्हारी इच्छा हो तो तो यहाँ मेरे पास आ कर लेट भी जाओ। पर अगर तुम्हारी इच्छा न हो तो तुम ऐसा न करो।"

लड़की ने वहाँ कुछ नहीं किया। अन्त में साँप बोला — "अभी कुछ लोग यहाँ आ रहे हैं जो तुम्हारे साथ नाचना चाहेंगे पर तुम

[41] The Girl and the Snake – a folktale from Sweden, Europe.
Adapted from the Web Site :
https://www.worldoftales.com/European_folktales/Swedish_folktale_8.html

उनके साथ नहीं नाचना। उसी समय वहाँ कुछ आदमी आ पहुँचे और उन्होंने उस लड़की के साथ नाचने के लिये कहा पर उसने उनकी एक न सुनी। तब उन्होंने खाना पीना शुरू किया। लड़की भी वहाँ से अपने घर चली गयी।

अगले दिन वह फिर अपने जानवर देखने गयी पर उसको फिर से वहाँ अपना कोई जानवर नहीं मिला। वह फिर रास्ता भूल गयी और फिर उसी पहाड़ी पर आ पहुँची।

वह इस बार भी उसमें घुस गयी और फिर पहले दिन जैसा ही पाया। बहुत अच्छी तरह सजी हुई मेज और पलंग पर लेटा हुआ एक बड़ा सा साँप।

पहले दिन की तरह से साँप ने उससे फिर वही कहा — "अगर तुम चाहो तो बैठ जाओ। अगर तुम चाहो तो कुछ खा पी भी लो। और अगर तुम्हारी इच्छा हो तो तो यहाँ मेरे पास आ कर लेट भी जाओ। पर अगर तुम्हारी इच्छा न हो तो तुम ऐसा न करो। अभी कुछ लोग यहाँ आ रहे हैं जो तुम्हारे साथ नाचना चाहेंगे पर तुम उनके साथ नहीं नाचना।"

उसी समय वहाँ कुछ आदमी आ पहुँचे और उन्होंने उस लड़की के साथ नाचने के लिये कहा पर उसने उनकी एक न सुनी। तब उन्होंने खाना पीना शुरू किया। लड़की भी वहाँ से अपने घर चली गयी।

तीसरे दिन वह फिर जंगल गयी। उस दिन भी उसके साथ ठीक वैसा ही हुआ जैसा कि पहले दो दिन हुआ था। साँप ने उसको खाने पीने के लिये कहा। इस बार उसने खाया भी और पिया भी और खूब पेट भर कर खाया।

खाने के बाद साँप ने उससे अपने पास लेट जाने के लिये कहा ये वह उसके पास लेट गयी। फिर उसने उससे अपने गले लग जाने के लिये कहा। उसके चारों तरफ अपनी बाँहें डाल दीं। तब साँप ने कहा कि वह उसको चूम ले पर अगर उसको उससे डर लगता हो तो वह उन दोनों के बीच में अपना ऐप्रन रख सकती थी।

लड़की ने वैसा ही किया और लो वह तो एक बहुत सुन्दर राजकुमार में बदल गया जिसके ऊपर जादू डाल कर साँप बना दिया गया था। और अब इस लड़की की हिम्मत ने उसको उस जादू से आजाद करा दिया था।

इसके बाद वे दोनों वहाँ से चले गये और फिर कभी उनके बारे में नहीं सुना गया।

8 सॉप राजकुमार और उसकी दो पत्नियॉ[42]

सूअर राजा जैसी कहानियों के इस दूसरे संग्रह में यह कहानी हमने तुम्हारे लिये यूक्रेन देश की लोक कथाओं से ली है। यूक्रेन देश रूस और यूरोप के बीच में स्थित है।

एक बार की बात है कि एक ज़ारित्सा[43] थी जिसके कोई बच्चा नहीं था। उसकी बहुत इच्छा थी कि उसके कोई बच्चा हो। ज्योतिषियों ने उससे कहा कि वह एक पाइक मछली[44] पकड़वाये। फिर उसका और कुछ नहीं केवल सिर उबलवाये और उसे खा ले फिर देखे कि क्या होता है।

उसने ऐसा ही किया। उसने पाइक मछली का सिर खा लिया। एक साल ऐसे ही निकल गया। एक साल के बाद उसने एक सॉप को जन्म दिया।

जैसे ही वह पैदा हुआ उसने अपने चारों तरफ देखा और बोला — “मॉ, पिता जी। मेरे लिये एक पत्थर का घर बनवा दीजिये। वहॉ मेरे लिये एक छोटा सा बिस्तर हो। एक छोटा सा स्टोव हो। मुझे गरम रखने के लिये आग हो। और पन्द्रह दिन के अन्दर अन्दर मेरी शादी कर दीजिये।”

---

[42] The Serpent-Tzarevich and His Two Wives. Taken from the Book “Cossack Fairy Tales and Folktales” Translated by Nisbet Bain. 1894. Hindi translation of this book is available from : hindifolktales@gmail.com

[43] Tzaritsa means the “Queen”

[44] Pike fish is a large kind of fish

सो उन्होंने वैसा ही किया जैसा उसने उनसे करने के लिये कहा था। उन्होंने उसे पत्थर के एक घर में बन्द कर दिया। उसके लिये एक छोटा सा बिस्तर रखवा दिया। एक छोटा सा स्टोव और उसे गर्म रखने के लिये आग रखवा दी।

पन्द्रह दिन में ही वह काफी बड़ा हो गया था। इतना बड़ा कि अब वह अपने बिस्तर में समाता ही नहीं था। वह बोला — "अब मैं शादी करना चाहता हूँ।"

सो वे देश की बहुत सारी सुन्दर लड़कियों को ले कर आये ताकि वह उनमें से अपनी मनचाही लड़की को चुन सके। वे सब बहुत सुन्दर थीं पर उसने उनमें से किसी को नहीं चुना।

वहीं एक बुढ़िया खड़ी थी जिसके बारह बेटियाँ थीं। वह उनमें से अपनी ग्यारह बेटियों को ज़ारित्सा के पास उसके बेटे के साथ शादी कराने के लिये लायी थी पर बारहवीं को नहीं लायी थी।

जब वे ज़ारित्सा के पास आ रहे थे तो उसकी सबसे छोटी बेटी ने पूछा कि वे उसे क्यों नहीं ले जा रहे तो उन्होंने कहा कि वह अभी बहुत छोटी थी। वह ज़ोर से बोली — "अगर तुम लोग मुझे ले चलते तो ज़ारेविच[45] मुझे ही अपनी दुलहिन चुन लेता।"

यह बात ज़ार के कानों में पड़ी तो उसने हुक्म दिया कि उसे भी तुरन्त ही वहाँ लाया जाये। जब वह आ गयी तो ज़ार ने उससे पूछा — "क्या तुम मेरे बेटे की बहू बनोगी?"

---

[45] Tzarevich means Prince

उसने जवाब दिया — "हाँ मैं बनूँगी पर इससे पहले कि मैं उसकी बहू बनूँ मुझे पहले बीस शमीज़ चाहिये, बीस लिनन के गाउन चाहिये, बीस गरम कपड़े के गाउन चाहिये और बीस जोड़ी जूते चाहिये। यानी हर चीज़ बीस बीस चाहिये।" ज़ार ने उसे ये सब दे दिये।

लड़की ने उन सबको पहना – बीस शमीज़, बीस लिनन के गाउन, बीस गर्म कपड़े के गाउन, बीस जूते एक के बाद। इन सबको पहन कर वह साँप ज़ारेविच के पास गयी। जब वह साँप ज़ारेविच के घर की देहरी पर पहुँची तो वह बोली — "साँप ज़ारेविच की जय हो।"

साँप ज़ारेविच भी बोला — "आओ सुन्दरी। क्या तुम मेरी पत्नी बनोगी?"

"हाँ बनूँगी।"

वह बोला — "तो अपनी खालों में से एक खाल उतारो।"

"हाँ मैं उतारूँगी पर फिर तुम भी वैसा ही करोगे।"

सो साँप ने अपनी एक खाल उतारी और लड़की ने भी अपने बीस सूटों में से एक सूट उतारा। इस तरह दोनों ने अपनी अपनी खालें और सूट उन्नीस बार और उतारे। अब लड़की अपने एक रोज के पहने हुए सूट में रह गयी थी और साँप अपनी केवल आदमी की खाल में रह गया।

उसके बाद उसने अपनी आखिरी खाल भी उतार कर फेंक दी। उसकी वह खाल हवा में उड़ गयी। लड़की ने वह खाल तुरन्त ही पकड़ ली और उसे आग में फेंक दिया जो वहाँ अँगीठी में जल रही थी और उसके पूरी तरीके से जलने का इन्तजार किया।

अब उसके सामने एक साँप नहीं बल्कि एक बहुत सुन्दर राजकुमार खड़ा था। उसके बाद उनकी शादी हो गयी और वे हमेशा खुशी खुशी रहे।

पर न तो पति ही कभी अपने बूढ़े पिता ज़ार से मिलने गया और न ही उसने कभी अपनी पत्नी को महल के पास जाने दिया।

बूढ़े ज़ार ने उसे कई बार बुलाया पर उसका बेटा वहाँ नहीं गया। आखिर उसकी पत्नी को बहुत शरम आयी तो उसने अपने पति से कहा — "प्रिये। अगर तुम नहीं जाते तो कोई बात नहीं पर मुझे तो अपने पिता के पास जाने दो। मैं उनके पास केवल अपना समय बिताने के लिये ही जाऊँगी कहीं ऐसा न हो कि वह गुस्सा हो जायें। वैसे मुझे वहाँ क्यों नहीं जाना चाहिये?"

तब उसने अपनी पत्नी को अपने पिता के पास जाने की इजाज़त दे दी। वह ज़ार के दरबार में गयी और वहाँ कुछ देर समय बिताया। उसने वहाँ खुशी से समय बिताया खूब खाया पिया और वापस आ गयी।

पर उसके पति ने उससे कह रखा था कि वहाँ जा कर जैसे भी चाहे समय गुजार सकती है पर जो कुछ उसके साथ यहाँ हुआ था

वह किसी को न बताये क्योंकि अगर वह वह किसी को बतायेगी तो वह फिर उसे कभी नहीं देख पायेगी। क्योंकि वहाँ अभी किसी को पता नहीं था कि वह अब साँप नहीं रह गया था बल्कि एक सादा सा राजकुमार था। उसने भी वायदा किया कि वह यह बात किसी से नहीं कहेगी।

पर इन सब वायदों के बाद भी उसने उनसे कह ही दिया कि किस तरह से बीस खालें उतार कर उसका साँप पति अब एक राजकुमार बन गया था और अब वह उसके साथ बहुत खुश है।

पर जब वह घर लौटी तो उसे घर में कोई नहीं मिला। उसका पति किसी और राज्य को लौट गया था। वह बेचारी वहीं बैठ गयी और ज़ोर ज़ोर से रोने लगी। पर जब वह और न रो पायी तो वह दुनियाँ में उसे ढूँढने के लिये निकल पड़ी।

चलते चलते वह एक अकेले छोटे से घर के पास आयी। वहाँ उसमें एक बुढ़िया रहती थी। वह उस घर में अन्दर चली गयी और बुढ़िया से रात को रुकने की जगह माँगी। यह बुढ़िया हवाओं की माँ थी। वह उसे रखने के लिये तैयार नहीं थी।

उसने कहा — "भगवान तेरी रक्षा करें बेटी। मेरा बेटा अभी इधर उधर घूम रहा है। किसी भी पल वह आफ़त मचाता यहाँ आता ही होगा। वह तुझे आते ही मार डालेगा और तेरी हड्डियों को चारों तरफ बिखेर देगा।"

पर पत्नी उससे प्रार्थना की कि वह उसे बस रात गुजारने की जगह दे दे सो उसने उसे एक बहुत बड़ी आलमारी के पीछे छिपा दिया। कुछ पल में ही हवा उड़ता हुआ वहाँ आया तो उसे किसी कोज़ैक स्त्री की खुशबू आयी तो वह अपनी माँ से बोला — "माँ यह क्या है? यहाँ घर में किसी कोज़ैक की हड्डियों की बुरी बू आ रही है।"

उसकी माँ ने कहा — "नहीं बेटा ऐसा नहीं है। एक लड़की ने हमारे घर में शरण ली है जो कहती है कि वह अपने पति को ढूँढने के लिये निकली है।"

हवा बोला — "तो माँ उसे एक चाँदी का सेब दो दो और उसे जाने दो क्योंकि उसका पति एक दूसरे राज्य में है।" सो उन्होंने उसे चाँदी का सेब दे कर विदा किया।

वह फिर चलती गयी जब तक कि उसे रात नहीं हो गयी। वहाँ भी उसे एक घर मिल गया। वह उस घर में चली गयी। उस घर में भी एक बुढ़िया रहती थी। उसने उससे रात को ठहरने की जगह माँगी। पर बुढ़िया उसे ठहरने की जगह न दे।

उसने कहा — "अभी मेरा बेटा आता होगा वह तुझे मार डालेगा।"

"नहीं दादी माँ। मैंने एक रात ऐसे ही गुजारी है। मैं हवाओं की माँ के पास रह कर आ रही हूँ।"

तब बुढ़िया ने उसे अन्दर बुलाया और उसे अपने घर में छिपा दिया। वह चाँद की माँ थी। तुरन्त ही चाँद उड़ता हुआ वहाँ आया और अपनी माँ से बोला — "माँ यह क्या है? यहाँ घर में किसी कोज़ैक की हड्डियों की बुरी बू आ रही है।"

उसकी माँ ने कहा — "नहीं बेटा ऐसा नहीं है। एक लड़की ने हमारे घर में शरण ली है जो कहती है कि वह अपने पति को ढूँढने के लिये निकली है क्योंकि उसने उसके माता पिता को उसके बारे में उसका सच बता दिया था।"

चाँद बोला — "तब तो उसे अभी और आगे जाना पड़ेगा। उसे एक छोटा सा सोने का सेब दे दो और उससे कहो कि वह यहाँ से जल्दी से जल्दी चली जाये क्योंकि उसका पति दूसरी शादी करने जा रहा है।" सो वह रात उसने वहीं काटी और सुबह उठते ही उन्होंने उसे एक सोने का सेब दे कर विदा किया।

वह फिर चल दी। रात फिर हो गयी। अबकी बार वह सूरज की माँ के घर आयी। वहाँ भी उसने रात को ठहरने की जगह माँगी पर बुढ़िया बोली — "मैं तुझे अपने घर में जगह नहीं दे सकती। मेरा बेटा सारी दुनियाँ में उड़ता है पर वह यहाँ जल्दी ही आता होगा। आते ही तुझे देखेगा तो तुझे मार देगा।"

लड़की बोली — “नहीं माँ जी ऐसा मत कहिये। अभी मैं हवा और चाँद की माँओं के पास रुक कर आ रही हूँ और दोनों ने मुझे एक एक सेब दे कर विदा किया है।”

तब सूरज की माँ ने भी उसे घर के अन्दर छिपा लिया कि तभी वहाँ सूरज आ पहुँचा। वह अपनी माँ से बोला — “माँ यह क्या है? यहाँ घर में किसी कोज़ैक की हड्डियों की बुरी बू आ रही है।”

उसकी माँ ने कहा — “नहीं बेटा ऐसा नहीं है। एक लड़की ने हमारे घर में शरण ली है।”

उसने अपने बेटे को पूरी बात नहीं बतायी कि वह लड़की अपने पति की खोज में निकली हुई है पर सूरज को यह बात पता चल गयी।

उसने कहा — “माँ। उसे एक हीरों का सेब ले कर उसके पति के घर भेज दो जहाँ वह रहता है। यह सेब दुनियाँ का सबसे अच्छा और सबसे ज़्यादा कीमती सेब है। उससे कहना कि वे लोग उसे अन्दर नहीं आने देंगे इसलिये उसे एक बुढ़िया का वेश बना कर वहाँ जाना चाहिये।

वहाँ पहुँच कर उनके कम्पाउंड में एक कपड़ा बिछा कर बैठ जाना चाहिये और उस पर चाँदी का सेब रख लेना चाहिये। उसे देख कर बहुत सारे लोग यह देखने आयेंगे कि यह कौन है जो चाँदी का सेब लिये बैठा है।”

सो उस लड़की ने वही किया जैसा सूरज ने उससे करने के लिये कहा था। उस राज्य की रानी जिससे उसके पति ने शादी की थी उसके पास यह देखने के लिये आयी कि वह क्या बेच रही थी। उसने उससे पूछा कि उसे अपने चाँदी के सेब के लिये क्या चाहिये।

लड़की ने कहा — "मुझे अपने सेब के लिये कुछ नहीं चाहिये। मुझे बस इतना चाहिये कि इसके बदले में मैं एक रात अपने पति के साथ गुजार लूँ।"

रानी ने सेब उठाया और उसे राजकुमार के साथ एक रात बिताने के लिये बुलाया पर उससे पहले उसने राजकुमार को सोने की दवा पिला दी जिससे जब वह उसके पास गयी तो उसे पता ही नहीं चला कि कोई उसके पास आया था सो वह उससे कुछ बात ही नहीं कर सका और न उसे यह पता चला कि वह किस किस्म का आदमी था।

वह सारी रात उसे देखती रही देखती रही पर जब वह उससे कोई बात नहीं कर सकी तो सुबह को घर वापस आ गयी।

अगले दिन वह फिर कम्पाउंड में कपड़ा बिछा कर बैठी और उस पर अबकी बार अपना सोने का सेब रख कर बैठ गयी। रानी ने फिर उस सेब को देखा तो फिर उससे पूछा कि उसे अपने सोने के सेब के लिये क्या चाहिये। वह उसे उसकी झोली भर कर पैंस देने के लिये तैयार थी।

लड़की ने कहा — "मुझे अपने सेब के लिये कुछ नहीं चाहिये। मुझे बस इतना चाहिये कि इसके बदले में मैं एक रात अपने पति के साथ गुजार लूँ।"

रानी ने सेब उठाया और उसे राजकुमार के साथ एक रात बिताने के लिये बुलाया पर उससे पहले उसने राजकुमार को सोने की दवा पिला दी जिससे जब वह उसके पास गयी तो उसे पता ही नहीं चला कि कोई उसके पास आया था सो वह उससे कुछ बात ही नहीं कर सका और न उसे यह पता चला कि वह किस किस्म का आदमी था।

वह सारी रात उसे देखती रही देखती रही रोती रही रोती रही पर जब वह उससे कोई बात नहीं कर सकी तो सुबह को घर वापस आ गयी।

अब उसके पास केवल एक ही सेब बचा था पर वह तो हीरों का सेब था – दुनियाँ का सबसे कीमती सेब। रानी ने उस सेब के भी दाम पूछे तो लड़की ने फिर कहा कि "मुझे इसके लिये कुछ नहीं चाहिये सिवाय इसके कि एक रात मैं अपने पति के साथ गुजार लूँ। इसके बाद मैं फिर यह कभी नहीं माँगूँगी।"

रानी ने वह सेब उठाया और रात को उसे आने के लिये कहा। जब वह अपने पति के पास गयी तो वह पिछली रातों की तरह उस रात भी सोया हुआ था। लड़की ने उसके माथे पर चूमा पर वह कुछ

नहीं बोला। उसने उसे फिर चूमा पर वह फिर भी नहीं बोला। वह उसे बार बार चूमती रही आखिर वह उसे उठाने में सफल हो गयी।

उठ कर उसने पूछा "कौन है?"

लड़की ने कहा — "मैं हूँ आपकी पहली पत्नी।"

राजकुमार ने पूछा — "तुम्हें इधर का रास्ता कैसे मिला?"

लड़की ने कहा — "मैं आपको ढूँढती हुई इधर उधर सब जगह ढूँढती फिरी। मैं हवाओं की माँ के पास रुकी मैं चाँद की माँ के पास रुकी मैं सूरज की माँ के पास रुकी। उनमें से हर एक ने मुझे एक सेब दिया जिसे मैंने आपकी रानी को दिया। हर सेब के बदले में उसने मुझे एक रात आपके साथ रहने का मौका दिया। और यह मेरी आपके साथ तीसरी रात है।"

तब उसका दिमाग कुछ ठीक हुआ तो उसने रोशनी करने के लिये कहा। पर जब रोशनी हो गयी तो उसने देखा कि उसकी पहली पत्नी तो एक बुढ़िया थी। फिर उसने सोचा कि क्या वह इस तरह की चीज़ को कभी जानता था? कि उसकी पहली और वफादार पत्नी तो उसे सारे में ढूँढती फिरी और एक उसकी यह दूसरी पत्नी रानी है जिसने उसे तीन सेबों के बदले में बेच दिया।

उसने अपनी पहली पत्नी को रानी के पहनने लायक उतने कीमती कपड़े दिलवाये जितने उसे चाहिये थे। उसने भी अपना बुढ़िया वाला नकली वेश उतार दिया और वह फिर से जवान हो

गयी। पर उसने अपनी बेवफा पत्नी को चार घोड़ों की पूँछों से बँधवा कर घास के मैदान में छोड़ दिया।

9 शापित ज़ारेविच[46]

सूअर राजा जैसी यह लोक कथा रूस देश में कही सुनी जाती है।

एक बार की बात है कि रूस देश में कहीं एक सौदागर रहता था जिसके तीन बेटियाँ थीं। एक बार उसने समुद्र पार विदेश जाने का विचार किया ताकि वह वहाँ से कुछ सामान ला सके। सो उसने अपनी तीनों बेटियों से पूछा कि वह विदेश से उनके लिये क्या ले कर आये।

उसकी सबसे बड़ी बेटी ने कहा कि उसको एक कोट चाहिये। उसकी दूसरी बेटी ने भी कोट ही मँगवाया। पर उसकी सबसे छोटी बेटी ने एक कागज का टुकड़ा लिया और उस पर उसने एक फूल की ड्राइंग बनायी और बोली "पिता जी मुझे ऐसा एक फूल चाहिये।

सौदागर चला गया और बहुत दूर चला गया पर उसको कहीं वैसा फूल नहीं मिला जैसे फूल की उसकी बेटी ने उसे ड्राइंग बना कर दी थी। वह घर वापस आ गया। जब वह अपने घर वापस आ रहा तो रास्ते में उसने एक बहुत ही बड़ा महल देखा। वह उसके बागीचे में चला गया।

वहाँ उसने जितने भी तरह के तुम सोच सकते हो सभी तरह के पेड़ और फूल देखे। हर फूल पहले वाले फूल से अच्छा था। और

---

[46] The Enchanted Tzarevich – a folktale from Russia, Asia. Taken from the Book "Russian Folk-Tales". By Alexander Afanasief. Translated by Leonard A Magnus. 1916. Hindi translation of this Book is available from hindifolktales@gmail.com

तब उसको एक वैसा ही फूल दिखायी दिया जैसे फूल की उसकी बेटी ने तस्वीर बनायी थी।

उसने सोचा कि वह इस फूल को तोड़ लेगा और ले जा कर अपनी बेटी को दे देगा तो वह बहुत खुश हो जायेगी। और यहाँ कोई देखने वाला तो है नहीं।

सो वह उधर की तरफ गया और उसने वह फूल तोड़ लिया। जैसे ही उसने वह फूल तोड़ा वैसे ही बड़े ज़ोर के बादल गरजने की आवाज हुई और एक बहुत ही डरावना बड़ा पंखों वाला तीन फन वाला साँप वहाँ आ खड़ा हुआ और बोला — "तुमने हिम्मत कैसे की मेरे बागीचे में आने की? और तुमने मेरा यह फूल क्यों तोड़ा?"

सौदागर बेचारा डर के मारे काँप गया और झुक कर उसने उससे माफी माँगी। साँप बोला — "मैं एक शर्त पर तुम्हें माफ कर सकता हूँ कि जब तुम घर जा रहे हो तब सबसे पहले तुम्हें जो भी मिल जाये तुम उसे हमेशा के लिये मुझे दे दो।

और अगर तुमने मुझे धोखा दिया तो भूलना नहीं कि मेरी नजर से कोई बच नहीं सकता। तुम जहाँ भी होगे मैं तुम्हें वहीं ढूँढ लूँगा।"

सौदागर ने उसकी शर्त मान ली और घर वापस आ गया। उसकी सबसे छोटी बेटी खिड़की में बैठी बाहर देख रही थी। सो जैसे ही उसने अपने पिता को घर आते देखा तो वह उतर कर उससे मिलने आयी।

उसको देखते ही सौदागर का सिर नीचे लटक गया। उसने अपनी प्यारी सी बेटी की तरफ देखा और फफक फफक कर रो पड़ा।

बेटी की समझ में कुछ नहीं आया कि उसका पिता उसको देख कर ऐसे क्यों रो पड़ा सो उसने पूछा — "पिता जी क्या हुआ आप ऐसे क्यों रो रहे हैं।" उसने उसको उसका फूल दिया और बताया कि उस दिन क्या हुआ था।

बेटी बोली — "पिता जी इतना दुखी मत होइये। यह तो भगवान की कृपा है। शायद मैं वहाँ ठीक रहूँगी। मुझे उस साँप के पास ले चलिये।"

पिता उसको साँप के पास ले कर चल दिया। वह उसको महल में ले गया उसको वहाँ छोड़ा विदा कहा और घर वापस लौट आया। सौदागर की वह सुन्दर बेटी उस महल के अलग अलग कमरों में गयी तो उसने हर कमरे में सोना और मखमल तो देखा पर वहाँ कोई भी ज़िन्दा चीज़ नहीं थी।

समय गुजरता गया तो लड़की को भूख लगी। उसने सोचा कि काश मुझे यहाँ कुछ खाने के लिये मिल जाता। पर सोचने से पहले ही उसके सामने एक मेज लग गयी जिस पर बढ़िया स्वादिष्ट खाना पीना लगा हुआ था। अगर नहीं था तो वहाँ केवल चिड़िया का दूध नहीं था।

बस वह मेज पर बैठ गयी और खूब अच्छी तरह से खाया पिया। जब वह खा पी चुकी तो वह मेज वहाँ से गायब हो गयी।

अब ऍधेरा होने वाला था सो सौदागर की बेटी अपने सोने के कमरे में गयी ताकि वह वहाँ लेट सके और सो सके। कि तभी एक बहुत ज़ोर का हवा का झोंका आया और एक तीन फन वाला साँप उसके सामने प्रगट हो गया।

वह बोला — "ओ सुन्दर लड़की तुम मेरा बिस्तर इस कमरे के बाहर दरवाजे के पास लगा दो।" सो उस लड़की ने उसका बिस्तर कमरे के बाहर दरवाजे के पास लगा दिया और खुद वह पलंग पर सो गयी।

सुबह हुई तो वह उठी तो उस समय भी उस पूरे घर में कोई भी जीव नहीं था। यह सब उसके साथ ठीक ही चलता रहा क्योंकि जब भी वह किसी चीज़ की इच्छा करती तो वह उसको तुरन्त ही मिल जाती।

रात हुई तो फिर से वह साँप उड़ कर वहाँ आया और उससे बोला — "ओ सुन्दर लड़की तुम मेरा बिस्तर अपने पलंग के पास लगा दो।"

सो उसने उसका बिस्तर अपने पलंग के पास लगा दिया। रात बीत गयी। सुबह हुई तो लड़की जागी। उस दिन भी उसको उस घर में कोई जीव नजर नहीं आया।

तीसरे दिन रात को वह फिर से उड़ा कर आया और लड़की से बोला — "ओ सुन्दर लड़की आज मैं तुम्हारे बिस्तर में सोऊँगा।"

सौदागर की बेटी उस बड़े से साँप के साथ बिस्तर पर सोने से डर रही थी पर अब वह कुछ कर नहीं सकती थी सो उसने हिम्मत बटोरी और उसके साथ लेट गयी।

सुबह को साँप ने कहा — "ओ सुन्दर लड़की अगर तुम थक गयी हो तो तुम अपने पिता और बहिनों से मिलने जा सकती हो। उनके साथ दिन भर रहना और शाम को मेरे पास लौट आना। पर ध्यान रखना कि तुम्हें यहाँ आने में कहीं देर न हो जाये। अगर तुम्हें एक मिनट की भी देर हो गयी तो मैं दुख के मारे मर जाऊँगा।"

लड़की बोली — "नहीं मैं देर नहीं करूँगी।" और वह सीढ़ियाँ उतर गयी। नीचे उसके लिये गाड़ी तैयार खड़ी थी वह उसमें बैठ गयी और बस एक पल में ही वह अपने पिता के घर के आँगन में थी।

जब उसके पिता ने उसे देखा तो वह बहुत खुश हुआ उसने उसका स्वागत किया उसे प्यार किया और उससे पूछा — "भगवान तुम्हारे साथ कैसा बरताव कर रहा है। सब ठीकठाक तो है न।"

लड़की बोली — "पिता जी सब ठीक चल रहा है।" फिर उसने उसे महल की सम्पत्ति के बारे में बताया। साँप उसको कैसे प्यार करता था वह बताया। और यह भी बताया कि कैसे वह जो कुछ भी सोचती थी वह सब उसी समय पूरा हो जाता था। उसकी

बहिनों ने जब यह सब सुना तो जलन के मारे वे यही नहीं सोच सकीं कि वे उससे क्या कहें।

दिन गुजर रहा था और वह लड़की अब जाने की तैयारी में थी। उसने अपने पिता को विदा कहा और बोली — "अब समय हो गया है मुझे अब जाना चाहिये। मुझे अपना वायदा निभाना चाहिये।"

पर उन जलन भरी बहिनों ने अपनी ऑखों पर प्याज लगा ली और रोते हुए बोलीं — "रुक जाओ बहिन। कल तक और रुक जाओ।"

उसको अपनी बहिनों का ख्याल आ गया तो वह वहाँ एक दिन और रुक गयी। सुबह को वह उठी और अपने महल चली गयी। जब वह वहाँ पहुँची तो रोज की तरह उस दिन भी वह खाली था।

वह बागीचे में गयी तो उसने सॉप को तालाब में मरा हुआ पड़ा हुआ पाया। उसने दुख की वजह से अपने आपको पानी में फेंक दिया था।

यह देखते ही वह सुन्दर लड़की चिल्ला पड़ी — "ओह यह मैंने क्या किया।" कह कर वह बहुत ज़ोर ज़ोर से रोने लगी। उसने तालाब में से सॉप को बाहर निकाला उसको अपने गले से लगाया और उसके एक सिर को चूम लिया।

जैसे ही उसने यह किया तो सॉप कॉपा और एक नौजवान में बदल गया। वह बोला — "ओ सुन्दर लड़की तुम्हारा बहुत बहुत

धन्यवाद। तुमने मुझे मेरी बहुत बड़ी बदकिस्मती से बचा लिया। मैं साँप नहीं हूँ बल्कि एक शापित राजकुमार हूँ।"

फिर वे सौदागर के घर गये। वहाँ जा कर उनकी शादी हो गयी और वे फिर बहुत सालों तक खुशी खुशी रहे।

10 क्यूपिड और साइक[47]

सूअर राजा जैसी कहानियों की इस पुस्तक की यह कहानी जर्मनी देश की कहानियों से ली गयी है। यह कहानी वहाँ की बहुत पुरानी प्रसिद्ध और लोकप्रिय कहानियों में से एक है। यह कहानी वहाँ **1855** में प्रकाशित की गयी थी।

एक बार की बात है कि एक राजा और रानी रहते थे। उनके तीन बेटियाँ थीं। उनकी तीनों बेटियाँ बहुत सुन्दर थीं पर उन सबमें उनकी तीसरी यानी सबसे छोटी बेटी सबसे ज़्यादा सुन्दर थी। उसकी सुन्दरता को बखानने में तो भाषा की भी कमी पड़ जाती थी।

उसकी सुन्दरता के चर्चे इतनी दूर दूर तक फैले हुए थे कि लोग दूर दूर से उसकी सुन्दरता को देखने के लिये आते थे। और जो उसको देखने के लिये आते थे वे उसको देखते ही रह जाते थे कि वह कितनी सुन्दर थी – बिल्कुल वीनस[48] की तरह।

---

[47] Cupid and Psyche – a fairy tale from Germany, Europe. Written by Jacob and Wilhelm.
This story is taken from the Web Site : http://www.pitt.edu/~dash/cupid.html
[On this Web Page it is written by Lucius Apuleius and he has adapted from the book : Thomas Bulfinch, *The Age of Fable; or, Stories of Gods and Heroes*, 3rd edition (Boston: Sanborn, Carter, Bazin and Company, 1855), ch. 11, pp. 115-28. Bulfinch has taken it from the book : *The Golden Ass* (books 4-6) by the Roman writer Lucius Apuleius.

[48] Venus is the Roman goddess of the beauty and love, sex, fertility, prosperity, victory and desire. she was the mother of the Roman people through her son, Aeneas, who survived the fall of Troy and fled to Italy. Julius Caesar claimed her as his ancestor. In Hindu mythology Venus may be compared to Rati – wife of Kaam Dev (Cupid)

यहाँ तक कि देवी वीनस की पूजा की जगहों पर अब लोगों ने उसकी पूजा करनी छोड़ दी थीं और अब उसकी जगह वे इसी लड़की को देखने आने लगे थे। वे उसकी सुन्दरता की बहुत तारीफ करते और उसके रास्तों पर फूल बिछाते।

दुनियाँ के लोगों की उसकी इस तरीके से पूजा करते देख कर देवी वीनस नाराज हो गयी।

उसने अपने सुन्दर बालों को एक झटका दे कर कहा — "क्या एक दुनियावी लड़की इस तरह से मेरी इज़्ज़त को कम कर देगी? क्या भगवान जोव[49] ने मुझे मेरी दूसरी लड़कियों, पैलैस और जूनो[50], के मुकाबले में इतनी सुन्दरता बेकार में ही दी है?

नहीं मैं ऐसा नहीं होने दूँगी। मैं उसको इतनी खामोशी से उसकी यह सुन्दरता नहीं लेने दूँगी। मैं उसके लिये इस गैरकानूनी सुन्दरता को पाने के लिये पछताने की कोई न कोई वजह जरूर पैदा करूँगी।"

यह सोच कर उसने अपने पंखों वाले बेटे क्यूपिड[51] को बुलाया। क्यूपिड अपने स्वभाव से बहुत ही नीच और शरारती था। उसने उससे शिकायतें कीं और उसको उकसाया।

---

[49] Jove or the Jupiter is the god of Light and Thunder and king of the gods in Ancient Roman religion and mythology. Jupiter was the chief deity of Roman state religion throughout the Republican and Imperial eras, until Christianity became the dominant religion of the Empire.
[50] Pallas and Juno – Juno is the daughter of Saturn, and sister and wife of Jove (Jupiter).
[51] In classical mythology, Cupid is the god of desire, erotic love, attraction and affection. He is often portrayed as the son of the love goddess Venus and the war god Mars. His Greek counterpart is Eros.

उसने साइक की तरफ इशारा करते हुए उससे कहा — “मेरे बेटे, उस सुन्दर लड़की को तुम सजा दो। तुम अपनी माँ को उसकी सुन्दरता के घमंड का उतना ही मीठा बदला दो जितना उसको ज़्यादा से ज़्यादा दुख पहुँचे।

उस घमंडी लड़की का दिल नीच से नीच आदमी का दिल बना दो ताकि वह इतनी नीची हो जाये जितनी ऊँची वह आज उठी हुई है।”

क्यूपिड अपनी माँ का हुक्म मानने के लिये तैयार हुआ।

देवी वीनस के बागीचे में दो फव्वारे लगे हुए थे – एक मीठे पानी का और दूसरा कड़वे पानी का। क्यूपिड ने ऐम्बर[52] के बने हुए दो बरतनों में उन दोनों फव्वारों का पानी भरा और उनको अपने तरकस[53] से लटका कर साइक के घर चल दिया। वहाँ जा कर उसने देखा कि साइक तो सोयी हुई है।

उसको देख कर क्यूपिड का दिल दया से डोल गया पर फिर भी उसने अपने कड़वे पानी के बरतन से कड़वे पानी की कुछ बूँदें उसके होठों पर डाल दीं।

---

[52] Amber is a kind of tree resin, not sap, and is a kind of precious stone too used in making ornamental things.

[53] Translated for the word “Quiver” in which archers keep their arrows.

फिर उसने अपनी कमान से उसको एक तरफ से छुआ तो वह जाग गयी। उसने आँख खोल कर क्यूपिड की तरफ देखा जो खुद ही किसी को दिखायी नहीं दे रहा था।[54]

उसकी नजर का क्यूपिड पर इतना ज़्यादा असर हुआ कि वह उसकी नजर से चौंक गया और उसका तीर उसको खुद को ही लग गया और वह घायल हो गया।

अपने घाव की परवाह न करते हुए अब उसका सारा ध्यान अपनी उस नीच हरकत को ठीक करने में लग गया जो अभी अभी उसने साइक के साथ की थी। उसने खुशी के मरहम की कुछ बूँदें उसके रेशमी घुँघराले बालों पर डाल दीं।

पर देवी वीनस के गुस्से के असर से अब उसकी सुन्दरता का कोई जादू काम नहीं कर रहा था। यह सच था कि पहले सब उसको देखने की इच्छा रखते थे और सब उसकी तारीफ करते थे पर अब न तो कोई राजा और ना ही कोई राजकुमार और ना ही कोई और उसके साथ शादी के लिये आ रहा था।

उसकी दोनों बड़ी बहिनें जो केवल साधारण रूप से ही सुन्दर थीं उनकी शादियाँ बहुत पहले ही राजकुमारों से हो चुकी थीं। पर साइक अपने महल में अकेली पड़ी हुई थी और अपने अकेलेपन को कोस रही थी।

---

[54] Cupid was invisible. In Indian mythology Kaam Dev is also invisible after Shiv Jee had killed him.

वह अपनी उस सुन्दरता से तंग आ गयी थी पहले जिसकी लोग तारीफ किया करते थे पर अब वह उनके दिलों में प्यार पैदा करने में नाकामयाब थी।

उसके माता पिता को लग रहा था कि शायद उन्होंने अनजाने में भगवान को नाराज कर दिया है। सो उन्होंने अपोलो[55] के पुजारी[56] की सलाह ली।

उस पुजारी ने उनको बताया कि उनकी इस लड़की की शादी दुनियाँ के किसी आदमी से नहीं होगी। उसका होने वाला पति तो एक ऐसा राक्षस होगा जिसका न तो कोई देवता और ना ही कोई आदमी मुकाबला कर पायेगा। और वह आदमी एक पहाड़ पर उसका इन्तजार कर रहा है।

उस पुजारी की इस भयानक भविष्यवाणी को सुन कर राजा रानी और सभी लोग बहुत दुखी हो गये।

पर साइक बोली — "पिता जी अब यह भविष्यवाणी सुन कर आप मेरे लिये दुखी क्यों होते हैं। आपको तो तब दुखी होना चाहिये था जब लोग मेरे ऊपर बेकार में ही फूलों की बारिश कर रहे थे जो कि उन्हें मेरे ऊपर करनी ही नहीं चाहिये थी। और साथ में मुझे वीनस के नाम से भी पुकार रहे थे।

---

[55] Apollo is one of the most important and complex of the Olympian deities in classical Greek and Roman religion and mythology. The ideal of the kouros (a beardless, athletic youth), Apollo has been variously recognized as a god of music, truth and prophecy, healing, the Sun and light, plague, poetry, and more. Apollo is the son of Zeus and Leto, and has a twin sister, the chaste huntress Artemis.

[56] Translated for the word "Oracle"

मुझे ऐसा लगता है कि मैं अब उसी नाम का शिकार हो गयी हूँ। मैं अब अपने आपको भगवान के हवाले करती हूँ। आप मुझे उस पहाड़ पर ले चलिये जहाँ मेरी बदकिस्मती मेरा इन्तजार कर रही है।"

सो वहाँ जाने की सब तैयारी की गयी। राजकुमारी उस जुलूस के साथ साथ चली जो उसकी शादी का जुलूस कम और उसके दफ़न का जुलूस ज़्यादा लग रहा था।

पहाड़ तक पहुँचने पर वह अपने रोते हुए माता पिता और दूसरे लोगों के साथ उस पहाड़ पर चढ़ी। पहाड़ की चोटी पर पहुँचने पर वे सब उसको वहाँ अकेली छोड़ कर दुखी दिल से नीचे चले आये और अपने अपने घर वापस चले गये।

जब साइक उस पहाड़ की चोटी के किनारे पर खड़ी थी तो वह डर के मारे काँप रही थी और उसकी आँखों में आँसू थे।

कि तभी ज़ैफिर[57] ने उसको जमीन पर से उठाया और बहुत ही हल्के से उसको उठा कर फूलों की क्यारी की तरफ ले गया। इससे साइक अब कुछ राहत महसूस करने लगी थी सो वह वहीं घास पर लेट गयी और लेटते ही सो गयी।

जब वह सो कर उठी तो वह अपने आपको ताजा महसूस कर रही थी। उसने चारों तरफ देखा तो पास में ही उसको ऊँचे सुन्दर पेड़ों का एक कुंज दिखायी दिया।

[57] Zephyr means soft gentle breeze

वह उस कुंज में चली गयी तो वहाँ उसने एक फव्वारा देखा जिसमें से साफ पानी बड़ी तेज़ी से निकल रहा था।

उस फव्वारे के पास ही एक शानदार महल था जिसका सामने का हिस्सा बता रहा था कि वह कोई दुनियावी महल नहीं था बल्कि किसी देवता का आनन्द महल था।

तारीफ और आश्चर्य से भरी हुई वह उस महल के दरवाजे तक चली गयी और उसमें अन्दर घुसी। उस महल में जितनी भी चीज़ें थीं उन सबको देख कर उसको आश्चर्य और खुशी दोनों हो रही थीं।

उस महल की छत के नीचे सोने के खम्भे के लगे हुए थे। उसकी छतें और दीवारें तस्वीरों और खुदायी से सजी हुई थी। तस्वीरों पर जंगली और गाँव में पाये जानवरों की तस्वीरें बनी थीं जो देखने वाले की आँखों को लुभा रही थीं।

वह और आगे बढ़ी तो उसने देखा कि शाही महलों के अलावा वहाँ और भी कई इमारतें थीं जो कई तरह की कीमती चीज़ों और आनन्द देने वाली कला की चीज़ों से भरी पड़ी थीं।

वह यह सब देख ही रही थी कि उसने एक आवाज सुनी। हालाँकि उसको कोई दिखायी नहीं दिया पर कोई उससे ही कह रहा था — "ओ रानी, जो कुछ भी तुम यहाँ देख रही हो वह सब तुम्हारा ही है। तुम जो हमारी आवाजें सुन रही हो वे हम सब तुम्हारे दासों की आवाजें हैं।

तुम जो कुछ भी हमको हुक्म दोगी हम उसको बखूबी बजा लायेंगे। अब तुम अपने कमरे में जा कर अपने पंखों के बिस्तर पर आराम करो।

जब तुमको अच्छा लगे तब तुम नहा धो सकती हो। रात का खाना तुम्हारे कमरे के पास वाली जगह पर ही है। जब भी तुम खाना खाना चाहो तो वहाँ आ जाना।

साइक ने अपने न दिखायी देखने वाले दास दासियों की बातें बड़े ध्यान से सुनी। वह वहाँ से नहाने चली गयी और फिर खाने के लिये आ गयी।

तुरन्त ही एक मेज अपने आप ही वहाँ आ गयी। उसको वहाँ कोई दास या दासी उस मेज को लाता हुआ दिखायी नहीं दिया। उस मेज पर बहुत ही बढ़िया और स्वादिष्ट खाना लगा हुआ था और बहुत ही बढ़िया किस्म की शराब रखी थी।

उसके कानों में मीठा मीठा संगीत पड़ने लगा हालाँकि कोई गाने वाला या बजाने वाला उसको वहाँ दिखायी नहीं दे रहा था।

पर आश्चर्य की बात यह थी कि उसको अपना होने वाला पति कहीं दिखायी नहीं दे रहा था। वह वहाँ तभी आया जब कुछ अँधेरा हो गया और सुबह होने से पहले ही वहाँ से भाग गया।

पर उसकी बोली बहुत प्यार भरी थी और उसके मन में प्यार जगाने वाली थी। साइक ने कई बार उससे वहाँ ठहर जाने के लिये और अपने आपको दिखाने के लिये कहा पर वह राजी नहीं हुआ।

उलटे उसने कहा कि वह उससे कभी मिलने की कोशिश भी न करे क्योंकि यह तो वही जानता होगा कि ऐसा क्यों था पर उसकी खुशी इसी में थी कि वह उससे छिपा रहे।

उसने साइक से पूछा — "तुम मुझको क्यों देखना चाहती हो? क्या तुमको मेरे प्यार पर कोई शक है? क्या तुम्हारी ऐसी कोई इच्छा है जो पूरी न हुई हो क्योंकि अगर तुम मुझे देखोगी तो शायद तुम डर जाओगी।

पर बस मैं इतना चाहता हूँ कि तुम मुझको अपने बराबर का समझ कर प्यार करो न कि देवता की तरह से मेरी तारीफ करो।"

इस तर्क ने कुछ देर के लिये साइक की बोलती बन्द कर दी और वह कुछ खुश सी हो गयी।

पर फिर उसको अपने माता पिता का ध्यान आया जिनको उसकी किस्मत के बारे में अब तक कुछ पता ही नहीं था। उसको अपनी बहिनों का भी खयाल आया जिनके साथ वह अपनी इस खुशी की हालत को बाँटना चाहती थी।

वह यह सोचती रही तो उसको अपना यह महल एक महल कम और जेल ज़्यादा नजर आया।

एक रात जब उसका पति वहाँ आया तो उसने उसे अपने दिल पर पड़ा बोझ बताया और उससे अपनी बहिनों से मिलने की इजाज़त माँगी कि उसकी बहिनों को उससे मिलने के लिये वहाँ बुलवा दिया जाये। उसके पति ने बेमन से उसको इजाज़त दे दी।

साइक ने फिर ज़ैफ़िर को बुलाया और उसको अपने पति की इच्छा बतायी। ज़ैफ़िर ने एक वफादार नौकर की तरह से उसके हुक्म का पालन किया और वह पहाड़ के उस पार जा कर उसकी बहिनों को उसके पास ले आया।

उसकी बहिनें उसे देख कर बहुत खुश हुईं। उन्होंने उसको गले लगाया और प्यार से उसके शरीर पर हाथ फेरा।

साइक बोली — "आओ मेरे साथ मेरे इस घर में आओ और जो कुछ तुम्हारी बहिन तुम्हें दे सकती है उससे अपने आपको तरोताजा करो।"

फिर वह उनका हाथ पकड़ कर उनको अपने सोने के महल में अन्दर ले गयी और उनको अपनी अनगिनत सीखी हुई आवाज वाली दासियों के हवाले कर दिया। उन्होंने उनको नहलाया और खाने की मेज पर ले कर आयीं।

अपनी बहिन का यह दैवीय सुख देख कर साइक की बहिनें तो जलन से भर उठीं। ऐसे सुख की तो उन्होंने अपनी बहिन के लिये उम्मीद भी नहीं की थी। यह सुख तो उनके अपने सुख से कहीं ज़्यादा था।

उन्होंने उससे बहुत सारे सवाल पूछे। उन सवालों में उन्होंने उससे यह भी पूछा कि उसका पति कैसा था। साइक बोली कि उसका पति एक बहुत ही सुन्दर नौजवान था जो अक्सर अपना सारा दिन पहाड़ के ऊपर शिकार करने में गुजारा करता था।

पर उसकी बहिनें उसके इस जवाब से सन्तुष्ट नहीं थीं। उन्होंने उससे और कई सवाल पूछे और आखिर उससे यह कहला ही लिया कि उसने तो कभी अपने पति को देखा ही नहीं था।

उन्होंने उसके पति के बारे में उसके दिल में कई शकों के बीज बो दिये। उन्होंने कहा — "ज़रा याद करो कि अपोलो के पुजारी पाइथियन[58] ने तुम्हारे बारे में क्या कहा था कि तुम्हारी शादी एक बड़े से भयानक से राक्षस से होगी।

यहाँ इस घाटी के रहने वालों का कहना है कि तुम्हारा पति एक बहुत ही भयानक साँप है जो तुमको कुछ दिन तक तो बढ़िया बढ़िया खाने खिलायेगा और फिर धीरे धीरे तुम्हें मार देगा।

हमारी बात मानो तो एक दिया लो और एक तेज़ चाकू लो और उनको किसी ऐसी जगह छिपा कर रख दो जहाँ से तुम्हारा पति उनको कहीं पा न सके।

और जब वह सो जाये तो तुम बिस्तर से निकल कर वह दिया ले कर आओ और उसकी रोशनी में देखो कि घाटी में रहने वाले सच कहते हैं कि नहीं।

और अगर वे सच कहते हैं तो तुम उसका गला काटने से बिल्कुल हिचकना नहीं। उसके बाद तुम उसके चंगुल से आजाद हो जाओगी।"

[58] Pythian is perhaps the name of the priest of Apollo god.

साइक को उनकी यह सलाह अच्छी नहीं लगी पर फिर भी वह उसके दिमाग से निकली नहीं। उसकी बहिनें जब वहाँ से चली गयीं तभी भी वह सलाह उसके कानों में गूँजती ही रही। उसकी उत्सुकता भी बढ़ती गयी और यहाँ तक बढ़ी कि वह अपने आपको रोक न सकी।

एक दिन उसने एक दिये और एक तेज़ चाकू का इन्तजाम किया और उनको अपने पति की नजरों से छिपा कर रख दिया। जब वह सो गया तो वह चुपचाप अपने बिस्तर से उठी और दिया निकाल कर लायी।

दिये की रोशनी में उसने देखा कि वहाँ तो कोई राक्षस नहीं था बल्कि वहाँ तो दुनियाँ का सबसे सुन्दर देवता लेटा हुआ था।

उसके सिर पर सुनहरी घुँघराले बाल थे जो उसकी बरफ सी सफेद गरदन और लाल लाल गालों पर झूल रहे थे। उसके दोनों कन्धों पर दो पंख लगे हुए थे। वे पंख भी बरफ जैसे सफेद थे और इतने चमक रहे थे जैसे वसन्त में खिले हुए फूल।

यह देख कर साइक ने अपना दिया थोड़ा सा नीचे की ओर और झुका दिया ताकि वह उसे और अच्छी तरह से देख सके कि उस दिये के गरम तेल की एक बूँद उस देवता के कन्धे पर गिर पड़ी।

उस तेल की गरमी से उसका पति चौंक कर उठ गया और उसने अपनी आँखें खोल दीं। उसने साइक की तरफ देखा और

फिर बिना कुछ बोले उसने अपने सफेद पंख फैलाये और खिड़की से बाहर उड़ गया।

साइक ने उसका पीछा भी किया पर बेकार। बल्कि वह भागते समय खिड़की से नीचे गिर पड़ी।

उसका पति क्यूपिड था – देवी वीनस का बेटा।

क्यूपिड ने जब उसको नीचे धूल में पड़े देखा तो एक पल के लिये वह रुक गया फिर बोला — "ओ बेवकूफ साइक, क्या तुम इस तरह से मेरा प्यार का बदला चुका रही हो? जब मैंने अपनी माँ का कहा नहीं माना और तुमको अपनी पत्नी बना लिया तो क्या तुम सोचती हो कि मैं कोई राक्षस था और तुम मेरा गला काटने चली थीं?

पर अब तुम यहाँ से अपनी बहिनों के पास चली जाओ जिनकी सलाह तुमको मेरी सलाह से ज़्यादा कीमती लगी।

मैं तुमको और कोई सजा नहीं देना चाहता सिवाय इसके कि तुम यहाँ से हमेशा के लिये चली जाओ। प्यार में किसी भी तरह के शक की कोई जगह नहीं होती।"

और ऐसा कह कर वह उड़ गया और साइक वहीं जमीन पर पड़ी रह गयी। वह वहाँ पड़ी पड़ी काफी देर तक रोती रही और सुबकती रही।

कुछ देर बाद जब वह थोड़ी सी सँभली तो उसने अपने चारों तरफ देखा तो देखा कि वह महल और बागीचे तो सब गायब हो

चुके थे और वह एक खुले मैदान में पड़ी थी जो उसकी बहिनों के शहर से ज़्यादा दूर नहीं था।

वह उनके शहर पहुँची और उनसे अपनी बदकिस्मती की सारी कहानी कही। उसकी कहानी सुन कर उन्होंने ऊपर से तो बहुत दुख दिखाया पर मन में वे बहुत खुश हुईं। उन्होंने सोचा कि शायद अब वह हम दोनों में से एक को अपनी पत्नी चुन लेगा।

यह सोचते हुए अगले दिन वे दोनों सुबह सवेरे ही उठीं और अलग अलग उस पहाड़ पर चढ़ने के लिये चल दीं। उस पहाड़ की चोटी पर पहुँचने पर उन्होंने ज़ैफ़िर को बुलाया और उससे कहा कि वह उसको अपने मालिक के पास ले चले।

इतना कह कर वह कूद कर उस पर बैठने लगी कि वह उनका बोझ नहीं सह सका तो वह दोनों ही पहाड़ की चोटी से नीचे गिर गयीं और मर गयीं।

इस बीच साइक बिना खाना खाये और बिना कहीं ठहरे दिन रात अपने पति को ढूँढती हुई घूमती रही।

तभी उसको एक बड़े से पहाड़ पर एक बहुत ही शानदार मन्दिर दिखायी दिया। उसने सोचा शायद मेरा प्यार मेरा मालिक यहीं रहता है सो वह उस मन्दिर की तरफ चल दी।

जैसे ही वह उस मन्दिर के अन्दर घुसी तो उसने वहाँ मक्का के भुट्टे बिखरे देखे। कुछ भुट्टे तो वहाँ ऐसे ही खुले

पड़े हुए थे और कुछ के ऊपर बाल लगे हुए थे। उनके साथ साथ जौ की बाल[59] भी पड़ी हुई थीं।

उसी के आस पास फसल काटने के औजार भी बेतरतीबवार पड़े हुए थे। वे भी ऐसे पड़े हुए थे जैसे किसी फसल काटने वाले ने थक कर उनको ऐसे ही छोड़ दिया हो।

साइक ने उन सबको ठीक से रखा। पहले उसने उन सबको यह सोचते हुए एक जगह रखा कि वह किसी देवता को नाराज नहीं कर रही है।

यह मन्दिर सैरैस[60] का था। जब सैरैस ने देखा कि साइक कितनी मेहनत से वहाँ काम कर रही थी तो वह उसके काम से बहुत खुश हुई और उससे बोली।

"ओ साइक तुम तो वाकई दया के लायक हो। हालाँकि मैं तुमको वीनस के गुस्से से तो नहीं बचा सकती फिर भी मैं कम से कम तुमको इतना सिखा सकती हूँ कि उसके गुस्से को कम से कम कैसे किया जाये।

तुम जाओ और अपनी मालकिन को अपनी मरजी से अपने आपको समर्पित कर दो और अपनी सादगी से उसके गुस्से को

---

[59] Corn ears and barley ears. See their pictures above. Corn is on the previous page and barley is on this page.

[60] Ceres – goddess of ancient Roman religion. She was a goddess of agriculture, grain crops, fertility and motherly relationships. She was originally the central deity in Rome's so-called Plebeian or Aventine Triad.

जीतने की कोशिश करो। हो सकता है कि वह तुमसे खुश हो कर तुम्हें माफ कर दे और तुमको अपना खोया हुआ पति मिल जाये।"

साइक ने सैरैस का कहा माना और वह वीनस के मन्दिर चल दी। इस काम के लिये वह रास्ते भर अपने दिमाग को मजबूत बनाती रही और यही सोचती रही कि वह वहाँ जा कर वह क्या कहेगी और किस तरह से उस नाराज देवी को खुश करेगी।

साथ में उसको यह भी लग रहा था कि यह काम नामुमकिन भी हो सकता है और उसकी जान तक भी ले सकता है।

जब वह वहाँ पहुँची तो देवी वीनस ने उसका गुस्से से स्वागत किया और बोली — "तुम तो सबसे ज़्यादा बेवफा नौकर हो। आखिर तुमको कम से कम यह तो याद रहा कि तुम्हारी कोई मालकिन भी है।

या फिर तुम अपने उस बीमार पति को देखने आयी हो जो अभी तक अपनी प्यारी पत्नी के दिये हुए घाव से घायल है?

तुम तो इतनी खराब हो कि तुम तो अपने प्रेमी का केवल मेहनत कर के ही भला कर सकती हो। इससे पहले मैं तुम्हारी घर गृहस्थी सँभालने वाली की तरह से जाँच करूँगी कि तुमको घर गृहस्थी का काम कितना आता है।"

इतना कह कर उसने साइक को अपने मन्दिर के भंडारघर में भेज दिया। वहाँ गेहूँ जौ बाजरा बीन्स दालें और बहुत सारा अनाज उसके कबूतरों के खाने के लिये मिला हुआ पड़ा हुआ था।

उसने उससे कहा कि वह उन सब अनाजों को अलग अलग कर के ठीक से रखे और उसका यह काम शाम तक खत्म हो जाना चाहिये।

उसके बाद देवी वीनस वहाँ से चली गयी और उसको वहाँ काम करने के लिये छोड़ गयी। साइक वहाँ बेवकूफ सी चुपचाप बिना उस ढेर को छुए हुए बैठी रह गयी।

जब वह वहाँ इस तरह से बैठी थी तो क्यूपिड ने एक चींटी से साइक पर दया करने के लिये कहा जो वहीं खेत में रहती थी।

वह चींटी अपनी छह टाँगों वाली सब साथिनों को ले कर अनाज के उस ढेर के पास पहुँच गयी और बड़ी मेहनत से उस ढेर में से एक एक दाना उठा कर अलग अलग करने लगी।

सब चींटियों ने मिल कर उन दानों को अलग अलग कर दिया और उनके अलग अलग ढेर बना दिये। और जब सब काम खत्म हो गया तो वे सब चींटियाँ वहाँ से चली गयीं।

शाम को जब देवी वीनस खुशबू सूँघती हुई और गुलाबों का ताज पहिने देवताओं की दावत से वापस लौटी तो उसने देखा कि उसका काम तो हो चुका था।

वह चिल्लायी — "यह काम तो तुमने नहीं किया ओ चुड़ैल। यह काम तो उसका है जो तुम्हारा है और जिसकी बदकिस्मती ले कर तुम आयी हो।"

यह कह कर उसने साइक के रात के खाने के लिये उसकी तरफ काली रोटी का एक टुकड़ा फेंक दिया और वहाँ से चली गयी।

अगले दिन सुबह देवी वीनस ने साइक को बुलाया और कहा — "वह नदी के पास फैला हुआ जो मैदान तुम देख रही हो उसमें तुमको भेड़ें चरती हुई दिखायी देंगी।

उन भेड़ों को वहाँ कोई चराने वाला नहीं है। उनकी खाल की ऊन सुनहरी है। तुम जाओ और मेरे लिये उन सब भेड़ों की खालों के बालों के नमूने ले कर आओ।"

साइक उसका कहा मान कर नदी के किनारे चल दी पर नदी के देवता ने वहाँ लगे सरकंडे[61] के जंगल में से फुसफुसाया — "ओ लड़की तू कितनी भी कोशिश कर ले पर न तो तू इस खतरनाक बाढ़ को पार करने की कोशिश करना और न ही नदी पार इन भेड़ों के बीच में जाने की कोशिश करना।

क्योंकि जब तक सूरज निकलता है वे सारे भेड़ें उसके असर में रहते हैं और गुस्से से भरे रहते हैं और दुनियाँ के किसी भी आदमी को अपने तेज़ सींगों या दाँतों से नुकसान पहुँचाने की ताकत रखते हैं।

[61] Translated for the word "Reed". See its picture above.

पर जब दोपहर के बाद थोड़ा सी ठंडक हो जाती है और बाढ़ की आत्मा उनको आराम करने के लिये कुछ अलसाया सा कर देती है तब तू यह नदी सुरक्षित तरीके से पार कर सकती है। तब उनके सुनहरी ऊनी बाल भी झाड़ियों और पेड़ों के तनों पर चिपके पड़े होंगे।"

उसके बाद दयावान नदी देवता ने साइक को बताया कि वह देवी वीनस के कहे हुए काम को कैसे करे। साइक ने वैसा ही किया जैसा कि नदी के देवता ने उसको करने के लिये कहा था।

अपना काम पूरा कर के और उन भेड़ों के सुनहरी बालों को ले कर वह देवी वीनस के पास लौटी पर उसको अपनी मालकिन से उसके काम पूरा करने के लिये कोई तारीफ नहीं मिली।

वह बोली — "मुझे मालूम है कि यह काम जो तुमने कर लिया है यह काम भी तुमने नहीं किया। मैं अभी भी इस बात से सन्तुष्ट नहीं हूँ कि तुम कुछ करने लायक हो और किसी के लिये कुछ कर सकती हो।

फिर भी तुम्हारे लिये मेरे पास अभी एक काम और बाकी है। यह बक्सा लो और पाताल लोक[62] चली जाओ। वहाँ जा कर इसे प्रोसरपाइन[63] को देना।

[62] Translated for the words "Infernal Shades"

[63] Proserpine is the Roman goddess of Underworld.

और उससे कहना कि "मालकिन, देवी वीनस चाहती हैं कि आप उनको अपनी थोड़ी सी सुन्दरता दे दें क्योंकि अपने बीमार बेटे की तीमारदारी करते करते उनकी थोड़ी सी सुन्दरता चली गयी है।

और देखो अपने इस काम में बहुत देर नहीं लगाना क्योंकि मुझे शाम के लिये देवी देवताओं की मीटिंग में जाने के लिये तैयार भी होना है।"

साइक को अब यकीन हो गया था कि बस अब उसका अन्त करीब है। उसको तो खुद ही अपने पैरों पर चल कर इरैबस[64] जाना था। सो जिसको वह रोक नहीं सकती थी उसके लिये उसने देर भी नहीं की और वह लेट कर एक मीनार की चोटी पर चढ़ी ताकि वह पाताल जाने के लिये छोटे से छोटा रास्ता ले सके।

पर तभी मीनार की चोटी से एक आवाज आयी — "ओह बेचारी बदकिस्मत लड़की ऐसा क्यों, क्या तुम अपने इस जवानी के दिनों में इस तरह का अपना भयानक अन्त अपने आप ही करना चाहती हो?

[64] In Greek mythology, Erebus (deep darkness, shadow) was often conceived as a primordial deity, representing the personification of darkness; for instance, Hesiod's Theogony identifies him as one of the first five beings in existence, born of Chaos. Erebus features little in Greek mythological tradition and literature, but is said to have fathered several other deities with Nyx. The name Erebus is also used of a region of the Greek underworld where the dead pass immediately after dying, and is sometimes used interchangeably with Tartarus.

ऐसा कौन सा डरपोक आदमी होगा जो तुमको इस आखिरी खतरे के ऐसे समय में यहाँ मरने के लिये छोड़ देगा जिसने तुम्हारा पहले इतना साथ दिया है?”

तब उसी आवाज ने उसको एक गुफा के बारे में बताया कि कैसे वह उस गुफा में से हो कर प्लूटो[65] के राज्य तक पहुँच सकती है और कैसे वह तीन सिर वाले कुत्ते सरबेरस[66] के पास से जाते हुए सड़क के सारे खतरों से बच सकती है और चैरों[67] पर भी कब्जा कर सकती है।

---

[65] Pluto was the ruler of the underworld in classical mythology. The earlier name for the god was Hades, which became more common as the name of the underworld itself. In ancient Greek religion and mythology, Pluto represents a more positive concept of the god who presides over the afterlife.

[66] Cerberus is a three-headed dog that guards the entrance of the Underworld, allowing the dead to enter but letting none out. He was the son of Typhon and Echidna. Apart from his three heads, he also had a serpent's tail, a mane of snakes and the claws of a lion.

Cerberus was the12th and final labor that was given to Hercules by the King Eurystheus. Hercules had to capture this dog without using any weapons. After learning how the enter the Underworld, and assisted by some of the gods, he managed to go to the Underworld and finding Hades (or Pluto) he asked for his permission to take Cerberus to the surface. Hades agreed under the condition that Hercules must not use any weapons. Hercules eventually managed to overpower Cerberus and brought him to Eurystheus, successfully completing his twelve labours. Cerberus Is also called Kerberos.

[67] In Greek mythology, Charon or Kharon is the ferryman of Hades (Pluto) who carries souls of the newly deceased across the rivers Styx and Acheron that divided the world of the living from the world of the dead. A coin to pay Charon for passage was sometimes placed in or on the mouth of a dead person. Some say that those who could not pay the fee, or those whose bodies were left unburied, had to wander the river shores for 100 years. In the catabasis mytheme, heroes – such as Aeneas, Dionysus, Hercules, Hermes, Odysseus, Orpheus, Pirithous, Psyche, Theseus and Sisyphus – journey to the underworld and return, still alive, conveyed by the boat of Charon.

चैरों वह नाविक था जो उसको काली नदी[68] पार कराता और फिर उसको वापस लाता।

वह आवाज आगे बोली — "जब प्रोसरपाइन अपनी सुन्दरता से भर कर तुमको वह बक्सा वापस दे दे तो सब चीज़ों को ध्यान से देखते हुए तुमको यह खास तरीके से ध्यान में रखना है कि तुम उस बक्से को किसी भी हालत में नहीं खोलना।

इसके अलावा तुम देवियों की सुन्दरता के खजाने को भी देखने की अपनी उत्सुकता को शान्त रखो।"

साइक को उस आवाज की इस सलाह से बहुत हिम्मत मिली। उसने उसकी हर बात मानी ओर वह सुरक्षित रूप से प्लूटो के राज्य में पहुँच गयी।

वहाँ पहुँच कर उसको प्रोसरपाइन के महल के अन्दर ले जाया गया। वहाँ उसको बैठने के लिये सीट दी गयी खाने के लिये दावत दी गयी पर उसने उसका कुछ भी स्वीकार नहीं किया बल्कि एक मोटे आटे की रोटी से ही सन्तुष्ट हो गयी।

फिर उसने प्रोसरपाइन को देवी वीनस का सन्देश दिया।

तुरन्त ही उसको वह बक्सा उस कीमती चीज़ से भर कर उसको वापस कर दिया गया जो देवी वीनस ने उससे मँगवायी थी। वह बक्सा ले कर साइक उसी रास्ते से वापस आ गयी जिससे वह गयी थी। वह दिन के उजाले में आ कर बहुत खुश थी।

---

[68] Translated for the words "Black River".

अब तक उसने अपना सारा काम इन खतरों के रास्ते से हो कर ठीक से पूरा कर लिया था पर इसके बाद उसको उस बक्से के अन्दर रखी चीज़ को देखने की उत्सुकता होने लगी।

उसने सोचा अगर मैं इसमें से केवल थोड़ी सी सुन्दरता को अपने गालों पर लगा लूँ तो मैं अपने प्रिय पति की नजरों में और भी ज़्यादा सुन्दर हो जाऊँगी।

यह सोच कर उसने उस बक्से को खोला तो देखा कि उसमें तो सुन्दरता जैसी कोई चीज़ नहीं है बल्कि उसके अन्दर तो अँधेरी स्टाइजिअन[69] नींद है।

सो जैसे ही उसने वह बक्सा खोला तो वह नींद अपनी जेल से आजाद हो गयी और साइक पर छा गयी और साइक सड़क के बीच में ही गिर पड़ी जैसे कोई सोयी हुई लाश हो।

उधर क्यूपिड का घाव अब ठीक हो गया था। वह अब साइक की जुदाई और नहीं सह सकता था सो वह अपने कमरे की खिड़की की सबसे पतली झिरी से बाहर निकल गया।

बाहर निकल कर वह वहाँ आया जहाँ साइक पड़ी हुई थी। उसने बक्से से निकली नींद को इकट्ठा किया और फिर से उसी बक्से में बन्द कर दिया।

फिर उसने अपना एक तीर साइक को धीरे से छुआ कर जगाया और बोला — "तुम फिर से अपनी उसी उत्सुकता की वजह से मरने

---

[69] Like Styx River dark

वाली थीं। पर देखना कि अबकी बार मेरी माँ जो काम तुमको दे तुम उसको उसी तरह से कर दो तो फिर आगे मैं देख लूँगा।"

यह कह कर क्यूपिड बड़ी तेज़ी से स्वर्ग की तरफ उड़ गया और जुपीटर[70] के पास साइक के बारे में अपनी प्रार्थना ले कर पहुँचा।

जुपीटर ने उसकी बात ध्यान से सुनी और उसकी और साइक के प्रेम की बात को देवी वीनस से इतनी ज़ोर दे कर इतनी अच्छी तरह से कहा कि देवी वीनस को उसकी बात माननी ही पड़ी।

इसके बाद उसने अपने बेटे मरकरी[71] को साइक को स्वर्ग की सभा में लाने के लिये भेजा।

जब वह स्वर्ग में आ गयी तो उसने उसको अमृत का एक प्याला पीने के लिये दिया और कहा – "इसको पी लो और अमर हो जाओ। और देखो अब तुम क्यूपिड से अपनी गाँठ बिल्कुल मत

---

[70] Jupiter, also known as *Jove* is the god of sky and thunder and king of the gods in Ancient Roman religion and mythology. Jupiter was the chief deity of Roman state religion throughout the Republican and Imperial eras, until Christianity became the dominant religion of the Empire. Jupiter is usually thought to have originated as a sky god. His identifying implement is the thunderbolt and his primary sacred animal is the eagle, which held precedence over other birds in the taking of auspices and became one of the most common symbols of the Roman army.

The two emblems were often combined to represent the god in the form of an eagle holding in its claws a thunderbolt, frequently seen on Greek and Roman coins. In the later Capitoline Triad, he was the central guardian of the state with Juno (her Greek equivalent is Hera) and Minerva. His sacred tree was the oak. In Hindi language, he is called Brihaspati.

[71] Mercury is a major Roman god within the ancient Roman pantheon. He is the patron god of financial gain, commerce, eloquence (and thus poetry), messages/communication (including divination), travelers, boundaries, luck, trickery and thieves; he is also the guide of souls to the underworld. He was considered the son of Maia and Jupiter in Roman mythology. In Hindi language, it is called "Budh" and in Indian mythology he is the son of the Moon.

तोड़ना जिसमें वह तुमसे बँध गया है। आज से यह जोड़ा हमेशा के लिये एक साथ रहेगा।"

इस तरह साइक क्यूपिड से हमेशा के लिये बँध गयी। समय आने पर उन दोनों के एक बेटी हुई जिसका नाम उन्होंने रखा खुशी[72]।

[72] Translated for the word "Pleasure"

11 अदृश्य दुलहा[73]

सूअर राजा जैसी यह कहानी हमने तुम्हारे लिये यूरोप की कहानियों से ली है।

एक बार की बात है कि एक राजा और रानी थे जैसे और बहुत सारे होते हैं। उनके तीन बेटियाँ थीं जो एक से बढ़ कर एक सुन्दर थीं। पर उन सबमें सुन्दर थी उनकी सबसे छोटी बेटी। उसका नाम था अनीमा[74]।

अब एक दिन ऐसा हुआ कि तीनों बहिनें बाहर एक घास के मैदान में खेल रही थीं कि अनीमा को एक बहुत सुन्दर फूलों वाली झाड़ी दिखायी दे गयी। वह उसको इतनी अच्छी लगी कि वह उसे घर ले जाना चाहती थी ताकि वह उसे अपने बागीचे में लगा सके। सो वह उसको वहाँ से उखाड़ने के लिये दौड़ी।

उसने उसे जड़ से उखाड़ना चाहा तो वह उसे उखाड़ ही नहीं पा रही थी। काफी कोशिशों के बाद जब वह उखड़ गयी तो उसने देखा कि उस गड्ढे से नीचे की तरफ तो सीढ़ियाँ जा रही थीं।

अनीमा एक बहादुर लड़की थी और उसको यह देखने की भी उत्सुकता हुई कि वह यह देखे कि वे सीढ़ियाँ कहाँ तक जाती हैं सो

---

[73] The Unseen Bridegroom – a folktale from Europe. Taken from the Book “European Folk and Fairy Tales”. Edited by Joseph Jacobs. NY: GP Putnam’s Sons. 1916. Taken from the Web Site: http://www.surlalunefairytales.com/eastsunwestmoon/stories/unseen.html

[74] Anima – the name of the third and the youngest daughter of the King and Queen.

यह देखने के लिये वह बिना अपनी बहिनों को बताये उन सीढ़ियों से नीचे उतर गयी।

वह उन सीढ़ियों से हो कर बहुत दूर चलती चली गयी। चलते चलते वह एक खुली जगह आ पहुँची जो एक दूसरे देश में थी और वह जगह उसने पहले कभी देखी नहीं थी। उसने देखा कि उसके सामने ही एक महल खड़ा था।

अनीमा उस महल की तरफ दौड़ गयी और उसके दरवाजे तक आयी। वहाँ पहुँच कर उसने उस दरवाजे का कुंडा खटखटाया तो बिना किसी के खोले ही वह दरवाजा खुल गया।

वह अन्दर गयी तो वह महल तो बहुत कीमती चीज़ों से सजा हुआ था। उसकी दीवारें संगमरमर की थीं। उसमें कीमती परदे लगे हुए थे। उसमें बहुत मँहगे मँहगे पलंग और बिस्तर लगे हुए थे। जैसे ही वह अन्दर घुसी तो कहीं से संगीत बज उठा और जहाँ जहाँ वह जाती रही वह उसके साथ साथ चलता रहा।

फिर वह एक कमरे में आयी जहाँ आरामदेह काउच पड़े हुए थे। वह यहाँ तक आते आते थक गयी थी सो वह वहाँ आ कर एक काउच पर गिर सी पड़ी।

जैसे ही वह काउच पर बैठी तो उसके सामने पहिये वाली एक मेज आ गयी। उस मेज को कोई नहीं चला रहा था। उस मेज पर सुन्दर फल केक और ठंडे पेय लगे हुए थे। अनीमा ने उसमें से

जितना उसके मन में आया उतना खाया पिया और फिर वह वहीं सो गयी। जब उसकी आँख खुली तब रात होने को थी।

उसने देखा कि हवा में उड़ते हुए दो बड़े बड़े मोमबत्तीदान चले आ रहे हैं जिनमें हर एक में तीन तीन जलती हुई मोमबत्तियाँ लगी हुई हैं। वे आ कर उसके सामने वाली मेज पर आ कर ठहर गये। उनमें से बहुत रोशनी निकल रही थी।

यह देख कर उसके मुँह से निकला — "अरे मुझे तो अपने घर जाना चाहिये पर मैं कैसे जाऊँ। उफ़ मैं कैसे जाऊँ।"

तभी उसके पास से कहीं से कोई बड़ी मीठी सी आवाज आयी — "तुम यहाँ मेरे पास रहो और मेरी पत्नी बन जाओ। तुमको वह सब मिल जायेगा जो तुम चाहोगी।"

अनीमा तो यह सुन कर डर गयी और काँपते हुए बोली — "पर तुम हो कौन। तुम मेरे सामने आओ ताकि मैं तुम्हें देख तो सकूँ।"

आवाज बोली — "नहीं नहीं। मुझे देखना मना है। तुमको मेरा चेहरा कभी नहीं देखना चाहिये नहीं तो हम अलग हो जायेंगे क्योंकि मेरी माँ जो एक रानी है वह यह नहीं चाहती कि मेरी शादी हो।"

वह आवाज इतनी मीठी थी और अनीमा इतनी अकेली थी कि उसने उसकी पत्नी बनना स्वीकार कर लिया और वे लोग खुशी खुशी रहने लगे हालाँकि वह उसके पास कभी नहीं आया जब तक

कि रात नहीं हो गयी। इसलिये वह उसको कभी देख ही नहीं सकी।

पर कुछ समय बाद अनीमा इस तरह की शानो शौकत और खुशी की ज़िन्दगी से ऊब गयी। उसको अब अपने घर वालों से मिलने की इच्छा होने लगी।

सो एक दिन उसने अपने पति से कहा — "मैं अपने माता पिता और अपनी बहिनों को देखने जाना चाहती हूँ।"

उसके पति की मीठी आवाज ने कहा — "नहीं नहीं। अगर तुम उनसे मिलने जाओगी तो तुम्हारे जाने से कुछ न कुछ बुराई हो जायेगी और फिर हम दोनों अलग हो जायेंगे।"

पर वह उससे बार बार प्रार्थना करती रही कि वह अपने परिवार से मिलना चाहती है। अगर वह वहाँ नहीं जा सकती तो वह उनको वहाँ आने दे।

आखिर उसने उसको उनसे मिलने की इजाज़त दे दी। उसने उसके माता पिता और बहिनों को यह सन्देश भेज दिया कि वे अपनी बेटी के पास आ कर कुछ दिन गुजारें और उस समय वह वहाँ नहीं रहेगा।

सो अनीमा के माता पिता और बहिनें वहाँ आये और उसके नये घर की शान शौकत की बहुत तारीफ की। और यह देख कर तो आश्चर्य में पड़ गये कि कोई अदृश्य हाथ उनकी सेवा कर रहे थे।

वे उनके लिये वह सब कर रहे थे जिस किसी की उनकी इच्छा होती थी।

पर अनीमा की बहिनें यह सब देख कर बहुत उत्सुक हो गयीं और साथ में उससे जलने भी लगीं। वे यह पता नहीं कर पायीं कि उसका पति कौन था और कैसा था और उसका घर इतना सुन्दर कैसे था।

उसकी एक बहिन ने उससे पूछा — "पर अनीमा तुमने एक ऐसे लड़के से शादी कैसे कर ली जिसको तुमने देखा तक नहीं। कोई तो वजह होगी जिसकी वजह से वह तुम्हारे सामने नहीं आता। क्या पता उसका कोई अंग भंग हो या फिर वह कोई जानवर हो जो अपना रूप बदल लेता हो।"

इस पर अनीमा हँस पड़ी और बोली — "नहीं नहीं। इतना तो मैं यकीन के साथ कह सकती हूँ कि वह कोई जानवर नहीं है पर देखो तो वह मेरे साथ कितना अच्छा व्यवहार करता है। मुझे इसकी भी चिन्ता नहीं है कि वह उतना सुन्दर है या नहीं जैसा कि उसकी बातों से लगता है।"

फिर भी उसकी बहिनें उस पर इस बात का ज़ोर डालती रहीं कि उसके साथ कहीं तो कुछ गड़बड़ है जो वह तुमसे छिपा रहा है।

आखिर जब वे सब वहाँ से जाने लगे तो उसकी माँ रानी ने कहा — "अनीमा बेटी मुझे लगता है कि यह तो तुम्हारा अधिकार है कि तुम यह जानो कि तुम्हारा पति कौन है और क्या है। तुम तब

तक इन्तजार करना जब तक वह गहरी नींद न सो जाये। तब तुम एक लैम्प जलाना और उसकी रोशनी में देखना कि वह कौन है और कैसा है।”

इसके बाद वे सब चले गये। उसी रात अनीमा का पति उसके पास आया। उस रात अनीमा ने पहले से ही एक तेल का लैम्प तैयार कर के रखा हुआ था ताकि वह उसे जरूरत पड़ने पर तुरन्त ही जला सके।

जब उसने सुना कि वह उसके पास गहरी नींद सो गया उसने वह लैम्प जलाया और उसकी रोशनी में उसे देखा तो वह तो उसको देख कर दंग रह गयी। वह तो दुनियाँ का सबसे सुन्दर राजकुमार था। उसके शरीर की गठन बहुत अच्छी थी।

पर जब वह उसे देख रही थी तो खुशी से उसका हाथ काँपा और उसके लैम्प के तेल की तीन बूँदें उसके गाल पर गिर गयीं। इससे वह जाग गया और उसने अनीमा की तरफ देखा।

उसे पता चल गया कि उसने अपना किया गया वायदा तोड़ दिया है सो वह बोला — “ओह अनीमा, ओह अनीमा तुमने मेरे साथ ऐसा क्यों किया? अब हम लोगों को तब तक अलग रहना पड़ेगा जब तक तुम मेरी माँ को मेरी शादी करने पर राजी न कर लो।”

इसके साथ ही बहुत ज़ोर के बादल गरजे। लैम्प बुझ गया और अनीमा बेहोश हो कर जमीन पर नीचे गिर गयी।

जब वह जागी तब तक वह महल वहाँ से गायब हो चुका था और वह एक सुनसान मैदान जैसी जगह में खड़ी थी।

वह वहाँ से चल दी। कहाँ, यह उसे पता नहीं था। चलते चलते वह एक ऐसी जगह आ गयी जहाँ एक मकान खड़ा हुआ था। वहाँ उस मकान में उसको एक बुढ़िया मिली। उसने उसे कुछ खाने पीने को दिया और उससे पूछा कि वह वहाँ कैसे आयी थी।

अनीमा ने उसे अपनी पूरी कहानी बतायी तो वह बुढ़िया बोली — "तूने मेरे भानजे यानी मेरी बहिन के बेटे से शादी की थी और मुझे डर है कि वह इसके लिये तुझे कभी माफ नहीं करेगी।

फिर भी तू हिम्मत रख बेटी। तू उसके पास जा और उससे अपना पति माँग। अगर जो कुछ भी वह तुझसे करने के लिये कहे और तू उसे कर दे तो उसको तुझे उसे देना ही पड़ेगा।

ले यह डंडी ले जा। वह तुझसे कुछ पूछेगी जो मुझे आशा है कि वह तुझसे पूछेगी ही तो तू इसे तीन बार जमीन पर मारना तो तुझे सहायता मिल जायेगी।"

फिर उसने अनीमा को उसकी सास के घर का पता बताया। क्योंकि वह काफी दूर था तो उसने उससे बीच में अपनी एक और बहिन के पास रुक जाने के लिये कहा कि शायद वह भी उसकी कुछ सहायता कर सके। सो उसने वह डंडी ली और उस बुढ़िया की दूसरी बहिन के पास चल दी।

जब वह वहाँ पहुँची तो एक और बुढ़िया ने दरवाजा खोला। उसने उसको भी अपनी कहानी बतायी। यह बुढ़िया भी जो रानी की एक और बहिन थी उसने उसको रैवन[75] का एक पंख दिया और बताया कि जरूरत पड़ने पर उसको कैसे इस्तेमाल करना था।

आखिर अनीमा रानी यानी अपने अदृश्य पति की माँ के महल में आ गयी तो उसने उससे मिलने की इच्छा प्रगट की। जब वह उसके सामने पहुँची तो उसने उससे अपने पति से मिलने की इच्छा प्रगट की।

यह सुन कर रानी चिल्लायी — "तू ओ नीच लड़की तेरी हिम्मत कैसे हुई मेरे बेटे से शादी करने की?"

अनीमा बोली — "यह उनकी इच्छा थी। अब मैं उनकी पत्नी हूँ। मुझे यकीन है कि आप मुझे उन्हें एक बार देखने की तो इजाज़त दे ही देंगी।"

रानी बोली — "ठीक है। पर अगर तू वह सब कर सकी जो मैं तुझसे करने के लिये कहूँ तभी तू मेरे बेटे को देख सकती है। तू पहले मेरे अनाजघर में जा जहाँ मेरे बेवकूफ नौकरों ने गेहूँ ओट्स[76]

---

[75] Raven is a crowlike bird. See its picture above. Raven is a very famous bird all over the world but especially in North-western America. I have published its many stories in three parts – "Raven Ki Lok Kathayen-1", "Raven Ki Lok Kathayen" are published. "Raven Ki Lok Kathayen-3" is available from hindifolktales@gmail.com

[76] Oats is a kind of cereal.

और चावल सब एक ढेर में इकट्ठा कर के डाल दिया है। अगर तू उन सबको अलग अलग कर दे तो तू मेरे बेटे को देख सकती है।"

सो अनीमा को उसके अनाजघर में ले जाया गया। वहाँ उन तीनों अनाजों का मिला जुला एक बहुत बड़ा ढेर लगा हुआ था। उसको वहाँ अकेला छोड़ दिया गया और अनाजघर का दरवाजा बन्द कर दिया गया।

तब उसे याद आयी उस डंडी की जो रानी की बहिन ने उसको दी थी। उसने तुरन्त ही वह डंडी निकाली और उसे तीन बार जमीन पर मारा। उसको जमीन पर मारते ही जमीन में से हजारों चीटियाँ बाहर निकल आयीं और तुरन्त ही उन्होंने उस ढेर पर काम करना शुरू कर दिया।

उनमें से कुछ गेहूँ ले जा कर एक कोने में रख रही थीं कुछ ओट्स दूसरे कोने में रख रही थी और कुछ चावल के दानों का एक ढेर बना रही थीं। रात तक वह सारा ढेर तीनों अनाजों के तीन ढेर में बँट गया था।

जब रानी अनीमा को उस अनाजघर में से बाहर निकालने के लिये आयी तो उसने देखा कि उसका काम तो हो चुका था। यह देख कर वह चिल्लायी — "तूने जरूर किसी की सहायता ली है खैर मैं कल देखूँगी अगर तू एक और काम अपने आपसे कर सकती है या नहीं।"

अगले दिन वह उसको महल की छत पर ले गयी जो कि पूरी की पूरी दो तरह की बतखों और हंसों के पंखों से भरी पड़ी थी। उसने अपनी आलमारी से बारह गद्दे निकाले और उन्हें उसको देते हुए कहा — "शाम तक तू उनमें से चार गद्दे हंसों के पंखों से चार गद्दे एक तरह की बतख के पंखों से और बाकी के चार गद्दे दूसरी तरह की बतखों के पंखों से भर दे। पहले यह सब कर फिर देखेंगे।"

यह कह कर वह अनीमा को वहाँ छोड़ कर और दरवाजा बन्द कर के चली गयी। अब अनीमा क्या करे। फिर उसको उस पंख का ख्याल आया जो रानी की दूसरी बहिन ने उसको दिया था।

उसने रैवन का वह पंख निकाला और उसे हवा में तीन बार हिलाया तो वहाँ बहुत सारी चिड़ियें खिड़की से अन्दर आ गयीं। उन्होंने हर एक ने अलग अलग किस्म का पंख उठाया और गद्दे में भरना शुरू कर दिया। इस तरह से रात होने से पहले पहले ही जैसा कि रानी चाहती थी उसी तरह से उसके गद्दे तैयार हो गये।

जब रात को रानी अपना काम देखने आयी और जैसे ही उसने देखा कि उसका काम तो हो गया तो वह फिर चिल्लायी — "तूने फिर किसी की सहायता ली है। कल तुझे फिर कुछ करना होगा जिसको तू अकेली कर सके।"

अगले दिन रानी फिर आयी और एक थर्मस और एक चिट्ठी साथ में लायी। वे अनीमा को देते हुए उसने कहा — "ले ये ले

और इन दोनों को मेरी बहिन को दे देना जो पाताल लोक की रानी है। और फिर जो कुछ भी वह तुझे दे उसे ठीक से मेरे पास ले कर आ।"

"पर मैं आपकी बहिन को ढूँढू कहाँ?"

वह बोली — "यह तू अपने आप पता कर।"

बेचारी अनीमा वहाँ से चल दी। उसे कहाँ जाना है उसे पता ही नहीं था। तभी उसने अपने पीछे बहुत धीमी आवाज सुनी उसके सहारे वह चल दी।

उस आवाज ने कहा — "तुम एक ताँबे का सिक्का ले लो और एक डबल रोटी ले लो। फिर तुम उस गहरी घाटी में नीचे तक चली जाओ। वहाँ तुमको एक गहरी नदी मिलेगी। वहीं तुमको एक बूढ़ा मिलेगा जो लोगों को नाव में नदी पार करता मिलेगा।

यह सिक्का तुम अपने दाँतों के बीच में रख लेना और उसको वह अपने मुँह में से लेने देना। वह तुम्हें नदी पार करा देगा। नदी पार कर के तुम्हें एक अँधेरी गुफा मिलेगी। उसके दरवाजे पर एक जंगली कुत्ता बैठा होगा। उसको तुम वह डबल रोटी खिला देना तो वह तुमको गुफा में जाने देगा।

उसके बाद जल्दी ही तुम पाताल लोक की रानी के पास पहुँच जाओगे। वह जो कुछ भी तुम्हें दे उसे सावधानी से ले आना पर ध्यान रखना कि गुफा में तुम कुछ खाना नहीं और वहाँ बैठना भी नहीं।"

अनीमा ने वह आवाज पहचान ली वह उसके पति की आवाज थी। उसने वैसा ही किया जैसा कि उसने उससे करने के लिये कहा था जब तक वह पाताल लोक की रानी के पास आयी। उसने वह चिट्ठी उसे दे दी। उसने उसको पढ़ा।

उसने अनीमा को खाने के लिये केक और पीने के लिये शराब दी पर उसने ना में सिर हिलाते हुए उसे मना कर दिया। वह बोली कुछ भी नहीं।

तब पाताल की रानी ने उसको एक खुरदरा सा बक्सा दिया और कहा — "लो तुम इसे मेरी बहिन के पास ले जाओ। ध्यान रखना कि इसको तुम रास्ते में नहीं खोलना नहीं तो तुम्हारा बुरा होगा।" और उसे वहाँ से भेज दिया।

अनीमा वहाँ से वापस लौटी उसने कुत्ते को पार किया उसने नदी पार की। जब वह दूर जंगल में आ गयी तो वह उस बक्से को खोलने के लालच को न रोक सकी।

और जब उसने वह बक्सा खोला तो उसमें से बहुत सारी गुड़ियें निकल पड़ीं और उन्होंने उसके सामने और चारों तरफ नाचना शुरू कर दिया। यह देख कर उसको बड़ा आनन्द आया।

पर जल्दी ही रात होने को आ गयी तो वह उन सबको उस बक्से में बन्द करना चाह रही थी पर वे वहाँ से भाग गयीं और जा कर पेड़ों के पीछे छिप गयीं। अब अनीमा को लगने लगा कि वह तो उनको वापस बक्से में रख ही नहीं सकती थी।

उसकी समझ में नहीं आया कि वह क्या करे सो वह वहीं नीचे बैठ गयी और रोने लगी। वह बहुत देर तक रोती रही।

लेकिन फिर उसने अपने पति की आवाज सुनी — "देखो न तुम्हारी इस उत्सुकता ने तुम्हारे लिये क्या हालात पैदा कर दिये हैं। तुम अब यह बक्सा उसी हालत में मेरी माँ के पास नहीं ले जा सकतीं जिसमें मेरी मौसी ने तुम्हें यह उसे देने के लिये दिया था इसलिये अब हम एक दूसरे को फिर कभी नहीं देख पायेंगे।"

यह सुन कर तो अनीमा और बहुत ज़ोर ज़ोर से रोने लगी कि राजकुमार को उसके ऊपर दया आ गयी। वह उससे बोला — "तुम उस दूर के पेड़ पर वह सुनहरी डाल देख रही हो न। तुम उसको तोड़ लो और उसको तीन बार जमीन पर मारो तो फिर देखना कि क्या होता है।"

अनीमा ने वैसा ही किया जैसा राजकुमार ने उससे करने के लिये कहा था जिससे वे सारी गुड़ियें उस बक्से में आ कर बैठ गयीं। उनके अन्दर घुसते ही लड़की ने उस बक्से को बन्द कर दिया और तुरन्त ही उसे रानी के पास ले गयी।

रानी ने बक्सा खोला तो उसने उसमें गुड़ियों को देखा तो बहुत ज़ोर से हँस दी और बोली — "मुझे मालूम है कि किसने तुम्हारी सहायता की है। अब मैं कुछ नहीं कर सकती। अब तो तुमको मेरा बेटा मिलना ही चाहिये।"

जैसे ही उसने यह कहा वैसे ही उसका बेटा वहाँ प्रगट हो गया। उसके बाद वे दोनों आपस में मिल गये और फिर बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहे।

12 एक आदमी जो केवल रात को बाहर निकलता था[77]

सूअर राजा जैसी कहानियों की इस दूसरी पुस्तक की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है। इस कहानी में एक राजकुमार पर जादू डाल कर उसको एक कछुआ बना दिया जाता है। पर बाद में वह कछुआ आदमी कैसे बनता है यह देखने की बात है।

एक बार की बात है कि एक मछियारा था जिसकी तीन सुन्दर बेटियाँ थीं। उसकी तीनों बेटियाँ शादी के लायक थीं।

एक नौजवान ने उसकी तीनों बेटियों में से एक का हाथ शादी के लिये माँगा। वह नौजवान क्योंकि केवल रात को ही बाहर निकलता था इसलिये लोग उसको शक की निगाहों से देखते थे।

इसी लिये उसकी सबसे बड़ी और बीच वाली बेटियों ने उससे शादी करने से साफ मना कर दिया पर उसकी तीसरी और सबसे छोटी बेटी उससे शादी करने के लिये तैयार हो गयी।

दोनों की शादी रात को ही हुई। जैसे ही वे दोनों अकेले रह गये तो पति ने पत्नी से कहा — "मैं तुमको एक भेद बताना चाहता

---

[77] The Man Who Came Out Only at Night – a folktale from Italy from its Riviera de Ponente area, Italy. Adapted from the book "Italian Folktales: selected and retold by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980. Hindi translation of 125 tales out of 200 tales of this book is available from hindifolktales@gmail.com

हूँ। मेरे ऊपर एक बहुत बुरा जादू पड़ा हुआ है जिससे मैं दिन में कछुआ बन जाता हूँ और रात में मैं एक आदमी बन जाता हूँ।

इस जादू को तोड़ने का केवल एक ही तरीका है। और वह यह कि पहले मैं शादी करूँ, फिर मैं अपनी पत्नी को छोड़ कर दुनियाँ घूमूँ – रात में एक आदमी तरह और दिन में एक कछुए की तरह।

अगर मैं वापस आऊँ और पाऊँ कि मेरी पत्नी मेरे लिये इस सारा समय वफादार रही है और उसने मेरे लिये सारी मुश्किलों को सहा है तो फिर मैं हमेशा के लिये आदमी बन जाऊँगा।"

पत्नी बोली — "मैं आपका जादू तोड़ने के लिये और फिर हमेशा आदमी के रूप में देखने के लिये जो भी आप कहेंगे वही करूँगी।"

इसके बाद पति तो दुनियाँ घूमने निकल पड़ा और उसकी पत्नी शहर में काम खोजने के लिये निकल पड़ी।[78] रास्ते में उसको एक रोता हुआ बच्चा मिला तो उसने उस बच्चे की माँ से कहा — "लाइये इसको मुझे दे दीजिये मैं इसको चुप करा देती हूँ।"

माँ बोली — "बेटी तुम वह पहली आदमी हो जिसने मुझसे ऐसा कहा है। आज यह सुबह से ही रो रहा है चुप ही नहीं हो रहा।"

---

[78] It seems that one sentence is missing here somehow, that "when he went he gave her a diamond and said that "Whatever you will ask from it it will do for you."

लड़की ने उसके कान में फुसफुसाया — "हीरे की ताकत से यह बच्चा हॅस जाये, नाचे और कूदे।" बस उसका यह कहना था कि बच्चे ने उसी समय से हॅसना, नाचना और कूदना शुरू कर दिया।

बच्चे की माँ तो अपने बच्चे को हॅसता नाचता देख कर बहुत खुश हो गयी और उस लड़की को बहुत आशीर्वाद दे कर अपने हॅसते खेलते बच्चे को ले कर चली गयी।

वह लड़की और आगे चली तो एक बेकरी[79] की दूकान पर पहुँची। वहाँ जा कर वह उसकी मालकिन से मिली और बोली — "अगर आप मुझे अपनी बेकरी की दूकान में किसी काम पर रख लेंगी तो आप मुझसे बहुत खुश रहेंगी।"

यह सुन कर उस बेकरी की दूकान की मालकिन ने उसको अपनी दूकान में काम दे दिया और वह वहाँ डबल रोटियाँ बनाने लगी।

जब वह डबल रोटियाँ बनाती तो फुसफुसाते हुए बोलती — "हीरों की ताकत से जब तक मैं यहाँ काम करती हूँ तब तक सारा शहर केवल इसी बेकरी से डबल रोटी खरीदे।"

[79] Bakery shops normally bake the bread, biscuits, cake, bun etc. Most western households use baked goods in their staple food.

बस उस दिन से उसकी दूकान पर भीड़ लगी रहती और उसको पल भर का समय भी खाली नहीं मिलता। सारे लोग उसी दूकान से अपनी डबल रोटी खरीदते।

उस दूकान पर तीन नौजवान भी डबल रोटी लेने के लिये आते थे। उन तीनों ने उस लड़की को देखा तो वे तीनों ही उससे प्यार करने लगे।

उनमें से एक नौजवान ने एक दिन उससे कहा अगर तुम मुझे अपने साथ एक रात गुजारने दो तो मैं तुमको एक हजार फ्रैंक[80] दूँगा। दूसरे नौजवान ने कहा कि मैं दो हजार फ्रैंक दूँगा और तीसरा नौजवान बोला कि मैं तीन हजार फ्रैंक दूँगा।

लड़की ने तीसरे नौजवान से तीन हजार फ्रैंक लिये और उसको रात को बेकरी की दूकान में बुलाया। जब वह आया तो उससे बोली — "मैं अभी आती हूँ एक मिनट में। ज़रा मैं आटे में खमीर[81] डाल आऊँ। जब तक तुम यहाँ खाली बैठे हो तब तक मेरे लिये यह आटा ही मल दो।"

उस नौजवान ने उसका आटा मलना शुरू किया तो वह तो मलता ही रहा, मलता ही रहा, मलता ही रहा। हीरे की ताकत से वह अपने हाथ आटा मलने से हटा ही नहीं सका और वह अगले दिन सुबह तक आटा ही मलता रहा।

---

[80] Franc is the currency of France

[81] Translated for the word "Yeast"

सुबह को लड़की बोली — "सो आखिर तुमने अपना आटा मलने का काम खत्म कर ही लिया। मुझे अफसोस है कि तुमको आटा मलने में इतनी देर लग गयी।" और उस समय क्योंकि सुबह हो गयी थी इसलिये उसने उसको वहाँ से वापस भेज दिया।

फिर उसने दो हजार फ्रैंक वाले नौजवान को रात को बुलाया और उससे उसने आग में धौंकनी चलाने के लिये कहा ताकि ओवन[82] की आग बुझ न जाये। वह बेचारा भी हीरे की ताकत से रात भर धौंकनी चलाता रह गया। उसके हाथ उस धौंकनी पर से हट ही नहीं पा रहे थे।

सुबह को वह लड़की कुछ अफसोस दिखाते हुए उससे बोली — "उँह भला यह भी कोई तरीका है किसी से बरताव करने का? तुम तो मुझसे यहाँ मिलने आये थे और तुम तो यहाँ रात भर आग फूँकते ही रह गये। मुझे बहुत अफसोस है।"

सुबह हो गयी थी सो उसने उसको भी घर वापस भेज दिया।

अगली रात उस लड़की ने एक हजार फ्रैंक वाले नौजवान को बुलाया। जब वह आ गया तो उसने उससे कहा — "मुझे ज़रा आटे में खमीर मिलाना है तुम ज़रा दूकान का दरवाजा बन्द कर दो।"

[82] An oven is a thermally insulated chamber used for the heating, baking or drying of a substance and most commonly used for cooking.

वह नौजवान दरवाजा बन्द करने गया तो हीरे की ताकत से तो वह दरवाजा ही बन्द करता रह गया। वह दरवाजा रात भर बन्द ही नहीं हुआ।

वह जैसे ही उसको बन्द करने की कोशिश करता वह बार बार खुल जाता था। वह सारी रात दरवाजा बन्द ही नहीं कर सका। जब दिन निकल आया तब कहीं जा कर वह दरवाजा बन्द हुआ।

जब वह दरवाजा बन्द कर के लड़की के पास लौटा तो उसने पूछा — "तुमने ठीक से देख लिया है न कि दरवाजा बन्द हो गया या नहीं?"

नौजवान ने पलट कर देखा कि वाकई दरवाजा बन्द हुआ कि नहीं फिर कुछ सोच कर बोला — "हाँ हो गया।"

लड़की बोली — "तो अब तुम दरवाजा खोल कर बाहर जा सकते हो।"

लड़की के ऐसे बरताव से उन तीनों नौजवानों को बहुत गुस्सा आया। वे थाने में उसकी शिकायत करने गये।

उस दिन कुछ स्त्री पुलिस उस स्त्री की दूकान पर आयीं और उस लड़की के बारे में पूछा जिसने यह सब किया था। उन्होंने उस लड़की को पकड़ लिया और उसको थाने ले जाने लगीं।

तभी वह लड़की फिर फुसफुसायी — "हीरे की ताकत से ये स्त्रियाँ आपस में एक दूसरे को मारती ही रहें – सुबह सवेरे तक।"

वहाँ पर चार स्त्री पुलिस थीं। उस लड़की के यह फुसफुसाते ही वे चारों आपस में एक दूसरे को कान पर मारने लगीं और फिर सुबह तक मारती ही रहीं।

सुबह को उन सबके कान पिटते पिटते काशीफल की तरह से सूजे पड़े थे फिर भी वे एक दूसरे को मारे जा रही थीं। उनके हाथ ही नहीं रुक पा रहे थे।

जब वे स्त्री पुलिस उस लड़की को पकड़ कर थाने नहीं ला सकीं तो चार आदमी पुलिस उनको देखने के लिये भेजे गये। उस लड़की ने जब उन आदमी पुलिस को आते देखा तो वह फिर फुसफुसायी — "हीरे की ताकत से ये चारों पुलिस वाले मेंढक की तरह से कूदते रहें।"

उनमें से एक औफीसर तो उसी समय दूसरे तीन औफीसरों के सामने गिर पड़ा। दूसरा उसके ऊपर से हो कर थोड़ा आगे की तरफ चला तो तीसरे ने उसकी कमर पर हाथ रखा और उसके ऊपर कूद गया। चौथे ने भी वैसे ही किया और इस तरह से वे बहुत देर तक मेंढक की कूद का खेल[83] खेलते रहे।

इसी समय एक कछुआ वहाँ रेंगता हुआ आ गया। यह उस लड़की का पति था जो अपनी दुनियाँ की यात्रा पूरी कर के वापस आ गया था। जैसे ही उसने अपनी पत्नी को देखा तो वह आदमी बन गया।

---

[83] Leap Frog game

लड़की की खुशी का वारापार न रहा। वे दोनों फिर पति पत्नी बन कर बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहे।

13 मेंढक राजकुमार–1[84]

सूअर राजा जैसी कहानियों की इस दूसरी पुस्तक की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के जर्मनी देश की लोक कथाओं से ली गयी है। यह जर्मनी की एक बहुत ही लोकप्रिय और मशहूर लोक कथा है।

इस कहानी में एक राजकुमार पर जादू डाल कर उसको एक मेंढक बना दिया जाता है जो केवल किसी ऐसी लड़की के उससे शादी करने से ही आजाद हो सकता है जो उससे उसकी शक्ल पर न जा कर उसके साथ खाना खाये उसको अपने बिस्तर में सुलाये। और फिर उससे शादी करने को तैयार हो जाये।

एक बार की बात है कि एक शाम को एक राजकुमारी ने अपनी टोपी पहनी और जूते पहने और अकेली ही घूमने चल दी। चलते चलते वह एक जंगल में पहुँच गयी।

वहाँ उसने एक ठंडे पानी का सोता देखा जिसके बीच में एक गुलाब खिला हुआ था। वह वहीं सुस्ताने के लिये उस सोते के पास बैठ गयी। उसके हाथ में एक सुनहरी गेंद थी जो उसको बहुत अच्छी लगती थी।

---

[84] The Frog Prince – a folktale of Germany, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.eastoftheweb.com/short-stories/UBooks/FrogPrin.shtml
This folktale was written by Brothers Grimm.

वह वहाँ बैठी बैठी उस गेंद को उछाल उछाल कर खेल रही थी। एक बार वह इतनी ऊँची उछली कि वह उसके हाथ नहीं आयी और जमीन पर लुढ़कती चली गयी।

राजकुमारी उसके पीछे दौड़ी भी पर उसे पकड़ न सकी और वह पानी में चली गयी। राजकुमारी ने पानी में झाँका परन्तु पानी गहरा होने की वजह से वह पानी में जाने का साहस न कर सकी।

राजकुमारी बहुत दुखी हुई और कहने लगी — "काश, मेरी गेंद वापस मिल जाये तो मैं अपने सब वेशकीमती कपड़े और जवाहरात और जो कुछ भी मेरे पास है मैं उसे वह सब दे दूँ।"

यह सुनते ही एक मेंढक ने अपना मुँह पानी से बाहर निकाला और बोला — "राजकुमारी, तुम इतनी ज़ोर से क्यों रोती हो?"

राजकुमारी बोली — "ओ गन्दे मेंढक, तुम मेरी क्या सहायता कर सकते हो? मेरी सुनहरी गेंद पानी में गिर गयी है। अगर तुम उसे निकाल दो तो मैं अपनी सब वेशकीमती कपड़े और जवाहरात और जो कुछ भी मेरे पास है मैं वह सब तुमको दे दूँगी।"

मेंढक बोला — "मुझे तुम्हारे वेशकीमती कपड़े और जवाहरात आदि नहीं चाहिये, मगर अगर तुम मुझे प्यार करो, अपने साथ रखो, अपने साथ सोने की थाली में खाना खिलाओ, अपने छोटे से बिछौने पर सोने दो तो मैं तुम्हारी गेंद ला सकता हूँ।"

राजकुमारी सोचने लगी कि यह मेंढक क्या बेकार की बातें कर रहा है। यह तो पानी से बाहर ही नहीं आ सकता। पर हो सकता है कि वह मेरी गेंद निकाल दे इसलिये मैं इसकी बात माने लेती हूँ।

यही सोच कर वह बोली — "अगर तुम मेरी गेंद निकाल दो तो जो कुछ तुम चाहते हो वह मैं तुम्हारे लिये करने को तैयार हूँ।"

मेंढक ने एक डुबकी लगायी और कुछ ही पल में गेंद मुँह में दबाये ऊपर आ गया और उस गेंद को उसने जमीन पर फेंक दिया। जैसे ही राजकुमारी ने अपनी गेंद देखी तो वह बहुत खुश हुई और उसे उठाने को दौड़ी।

वह अपनी गेंद पा कर इतनी ज़्यादा खुश थी कि उसने मेंढक की तरफ मुड़ कर भी नहीं देखा और अपनी गेंद उठा कर तुरन्त ही घर की ओर दौड़ी चली गयी।

मेंढक ने उसे पुकारा भी — "रुको, राजकुमारी रुको, अपने वायदे के अनुसार मुझे भी अपने साथ ले लो।" परन्तु राजकुमारी तो यह जा और वह जा।

अगले दिन राजकुमारी जब खाना खाने बैठी तो उसने कुछ अजीब सी आवाज सुनी। उसे लगा जैसे कोई संगमरमर की सीढ़ियों से ऊपर आ रहा है और फिर तुरन्त बाद ही किसी के धीरे से दरवाजा खटखटाने की आवाज सुनायी दी...

दरवाजा खोलो प्यारी राजकुमारी दरवाजा खोलो तुम्हारा प्यार खड़ा है
याद करो हमने तुमसे क्या कहा था उस फव्वारे के साये में जो जंगल में है।

तब राजकुमारी दौड़ कर गयी और उसने दरवाजा खोला। उसके सामने एक मेंढक खड़ा था जिसको वह बिल्कुल ही भूल गयी थी। वह डर गयी और डर के मारे तुरन्त ही दरवाजा बन्द करके अपनी जगह पर आ बैठी।

उसके पिता राजा ने उसको डरा हुआ देख कर उससे पूछा — "क्या बात है बेटी? तुम इतना डरी हुई क्यों हो?"

वह बोली — "पिता जी वहाँ एक गन्दा सा मेंढक है जिसने आज सुबह पानी में से मेरी गेंद बाहर निकाली थी।

मैंने उसे यह सोच कर अपने साथ रहने के लिये कह दिया था कि वह तो कभी पानी से बाहर आ ही नहीं सकता मगर वह तो यहाँ खड़ा है और अन्दर आना चाहता है।"

इसी समय मेंढक ने फिर से दरवाजा खटखटाया और अपनी पहले वाली लाइनें दोहरायीं —

दरवाजा खोलो प्यारी राजकुमारी दरवाजा खोलो तुम्हारा प्यार खड़ा है
याद करो हमने तुमसे क्या कहा था उस फव्वारे के साये में जो जंगल में है

राजा बोला — "बेटी, जब तुमने उससे ऐसा कहा है तो तुम्हें अपना वायदा निभाना चाहिये और उसे अन्दर बुला लेना चाहिये।"

राजकुमारी ने दरवाजा खोल दिया और वह गन्दा मेंढक फुदकता हुआ अन्दर आ गया।

वह राजकुमारी से बोला — "मुझे अपनी पास वाली कुरसी पर बैठने में मेरी मदद करो न।" न चाहते हुए भी राजकुमारी ने उसे अपने पास वाली कुरसी पर बिठा लिया।

जैसे ही राजकुमारी ने उसे अपने पास वाली कुरसी पर बिठाया, वह बोला — "अब तुम अपनी थाली मेरे पास लाओ ताकि मैं भी उसमें से खा सकूँ।"

राजकुमारी को बड़ी घृणा सी हुई कि वह कैसे एक मेंढक को अपने साथ अपनी थाली में खाना खिलाये पर अपने वायदे को ध्यान में रखते हुए उसने चुपचाप अपनी सोने की थाली मेंढक के पास खिसका दी।

जब मेंढक पेट भर खाना खा चुका तो बोला — "अब मैं बहुत थक गया हूँ, तुम मुझे अपने पलंग पर ले चलो, मैं सोऊँगा।"

न इच्छा होते हुए भी राजकुमारी उसे अपने हाथों में उठा कर ऊपर ले गयी और अपने बिछौने में अपने तकिये के ऊपर उसे लिटा दिया जहाँ वह सारी रात सोता रहा। सुबह होते ही वह कूदा और घर से बाहर चला गया।

राजकुमारी ने सोचा कि शायद अब वह चला गया और अब फिर नहीं आयेगा मगर यह उसकी भूल थी क्योंकि अगले दिन शाम को वह फिर आ गया और फिर वैसा ही हुआ जैसा कि पहली शाम को हुआ था।

वह आ कर बोला —

दरवाजा खोलो प्यारी राजकुमारी दरवाजा खोलो तुम्हारा प्यार खड़ा है
याद करो हमने तुमसे क्या कहा था उस फव्वारे के साये में जो जंगल में है

राजकुमारी ने फिर से दरवाजा खोला तो देखा कि वही मेंढक फिर दरवाजे पर खड़ा था। वह फिर अन्दर आ गया और पहली रात की तरह से राजकुमारी के बिस्तर पर सो गया और सुबह तक सोता रहा।

और फिर तीसरी शाम को भी ऐसा ही हुआ। परन्तु अगले दिन सुबह उसे बड़ा आश्चर्य हुआ जब उसने अपने बिछौने पास मेंढक की बजाय एक सुन्दर राजकुमार को खड़े देखा।

तब उस राजकुमार ने उसे बताया कि एक बुरी परी ने उसको शाप दे दिया था जिससे वह मेंढक में बदल गया था और उसे इस रूप में तब तक वहाँ रहना था जब तक कोई राजकुमारी आ कर उसे निकाले नहीं और अपने साथ सुलाये नहीं।

आज तुमने मेरे ऊपर पड़ा यह जादू दूर कर दिया। अब मेरी कोई इच्छा नहीं है सिवाय इसके कि तुम मेरे साथ मेरे पिता के राज्य में चलो जहाँ मैं तुमसे शादी कर सकूँ। मैं तुमसे वायदा करता हूँ कि मैं तुमको जीवन भर प्यार करता रहूँगा।"

राजकुमारी तुरन्त तैयार हो गयी। आठ घोड़ों की शाही सवारी में बैठ कर वे राजकुमार के राज्य चल दिये। वहाँ जा कर उनकी

शादी हो गयी। सारे राज्य में खूब खुशियाँ मनायी गयीं और वे सारी ज़िन्दगी सुख से रहे।

14 मेंढक राजकुमार–2[85]

सूअर राजा जैसी कहानियों की इस दूसरी पुस्तक की यह लोक कथा भी यूरोप महाद्वीप के जर्मनी देश की लोक कथाओं से ली गयी है। यह लोक कथा इससे पहले वाली कहानी "मेंढक राजकुमार" का दूसरा रूप है।

इस कहानी में भी एक राजकुमार पर जादू डाल कर उसको एक मेंढक बना दिया जाता है जो केवल किसी ऐसी लड़की के उससे शादी करने से ही आजाद हो सकता है जो उससे उसकी शक्ल पर न जा कर उसके साथ खाना खाये उसको अपने बिस्तर में सुलाये। और फिर उसे चूमे। उफ़ एक मेंढक को चूमना।

एक बार की बात है कि एक राज्य में बहुत ही सुन्दर राजकुमारी रहती थी। वह एक बहुत बड़े महल में रहती थी जिसमें बहुत सारे फव्वारे और बागीचे थे।

राजकुमारी को बागीचों में घूमना बहुत अच्छा लगता था। वह वहाँ बैठी बहुत देर तक पेड़ पौधों को देखती रहती। जब वह फव्वारे के पास बैठती तो उसमें वह अपनी परछाईं देखती रहती।

वह हमेशा से ही अच्छी नहीं थी इसी लिये उसके साथ खेलने के लिये उसका कोई दोस्त नहीं था। जब वह बाहर खेलती तो बस वह

---

[85] The Frog Prince – a folktale from Germany, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=66
Mike adapted this story from the "Brother's Grimm".

एक सुनहरी गेंद से ही खेलती। वह उसको हवा में उछाल उछाल कर खेलती रहती।

एक बार जब वह राजकुमारी अपनी गेंद को उछाल उछाल कर खेल रही थी तो उसकी गेंद एक तालाब में गिर गयी। उसने जब तालाब में झाँक कर देखा तो उसे केवल अपनी परछाईं ही दिखायी दी गेंद नहीं दिखायी दी।

ऐसा पहली बार हुआ था जब उसको अपनी परछाईं देखना अच्छा नहीं लगा। उसने रोना शुरू कर दिया।

एक कोमल आवाज ने पूछा — "राजकुमारी, तुम क्यों रो रही हो?"

राजकुमारी ने अपने चारों तरफ देखा पर उसे अपने पास तो कोई भी दिखायी नहीं दिया। फिर कौन बोला उससे?

उसने पूछा — "यह कौन बोला मुझसे?"

फिर उसने नीचे देखा तो देखा कि एक मेंढक उसके पैरों के पास बैठा था। उसके मुँह से निकला — "उँह, एक गन्दा बूढ़ा मेंढक।'

मेंढक तुरन्त बोला — "पहली बात तो यह कि मुझे नहीं लगता कि मैं गन्दा हूँ, दूसरी बात यह कि मैं बूढ़ा भी नहीं हूँ। और तीसरी बात यह कि मैंने पूछा कि तुम क्यों रो रही हो?"

राजकुमारी बोली — "मेरी गेंद इस तालाब में गिर गयी है। अगर तुम इस तालाब में से मेरी गेंद निकाल दोगे तो मैं तुमको अपने मोती और जवाहरात दे दूँगी।"

मेंढक बोला — "मैं तुम्हारी गेंद निकाल तो सकता हू पर मुझे तुम्हारे मोती और जवाहरात नहीं चाहिये। मैं तुम्हारे घर में आना चाहता हूँ, मैं तुम्हारी मेज पर बैठ कर तुम्हारे साथ खाना खाना चाहता हूँ तुम्हारी सुन्दर सोने की थाली में से। और फिर मैं तुम्हारे बिस्तर पर सोना चाहता हूँ।"

राजकुमारी ने कुछ बुरा सा मुँह बनाया तो मेंढक फिर बोला — "हाँ और मैं यह भी चाहता हूँ कि तुम मेरा चुम्बन लो। वायदा करो कि तुम यह सब करोगी तभी मैं तुम्हारी सुनहरी गेंद निकाल कर तुमको दूँगा।

राजकुमारी बोली — "ठीक है मैं वायदा करती हूँ।"

उसने यह सोच कर यह वायदा कर दिया कि एक बार अगर वह मेंढक उस तालाब में कूद गया तो वह उसमें से कभी भी नहीं निकल पायेगा और मुझे अपना वायदा पूरा करने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी। पर यह तो हो सकता है कि वह उसकी गेंद निकाल दे।

मेंढक तुरन्त ही उस तालाब में कूद गया और कुछ ही मिनटों में अपने मुँह में गेंद ले कर ऊपर आ गया और उसको कुँए के बाहर राजकुमारी के पास सूखी जमीन पर उछाल कर फेंक दी।

राजकुमारी अपनी गेंद पा कर इतनी खुश थी कि वह उसको उठा कर अपने महल में भाग गयी।

मेंढक पीछे से चिल्लाया — "ओ राजकुमारी, अपना वायदा याद रखना।"

पर राजकुमारी ने तो जैसे सुना ही नहीं। उसको मेंढक से किये गये वायदे को याद रखने की जरूरत भी क्या थी।

अगले दिन जब राजकुमारी खाना खाने बैठी तो किसी ने महल का दरवाजा खटखटाया। पहले तो किसी ने बहुत धीरे से दरवाजा खटखटाया जिसे केवल राजकुमारी ही सुन सकी।

फिर उसके नौकरों ने भी सुना और फिर जल्दी ही वह खटखटाने की आवाज बढ़ गयी कि उसको राजा ने भी सुना –

राजकुमारी, राजकुमारी, सुनो
राजकुमारी, राजकुमारी, अपना वायदा निभाओ
खेलते समय तुम्हारी गेंद खो गयी थी
फिर वह गेंद तुमको वापस दी गयी
ऐसा मत समझो कि मैं तुमको परेशान कर रहा हूँ
वायदा तो वायदा है अपने पिता से पूछ लो

वह मेंढक महल के बाहर दरवाजे पर खड़ा था।

राजा ने अपनी बेटी से पूछा — "यह वायदे के बारे में क्या बात है बेटी? हमको हमेशा अपने वायदे निभाने चाहिये। क्या तुमने इस मेंढक से कोई वायदा किया था?"

राजकुमारी बोली — “पिता जी, खेलते हुए मेरी गेंद तालाब में गिर गयी थी। मैंने उससे केवल वह गेंद निकाल कर देने के लिये ही वायदा किया था। वह एक बहुत ही गन्दा बूढ़ा मेंढक है। किसी मेंढक से किये गये वायदे का क्या निभाना।”

मेंढक बाहर से ही बोला — “पहली बात यह कि मैं गन्दा नहीं हूँ। दूसरी बात यह कि मैं तुमको फिर याद दिला दूँ कि मैं बूढ़ा भी नहीं हूँ। और तीसरी बात यह कि वायदा तो वायदा है चाहे वह किसी से भी किया जाये।”

राजा ने अपनी बेटी से कहा — “बेटी यह मेंढक ठीक कहता है। वायदा तो वायदा है चाहे वह किसी से भी किया जाये। इस मेंढक को महल के अन्दर बुलाओ और अपना वायदा पूरा करो।”

राजकुमारी ने फिर वैसा ही किया जैसा कि उसके पिता ने उससे कहा। उसने महल का दरवाजा खोला और मेंढक कूद कर अन्दर आ गया

वह राजकुमारी से बोला — “बहुत बहुत धन्यवाद। यह पहला वायदा है जो तुमने पूरा किया। तुमने कहा था कि मैं अन्दर आ सकता हूँ और मैं अब यहाँ हूँ।”

मेंढक फिर कूदता हुआ खाने के कमरे में चला गया और बोला — “अब मुझे मेज पर बिठाओ।”

राजकुमारी उसको ना कहने ही वाली थी कि उसने देखा कि उसके पिता उसको देख रहे हैं सो उसने उसको उठा कर अपने पास वाली कुरसी पर बिठा लिया।

मेंढक बोला — "यह तुमने दूसरा वायदा पूरा किया। अब तुम अपनी सोने की थाली मेरी तरफ खिसकाओ ताकि मैं उसमें से खाना खा सकूँ।"

"उफ़।" राजकुमारी बोली और उसने वह थाली मेंढक की तरफ खिसका दी। मेंढक ने उसमें से पेट भर कर खाया और बोला — "अब तुम मुझे अपने कमरे में ले चलो ताकि मैं वहाँ तुम्हारे बिस्तर पर सो सकूँ।"

राजकुमारी बोली — "मेरे बिस्तर में?" वह बहस नहीं करना चाहती थी पर वह जानती थी कि वह क्या कह रही है क्योंकि उसने वायदा किया था।

वह एक राजा की बेटी थी और हालाँकि काफी बिगड़ी हुई थी फिर भी उसको मालूम था कि उसको अपना वायदा तो निभाना ही था।

जैसे ही उसने मेंढक को उठाया तो उसने अपनी नाक दूसरी तरफ कर ली। उसको ले जा कर उसने अपने लाल मखमल के तकिये पर रख दिया। फिर वह उस तकिये को ऊपर ले गयी और उसको ले जा कर अपने बिस्तर पर रख दिया।

खुद वह जा कर एक कुरसी पर बैठ गयी और मेंढक की तरफ देखती रही कि वह मेंढक आगे क्या करता है। मेंढक ने अपनी आँखें बन्द कीं और सो गया। एक मेंढक उसके अपने बिस्तर में? उफ़। वह सारी रात उसने वहीं कुरसी पर सोते हुए गुजार दी।

जब सुबह की रोशनी की पहली किरन खिड़की के रास्ते उसके कमरे में आयी तो मेंढक जाग गया और बिस्तर पर से कूद पड़ा। वह कमरे से बाहर आया, सीढ़ियों से नीचे उतरा और महल के बाहर चला गया।

उसके बाहर जाते ही राजकुमारी की जान में जान आयी कि अब मुझे उसे चूमना नहीं पड़ेगा। पर अगली रात मेंढक फिर महल वापस आया और बोला —

राजकुमारी, राजकुमारी, सुनो
राजकुमारी, राजकुमारी, अपना वायदा निभाओ
खेलते समय तुम्हारी गेंद खो गयी थी
फिर वह गेंद तुमको वापस दी गयी
ऐसा मत समझो कि मैं तुमको परेशान कर रहा हूँ
वायदा तो वायदा है अपने पिता से पूछ लो

मेंढक ने जैसा पहली रात किया वैसे ही दूसरी रात भी किया, और फिर तीसरी रात भी।

इस तरह तीन रात राजकुमारी ने मेंढक को महल में आने दिया, अपने साथ खाने की मेज पर बैठने दिया, अपनी सोने की थाली में

से खाना खाने दिया और अपने बिस्तर में सोने दिया। और तीनों रात वह खुद कुरसी पर सोती रही।

पर वह खुश थी कि अपना वायदा रखने के लिये उसे मेंढक को कम से कम चूमना नहीं पड़ा।

लेकिन तीसरी रात राजकुमारी ने एक अजीब सा सपना देखा। उसने देखा कि मेंढक उससे बातें कर रहा है। सपने में उसने मेंढक को यह कहते हुए सुना कि वह सचमुच में एक राजकुमार था और एक बुरी परी के शाप ने उसको मेंढक में बदल दिया था।

परी ने मेंढक से कहा कि जब वह किसी राजकुमारी के बिस्तर पर तीन रात सोयेगा और वह राजकुमारी उसको चूमेगी तब वह फिर से राजकुमार में बदल जायेगा।

यह सपना देख कर राजकुमारी की ऑख खुल गयी तब उसको लगा कि वह तो सपना देख रही थी। उसने इधर उधर देखा पर वह ठंडा मेंढक अभी भी उसके बिस्तर पर बेखबर पड़ा सो रहा था।

फिर वह अपने सपने के बारे में सोचने लगी। उसने अपने वायदे के बारे में भी सोचा। उसे याद आया कि उसने मेंढक से उसे चूमने का भी वायदा किया है।

वह अपनी कुरसी से उठी और अपने बिस्तर के ऊपर सोते हुए मेंढक के पास गयी। उसने अपनी ऑखें बन्द कीं और उस मेंढक के माथे पर उसको चूम लिया।

जैसे ही उसके होठों ने मेंढक को छुआ वह मेंढक तो सचमुच में ही राजकुमार बन गया। उसने अपनी आँखें समय से खोल ली थीं जिससे वह मेंढक को राजकुमार के रूप में बदलते देख सकी।

उसके बाद राजकुमार ने आँखें खोलीं तो उसने देखा कि राजकुमारी उसके ऊपर झुकी खड़ी है। वह बोला — "तुमने अपना वह तीसरा वायदा भी निभाया हालाँकि वह वायदा तुमने एक मेंढक से किया था।"

राजकुमार सुन्दर था। राजकुमारी को अपनी परछाईं की तरफ देखने की बजाय राजकुमार की तरफ देखना ज़्यादा अच्छा लग रहा था।

राजकुमार ने राजकुमारी से पूछा — "क्या मैं तुम्हारे पिता से शादी के लिये तुम्हारा हाथ माँग सकता हूँ? अगर वह तुमको मुझसे शादी करने की इजाज़त दे देंगे तो मैं तुमको अपने पिता के राज्य ले जाऊँगा जहाँ मैं तुमसे शादी कर लूँगा और तुम्हें तब तक प्यार करूँगा जब तक हम ज़िन्दा रहेंगे।

यह सुन कर राजकुमारी मुस्कुरा दी और तुरन्त ही उसका जवाब दे दिया। उसने भी उससे शादी करने और उसको ज़िन्दगी भर प्यार करने का वायदा किया।

उसने यह भी याद रखा कि वायदा वायदा होता है, उसको अवश्य ही निभाना चाहिये चाहे वह किसी से भी किया गया हो।

15 शापित मेंढक[86]

एक बार की बात है कि कहीं एक सौदागर रहता था जिसके तीन बेटियाँ थीं। उसकी पत्नी भगवान को प्यारी हो गयी थी। एक बार उसने समुद्र पार विदेश जाने का विचार किया ताकि वह वहाँ से कुछ सोना और दूसरी कीमती चीज़ें ला सके।

उसके जाने के समय उसकी बेटियाँ रोने लगीं तो उसने उनको समझाते हुए कहा — "रोओ नहीं। मैं तुम्हारे लिये बहुत सुन्दर सुन्दर चीज़ें लाऊँगा। बताओ मैं तुम्हारे लिये क्या ले कर आऊँ।"

उसकी सबसे बड़ी बेटी बोली — "पिता जी मेरे लिये एक सिल्क की पोशाक ले कर आना जो तीन तरह की सिल्क से बनी हुई हो।" उसकी दूसरी बेटी ने एक पंखों वाले टोप की फरमायश की जिसमें तीन तरह के पंख लगे हों।

उसकी सबसे छोटी बेटी बोली — "मेरे लिये पिता जी एक गुलाब का फूल ले कर आइयेगा जिसमें तीन रंग हों।"

सौदागर ने तीनों से उनकी पसन्द की चीज़ें लाने का वायदा किया और अपनी बेटियों को चूम कर वहाँ से चला गया।

---

[86] The Enchanted Frog – a folktale from Germany, Europe. Taken from the Book "Der verwunschene Frosche". Edited and Translated by DL Ashliman. Taken from the Web Site: http://www.pitt.edu/~dash/frog.html#colshorn

जब वह विदेश पहुँचा तो उसने एक पोशाक बनवायी जिसमें तीन तरह की सिल्क लगी हुई थीं। एक टोप खरीदा जिसमें तीन तरह के पंख लगे हुए थे। उसके ये दोनों काम तो जल्दी हो गये।

फिर उसने सारे देश में कहलवाया कि अगर कहीं कोई तीन रंग का गुलाब हो तो वह उसको अपनी सबसे छोटी बेटी के लिये चाहिये। पर सब खाली हाथ लौट आये।

हालाँकि सौदागर ने उसके लिये काफी पैसे देने के लिये भी कहा था और वहाँ पर बहुत सारे गुलाब थे भी पर तीन रंग का गुलाब उन्हें कहीं नहीं मिला। दुखी हो कर वह घर लौट पड़ा और अपनी सारी यात्रा भर वह दुखी ही रहा।

समुद्र पार करके जब वह इस पार आया तो उसको एक बागीचा दिखायी दे गया जिसमें केवल गुलाब ही गुलाब लगा हुआ था। क्योंकि उसमें कोई और फूल ही नहीं था।

वह उसके अन्दर चला गया और चारों तरफ देखने लगा कि कहीं उसको कोई तीन रंग का गुलाब मिल जाये। तो लो एक पतली सी झाड़ी पर एक तीन रंग का गुलाब खिला हुआ था। उसको देख कर वह बहुत खुश हो गया और आगे बढ़ कर उसने उसे तोड़ लिया।

जैसे ही वह वहाँ से लौट रहा था कि जैसे किसी जादू के ज़ोर से वह वहीं जमा का जमा रह गया। वह हिल ही नहीं सका। उसने

अपने पीछे एक आवाज सुनी — “तुम्हें मेरे बागीचे में से क्या चाहिये?”

उसने पीछे मुड़ कर देखा तो देखा कि वहीं पास के एक तालाब के किनारे चमकदार ऑखों वाला एक बड़ा सा मेंढक बैठा हुआ था। वह आगे बोला — “तुमने मेरा प्रिय गुलाब तोड़ा है। इसके बदले में या तो तुम्हें अपनी ज़िन्दगी देनी पड़ेगी या फिर अपनी सबसे छोटी बेटी की शादी मुझसे कर दो।”

यह सुन कर सौदागर तो डर गया। उसने उससे बहुत प्रार्थना की बहुत मिन्नतें कीं पर सब बेकार। आखिर वह अपनी सबसे छोटी बेटी की उस बदसूरत मेंढक से शादी करने का वायदा करके वहॉ से लौट पड़ा। अब वह वहॉ से लौट सकता था।

जब वह जाने लगा तो मेंढक चिल्लाया — “आज से सातवें दिन मैं अपनी पत्नी को लेने के लिये आऊँगा।”

घर लौट कर सौदागर ने बड़े भारी दिल से अपनी सबसे छोटी बेटी को वह तीन रंगों वाला गुलाब दिया और उसे बताया कि क्या हुआ था।

जब सातवॉ दिन आया तो वह लड़की डर के मारे पलंग के नीचे छिप गयी क्योंकि वह उस मेंढक के साथ बिल्कुल जाना नहीं चाहती थी। दिन के बारह बजे सौदागर के घर के दरवाजे पर एक शाही सवारी आ कर रुकी।

मेंढक ने दुलहिन को लाने के लिये अपने नौकर घर में अन्दर भेजे। वे तुरन्त ही घर के सोने वाले कमरे में गये और रोती चिल्लाती लड़की को उसके पलंग के नीचे से निकाल लाये और उसको ला कर बाहर गाड़ी में बिठा दिया।

घोड़े तुरन्त ही कूद कर चल दिये और वे सब कुछ पल में ही अपने गुलाब के बागीचे में थे।

बागीचे के बीच में तालाब के ठीक पीछे एक छोटा सा घर था। वे दुलहिन को उस घर में ले गये और उसको एक मुलायम से बिस्तर पर लिटा दिया। मेंढक अपने पानी में कूद गया।

रात हो गयी। जब वह लड़की अपनी बेहोशी से कुछ होश में आयी तो उसने सुना कि बाहर मेंढक गा रहे थे। और जब आधी रात हुई तो उसके सोने के कमरे का दरवाजा खुला तो उसने देखा कि मेंढक बहुत ही मीठा गाना गाता हुआ अन्दर चला आ रहा है।

अन्दर आ कर वह उसके बिस्तर में कूद गया। गाना गाते गाते उसने लड़की को छुआ तो उसने उसको अपने बिस्तर में लिटा कर उसको चादर ओढ़ा कर लिटा दिया।

अगली सुबह जब उसने अपनी आँखें खोलीं तो उसने देखा कि वहाँ तो बदसूरत भद्दे मेंढक की जगह एक बहुत सुन्दर राजकुमार सो रहा है।

राजकुमार ने उसको दिल से धन्यवाद दिया और कहा — “तुमने मुझे नयी ज़िन्दगी दी है तुम ही मेरी पत्नी हो।” और फिर वे बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहे।

16 तीन पंख[87]

सूअर राजा जैसी कहानियों के इस दूसरे संग्रह में यह कहानी यूरोप महाद्वीप के ब्रिटेन देश से कही सुनी जाती है।

एक बार की बात है कि एक लड़की थी जिसकी शादी हो गयी थी पर उसने अपने पति को कभी देखा नहीं था। और ऐसा इसलिये था क्योंकि वह केवल रात को ही घर आता था और उस समय उनके घर में रोशनी नहीं होती थी।

लड़की को यह कुछ अजीब सा लगता था। उसकी दोस्तों ने भी उससे कहा कि लगता है तेरे पति में कुछ गड़बड़ है। लगता है कि उसका शरीर कुछ बिगड़ा हुआ है इसी लिये वह तुझे अपने आपको दिखाना नहीं चाहता।

पर एक रात जब वह घर आया तो अचानक उस लड़की ने मोमबत्ती जला दी और उसकी रोशनी में उसे देखा। वह तो इतना सुन्दर था कि कोई भी लड़की उसको चाहने लगे।

पर वह उसको ठीक से देख भी नहीं पायी थी कि वह चिड़िया में बदलने लगा। वह बोला — "अब तुमने मुझे देख लिया बस अब तुम मुझे इस रूप में कभी नहीं देख पाओगी जब तक कि तुम सात

[87] Three Feathers – a folktale from Britain, Europe. Taken from the Book "More English Fairy Tales". Edited by Joseph Jacobs. NY: GP Putnam's Sons. nd. Taken from the Web Site: http://www.surlalunefairytales.com/eastsunwestmoon/stories/3feather.html .
[My Note: This story is very similar to the story "The Man Who Came Out Only at Night" told and heard in Italy given in this book.]

साल और एक दिन तक मेरी सेवा न कर लो ताकि मैं फिर से आदमी बन जाऊँ।"

फिर उसने उससे अपने एक तरफ से तीन पंख निकालने के लिये कहा और कहा कि वह उनसे जब भी कभी कुछ भी माँगेगी उसको मिल जायेगा। फिर उसने उसको सात साल और एक दिन के लिये एक बड़े से घर में कपड़े धोने के लिये छोड़ दिया और खुद वह वहाँ से उड़ गया।

अब वह लड़की उन पंखों को लेती और कहती "मेरे इन तीन पंखों की ताकत से ताँबा जल जाये।"

बस उसके यह कहते ही मालकिन के कपड़े धुल जाते निचुड़ जाते सूख जाते और तह हो कर आलमारी में रख जाते। इसके बाद उसको किसी बात की फिक करने की जरूरत ही नहीं रहती।

पंख आराम करते और मालकिन उसके लिये कपड़ों का एक और ढेर तैयार कर देती।

एक बार मालकिन के बटलर को अपने घर के लिये कपड़े धोने वाली की जरूरत थी और उसको यह पता चल गया था कि मालकिन की कपड़े धोने वाली एक बहुत अच्छी कपड़े धोने वाली थी। तो एक दिन उसने लड़की से कहा कि हालाँकि उसको उससे पहले ही कह देना चाहिये था पर वह उससे कह नहीं सका था क्योंकि वह उसके ऊपर बहुत सारा काम लादना नहीं चाहता था।

लड़की ने कहा — "तो उसमें ऐसी क्या बात थी क्योंकि मैं भी तो मालकिन की एक नौकर ही हूँ।"

यह सुन कर बटलर को कुछ तसल्ली हुई तो उसने आगे कहा कि उसके मालिक के पास उसके सत्तर पौंड थे तो क्या वह उससे शादी करना पसन्द करेगी।

लड़की ने कहा कि वह उसे पैसा ला दे। इस पर बटलर ने मालिक से पैसा माँगा और ला कर उसे दे दिया। पर जब वे सीढ़ियाँ चढ़ कर ऊपर जा रहे थे तो वह बोली — "ओह जौन। मुझे वापस जाना चाहिये क्योंकि मैं अपने किवाड़ खुले छोड़ आयी हूँ और वे रात भर खुलते बन्द होते रहेंगे।"

बटलर बोला — "तुम चिन्ता न करो। मैं उन्हें देख लेता हूँ।" कह कर वह वहाँ से वापिस चला गया। उधर उस लड़की ने अपने पंख निकाले और बोली — "इन पंखों की ताकत से वे दरवाजे सुबह तक खुलते और बन्द होते रहें और जौन उनको बन्द न कर सके बल्कि उसकी उँगलियाँ भी उससे चिपकी रहें।"

और फिर ऐसा ही हुआ। बटलर ने कितनी कोशिश की पर न तो वह दरवाजा बन्द कर सका और न उस पर से अपना हाथ ही हटा सका। यह देख कर वह बहुत नाराज हुआ पर कर कुछ नहीं सका। और यह बात वह किसी से कह भी नहीं सका क्योंकि इस बात को सुन कर लोग उस पर हँसते सो किसी को पता भी नहीं चला कि उसके साथ ऐसा हुआ।

कुछ समय बाद मालिक के गाड़ीवान[88] ने उसको देखना शुरू किया तो लड़की ने देखा कि उसके उसके मालिक के पास चालीस पौंड थे। गाड़ीवान ने कहा कि अगर वह वे चालीस पौंड ले कर उसके पास आ जाये।

लड़की ने कहा "ठीक है।" जब वे चालीस पौंड उसके पास आ गये तो उसने उनको अपने एप्रन की जेब में रख लिया और उसके साथ चल दी। जब वे खुशी खुशी जा रहे थे तो लड़की ने कहा "अरे मेरे कपड़े तो बाहर ही रह गये। मुझे वापस जा कर उन्हें अन्दर रख कर आना चाहिये।"

तो विलियम बोला — "तुम यहीं रुको। रात बहुत ठंडी है। तुम तो रास्ते में ही मर जाओगी। मैं तुम्हारा यह काम कर के अभी आता हूँ।"

सो लड़की ने अपने पंखों को निकालने के लिये काफी देर तक इन्तजार किया फिर उनको निकाल कर वह बोली — "मेरे इन तीन पंखों की ताकत से कपड़े सुबह तक पिटते रहें और सुबह तक विलियम उनसे न तो अपना हाथ ही न हटा सके और न वह उन्हें इकट्ठा ही कर सके।" कह कर वह सोने चली गयी। फिर ऐसा ही हुआ और गाड़ीवान उनसे सुबह तक अपना हाथ ही न हटा सका।

गाड़ीवान भी किसी से अपनी हँसी उड़वाना नहीं चाहता था सो उसने भी यह बात किसी को नहीं बतायी।

---

[88] Translated for the word "Coachman" who drives a coach.

कुछ समय बाद गाड़ी के पीछे खड़ा होने वाला आदमी[89] आया और उससे बोला — “मैं मालिक के पास चार साल से काम कर रहा हूँ। मैंने कुछ पैसे जमा कर लिये हैं। तुम भी यहाँ तीन साल से काम कर रही हो तो तुमने भी कुछ पैसा तो जमा कर ही लिया होगा। क्यों न हम मिल कर कहीं और अपना घर बसा लें या फिर यहाँ भी अपनी नौकरी जारी रख सकते हैं जैसा तुम चाहो।”

सो उसने उससे भी उसकी बचत लाने के लिये कहा जैसे कि उसने दूसरों से मँगवायी थी। पैसे लेने के कुछ देर बाद उसने बेहोश होने का बहाना किया और उससे कहा — “ओह जेम्स मुझे न जाने क्या हो रहा है। मुझे कुछ अजीब सा महसूस हो रहा है। मेहरबानी कर के तुम ज़रा नीचे जा कर नीचे वाले वाले कमरे में से मेरे लिये थोड़ी सी शराब ले आओ।”

वह बेचारा नीचे भागा भागा गया। उसके जाने के तुरन्त बाद ही लड़की ने अपने तीनों पंख निकाले और बोली — “मेरे तीनों पखों की ताकत से शराब की बोतलें आपस में टकराती रहें और उनमें से शराब छलकती रहे और सुबह तक जेम्स उनमें से किसी भी बोतल में से वह शराब न ढाल सके।”

और फिर ऐसा ही हुआ। जेम्स ने कितनी भी कोशिश कर ली पर वह उनमें से किसी भी बोतल में से थोड़ी सी भी शराब गिलास में नहीं पलट सका। वहाँ की सारी बोतलें आपस में भिड़ती रहीं और

[89] Translated for the word “Footman” who stands bhind the coach.

उनमें से शराब छलकती रही। और इसके ऊपर से घर का मालिक यह देखने के लिये नीचे आ गया कि वहाँ क्या हो रहा था।

जेम्स बोला कि उसको कुछ पता ही नहीं कि वहाँ क्या हो रहा था। कपड़े धोने वाली ने उससे थोड़ी सी शराब मँगवायी थी पर वह तो वहाँ से एक बूँद शराब भी नहीं ले सका।

उसके हाथ अपने आप ही हिलते जा रहे थे और उसकी वजह से शराब भी बिखरती जा रही थी। वह उनसे हाथ हटाने की कोशिश भी कर रहा था पर उसका हाथ वहाँ से हट ही नहीं पा रहा था।

यह देख कर मालिक बहुत गुस्सा हुआ। वह अपनी पत्नी के पास गया और उससे बोला — "यहाँ के आदमियों को क्या हो गया है। जब तक तुम्हारी यह कपड़े धोने वाली यहाँ नहीं आयी थी तब तक तो ये सब ठीक थे।उसके आने के बाद कुछ तो हुआ है। उन्होंने अपना सारा पैसा भी ले लिया है और उसके बाद भी वे यहाँ से अपना काम छोड़ कर नहीं गये हैं। यह क्या हो सकता है।"

उसकी पत्नी बोली कि वह अपनी कपड़े धोने वाली के बारे में कुछ सुनना नहीं चाहती थी क्योंकि वह उसके नौकरों में उसकी सबसे अच्छी नौकरानी थी। यहाँ तक वह अकेली ही उन सब से ज़्यादा अच्छी थी।

इस तरह से दिन गुजरते रहे कि एक दिन वह लड़की कमरे के दरवाजे में खड़ी हुई थी। उसने सुना कि गाड़ीवान ने गाड़ी के पीछे

की तरफ खड़े रहने वाले आदमी से कहा — "जेम्स क्या तुम्हें मालूम है कि उस लड़की ने मेरे साथ कैसा बरताव किया?" और तब विलियम ने उसे अपनी कपड़ों वाली कहानी सुनायी।

इसी समय बटलर वहाँ आ गया। वह बोला — "यह तो उसके मुकाबले में कुछ भी नहीं जो उसने मेरे साथ किया।" और उसने उनको रात भर अपनी दरवाजे के खुलते और बन्द रहते की कहानी सुनायी।

इत्तफाक से उसी समय मालिक भी वहाँ आ गया तो लड़की ने अपने तीनों पंख निकाल कर कहा "मेरे तीनों पंखों की ताकत से मालिक और उसके नौकर एक दूसरे को आपस में मारते पीटते रहें और फिर वे तालाब में कूद जायें।"

और फिर ऐसा ही हुआ। पहले तो वे तीनों आपस में एक दूसरे को मारते पीटते रहे और जब मालिक ऊपर आया और उनको लड़ने से रुक जाने के लिये कहा तो उन सबकी बात तो सुनायी दी पर मालिक की बात किसी ने नहीं सुनी। बाद में लड़ते भिड़ते वे सब तालाब में कूद गये।

जब लड़की ने देखा कि अब काफी हो गया तो उसने उन पर से अपना जादू हटा लिया तो मालिक ने उससे पूछा कि उन लोगों में किस बात पर लड़ाई शरू हुई थी क्योंकि उसने ऐसी तो कोई बात सुनी नहीं थी जिस पर वे इतना लड़ते भिड़ते।

लड़की बोली — “वे आपस में तो लड़ ही रहे थे वे तो मुझे भी मार पीट देते अगर आप बीच में न आ गये होते।”

सो उस समय यह बात टल गयी और वह अपने पंखों की ताकत से सारे समय सबसे अच्छी कपड़े धोने वाली बनी रही।

जब सात साल और एक दिन बीत गया तो उसका चिड़ा पति जिसको उसके बारे में सब कुछ पता था उसके पास आ गया और आदमी की शक्ल में आ गया।

उसने लड़की की मालकिन से कहा कि वह अब उसकी वहाँ से नौकरी छुड़ाने और उसको वहाँ से ले जाने के लिये आया है। अब वह खुद कई नौकर रखने लायक है। पर उसने उसको पंखों के बारे में कुछ नहीं बताया। लड़की से उसने उन तीनों की बचत जो उसने उनसे ली थीं वापस करने के लिये कहा।

लौटते समय उसने लड़की से कहा यह तो तुमने इन चारों के साथ बड़ा अजीब सा खेल खेला पर अब तो तुम एक ऐसी जगह जा रही हो जहाँ बहुत सारी चीज़ें हैं अब उनको तुम उनके हाल पर छोड़ दो।

यह कह कर वहाँ से वे फिर अपने किले चले गये जहाँ वे बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहे।

17 लम्बी पूँछ वाला चूहा[90]

सूअर राजा जैसी कहानियों की इस दूसरी पुस्तक की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

इस कहानी में एक राजकुमार पर जादू डाल कर उसको एक चूहा बना दिया जाता है और वह चूहे से तभी अपने आदमी के रूप में आ सकता है जब कोई लड़की उससे शादी कर ले। अब चूहे से शादी कौन करे? पर शादी तो उसकी होनी ही है नहीं तो वह आदमी के रूप में कैसे आयेगा? तो लो पढ़ो चूहे की यह कहानी।

एक बार एक राजा था जिसके एक बहुत ही सुन्दर बेटी थी। जब वह शादी के लायक हुई तो बहुत सारे राजा और राजकुमारों ने उससे शादी करने की इच्छा प्रगट की।

पर उसके पिता ने उसको किसी को भी देने से मना कर दिया क्योंकि हर रात वह एक आवाज सुन कर जाग जाता था — “तुम अपनी बेटी की शादी किसी से मत करना, तुम अपनी बेटी की शादी किसी से मत करना।” और वह अपनी बेटी की शादी करने से रुक जाता।

वह बेचारी लड़की रोज शीशे में अपने आपको देखती और पूछती — “मैं शादी क्यों नहीं कर सकती मैं तो इतनी सुन्दर हूँ।”

---

[90] The Mouse With the Long Tail – a folktale from Italy from its Province of Caltanissetta. Adapted from the book “Italian Folktales: selected and retold by Italo Calvino”. 1980. Hindi translation of 125 tales of its 200 tales is available from hindifolktales@gmail.com

वह यह सवाल रोज पूछती पर उसको अपने इस सवाल का कोई जवाब नहीं मिलता और वह इस बारे में सोचती ही रह जाती।

एक दिन जब वे सब शाम का खाना खा रहे थे तो उसने अपने पिता से कहा — "पिता जी मैं शादी क्यों नहीं कर सकती मैं इतनी सुन्दर तो हूँ। इसलिये अब आप मेरी बात सुनिये, मैं आपको दो दिन का समय देती हूँ। अगर आप दो दिन के अन्दर अन्दर किसी ऐसे आदमी को नहीं ढूँढ पाते जिससे आप मेरी शादी कर सकें तो मैं अपनी जान दे दूँगी।"

राजा बोला — "बेटी, ऐसा नहीं कहते। पर अगर तुम ऐसा कह रही हो तो तुम एक काम करो कि तुम अपने सबसे अच्छे कपड़े पहनो और खिड़की पर खड़ी हो जाओ। फिर जो भी सबसे पहला आदमी या जानवर सड़क से गुजरेगा वही तुम्हारा पति होगा। बस।"

सो अगले दिन उस लड़की ने अपने सबसे अच्छे कपड़े पहने और जा कर खिड़की पर खड़ी हो गयी।

अब ज़रा सोचो कि सबसे पहले सड़क पर से कौन गुजरा? एक छोटा सा चूहा जिसकी एक मील लम्बी पूँछ थी और जिसकी बू ऊपर आसमान तक पहुँच रही थी।

चूहा रुका और ऊपर खिड़की में खड़ी राजकुमारी की तरफ देखा पर जैसे ही राजकुमारी ने चूहे की तरफ देखा तो वह तो चिल्ला कर

भागी — “पिता जी पिता जी। यह आपने मेरे साथ क्या किया? यह पहला जाने वाला तो एक जानवर निकला और वह भी एक चूहा। मुझे पूरा यकीन है कि आप मेरी शादी किसी चूहे से नहीं करना चाहते।”

उसका पिता कमरे में हाथ बाँधे खड़ा था। वह बोला — “मैं यही चाहता हूँ मेरी बेटी। जो मैंने कहा है वही होगा। तुमको सड़क पर पहला आदमी या जानवर जो कोई भी गुजरेगा उसी से शादी करनी पड़ेगी। फिर चाहे वह कोई भी हो।”

तुरन्त ही उसने सब राजाओं, राजकुमारों और दरबारियों को अपनी बेटी की शादी की शानदार दावत का न्यौता भेज दिया। सारे मेहमान बड़ी शानो शौकत से दावत में आये और आ कर अपनी अपनी जगहों पर बैठ गये पर दुलहे का अभी तक कोई पता नहीं था।

तभी दरवाजे पर कुछ खुरचने की सी आवाज सुनायी पड़ी। वहाँ और कौन हो सकता था सिवाय उस चूहे के जिसकी लम्बी पूँछ दूर दूर तक महक रही थी। एक दासी ने उसके लिये दरवाजा खोला और उससे पूछा — “तुमको क्या चाहिये?”

चूहा बोला — “तुम मेरे लिये राजा से जा कर कहो कि जो चूहा राजकुमारी से शादी करना चाहता है वह आया है।”

दासी ने यह रसोइये से कहा और रसोइये ने जा कर यह बात राजा से कही कि जो चूहा राजकुमारी से शादी करना चाहता है वह आया है।

राजा बोला — "उनको इज़्ज़त के साथ अन्दर ले आओ।"

चूहा तेज़ी से फर्श पर दौड़ता हुआ अन्दर घुस आया और राजकुमारी की कुरसी के हत्थे पर आ कर बैठ गया। राजकुमारी ने अपने बराबर में एक चूहे को बैठा देख कर शरम और नफरत से अपना मुँह दूसरी तरफ फेर लिया।

पर चूहे ने ऐसा दिखाया कि जैसे उसने कुछ देखा ही न हो। जितना राजकुमारी उससे दूर खिसकती जाती थी चूहा उसके उतना ही पास खिसकता जाता था।

तब राजा ने वहाँ बैठे सब लोगों को अपनी कहानी सुनायी तो वहाँ बैठे सारे लोग राजा ने जो कुछ किया था उससे राजी हो गये। वे सब मुस्कुराये और बोले — "हाँ ठीक है। चूहा ही राजकुमारी का पति होना चाहिये।" और यह कह कर सब हँस पड़े और हँसते हँसते चूहे की तरफ देखने लगे।

यह देख कर वह चूहा राजा को एक तरफ ले जा कर बोला — "मैजेस्टी, सुनिये। या तो आप इन लोगों से यह कह दीजिये कि ये लोग मेरा मजाक न उड़ायें नहीं तो इसका नतीजा इनको भुगतना पड़ेगा।" चूहे ने यह सब इतने गुस्से से कहा कि राजा को उसकी बात माननी ही पड़ी।

उसके बाद राजा अपनी कुरसी पर आ कर बैठ गया और सब लोगों से कहा कि वे सब हँसना बन्द करें और उसके होने वाले दामाद[91] की ठीक से इज़्ज़त करें।

खाना आया तो चूहा तो बहुत छोटा था और वह एक हत्थे वाली कुरसी पर बैठा था इसलिये वह मेज पर रखे खाने तक नहीं पहुँच सकता था। इसलिये उसके नीचे एक ऊँची सी गद्दी रखी गयी पर चूहे ने देखा कि वह भी उसके लिये खाने तक पहुँचने के लिये काफी नहीं थी सो वह उठा और मेज के बीच में जा कर बैठ गया।

वहाँ से वह सब लोगों की तरफ देख कर बोला — "कोई ऐतराज?"

इससे पहले कि कोई और बोले राजा बोले — "नहीं नहीं। किसी को कोई ऐतराज नहीं है।"

पर घर आये हुए मेहमानों में एक स्त्री ऐसी थी जो चूहे को अपनी प्लेट में से खाते और अपनी बू वाली लम्बी पूँछ को अपने पास बैठे आदमी की प्लेट के ऊपर से ले जाते देख कर चुप नहीं रह सकी।

जब चूहे ने उस स्त्री की प्लेट में से खाना खत्म कर लिया तो वह दूसरे मेहमानों की तरफ चला तो वह बोली — "उफ़ कितना गन्दा। किसने इतनी गन्दी चीज़ देखी होगी। मुझे तो अपनी आँखों

[91] Son-in-law – daughter's husband

पर विश्वास ही नहीं हो रहा कि मैं इतनी गन्दी चीज़ एक राजा की खाने की मेज पर देख रही हूँ।"

यह सुन कर चूहे की मूँछें हिलीं, उसने अपनी ऑखें उस स्त्री की ऑखों से मिलायीं और अपनी पूँछ मेज पर फटकारते हुए ऊपर नीचे कूदने लगा।

उसके इस कूदने में जिस किसी चीज़ को भी उसकी पूँछ ने छुआ वही चीज़ वहाँ से गायब हो गयी – सूप के कटोरे, फलों के कटोरे, प्लेट, चम्मच, छुरी, काँटे और फिर एक एक कर के मेहमान और उसके बाद मेज और महल।

बस वहाँ रह गया तो केवल एक उजड़ा हुआ मैदान और उसमें अकेली खड़ी राजकुमारी। वह चूहा खुद भी वहाँ से गायब हो चुका था।

वहाँ इतने बड़े मैदान में अपने को अकेली देख कर राजकुमारी बोली — "अफसोस ओ मेरे चूहे, तुमसे मेरी नफरत अब तुमको पाने की इच्छा में बदल गयी है।"

उसने इन शब्दों को एक बार फिर बोला और वहाँ से फिर पैदल ही चल दी। वह कहाँ जा रही थी और कहाँ जायेगी इसका उसे कुछ पता ही नहीं था।

चलते चलते उसको एक साधु मिला तो उसने राजकुमारी से पूछा — "बेटी, तुम यहाँ इस उजाड़ जगह में क्या कर रही हो?

भगवान तुम्हारी सहायता करे अगर तुमको यहाँ कोई शेर या जादूगरनी मिल जाये तो?”

राजकुमारी बोली — “मेहरबानी कर के ऐसी बातें मत कीजिये। मुझे तो केवल अपना चूहा चाहिये। पहले मैं उससे नफरत करती थी पर अब मुझे वह चाहिये।”

साधु बोला — “बेटी, मुझे नहीं मालूम कि मैं तुमसे क्या कहूँ पर तुम चलती रहो जब तक तुमको मुझसे कोई ज़्यादा बूढ़ा साधु न मिल जाये। शायद वह तुमको कोई सलाह दे पाये।”

सो राजकुमारी चलती रही और चलती रही और बस यही कहती रही — “अफसोस ओ मेरे चूहे, तुमसे मेरी नफरत अब तुमको पाने की इच्छा में बदल गयी है।”

चलते चलते उसको एक और साधु मिला। उसने उस साधु से भी वही कहा तो वह साधु बोला — “तुम जमीन में एक गड्ढा खोदो और उसमें बैठ जाओ तब देखो कि क्या होता है।”

अब राजकुमारी के पास गड्ढा खोदने के लिये तो वहाँ कुछ था नहीं सो उस बेचारी ने अपने बालों में से एक बालों में लगाने वाली पिन निकाली और उसी से गड्ढा खोदने लगी और तब तक खोदती रही जब तक कि वह गड्ढा इतना बड़ा नहीं हो गया कि वह उसमें खुद बैठ सकती।

जब गड्ढा खुद गया तो वह उसमें बैठ गयी। बैठते ही वह एक अँधेरी और बहुत बड़ी गुफा में निकल आयी। “अब पता नहीं

यह गुफा मुझे कहाँ ले जायेगी।" कहते हुए वह उस गुफा में चल दी।

गुफा में बहुत सारे जाले लगे हुए थे जो उसके पैरों में लिपटे जा रहे थे। वह जितना ज़्यादा उनको हटाती थी उतना ही ज़्यादा वे उसके पैरों में लिपटते जाते थे।

उस गुफा में एक दिन चलने के बाद उसको पानी की आवाज सुनायी दी। आगे चल कर उसको एक तालाब दिखायी दिया जिसमें बहुत सारी मछलियाँ थीं।

उसने अपना एक पैर उस तालाब में रखा पर वह उसमें बहुत आगे तक नहीं जा सकी क्योंकि वह तालाब बहुत गहरा था। वह अब पीछे गड्ढे के लिये भी नहीं जा सकती थी क्योंकि वह गड्ढा तो उसके गुफा में आते ही बन्द हो गया था।

उसने फिर दोहराया — "अफसोस ओ मेरे चूहे, तुमसे मेरी नफरत अब तुमको पाने की इच्छा में बदल गयी है।"

इस पर उस तालाब का पानी ऊपर उठना शुरू हो गया। वहाँ से बच निकलने की कोई जगह नहीं थी सो वह उस तालाब में कूद पड़ी। जब वह पानी में थी तो उसने देखा कि वह पानी में नहीं थी बल्कि वह तो एक बड़े से महल में खड़ी थी।

उस महल का पहला कमरा क्रिस्टल[92] का बना था। दूसरा कमरा मखमल का था। और तीसरा कमरा पूरा सितारों[93] का बना था। इस तरह वह उस महल के कमरों में घूमती रही। सब कमरों में कीमती कालीन बिछे हुए थे और सब कमरों में चमकीले लैम्प जल रहे थे।

जितनी देर वह उस महल में घूमती रही वह दोहराती ही रही — "अफसोस ओ मेरे चूहे, तुमसे मेरी नफरत अब तुमको पाने की इच्छा में बदल गयी है।"

फिर वह एक ऐसी जगह आ गयी जहाँ एक बहुत बढ़िया खाने की मेज लगी हुई थी। वह कई दिनों की भूखी थी सो वह उस मेज पर बैठ गयी और पेट भर खाना खाया।

फिर वह एक सोने वाले कमरे में चली गयी। वह जैसे ही पलंग पर लेटी उसको तुरन्त ही नींद आ गयी और वह गहरी नींद सो गयी।

रात को पता नहीं कब उसने कुछ आवाज सुनी जो उसे लगा कि वह आवाज किसी चूहे की पूँछ के इधर उधर होने से हुई थी। उसने अपनी आँख खोली पर वहाँ घुप अँधेरा होने की वजह से उसे

[92] Crystal
[93] Translated for the word "Sequins" – shining disks with a hole in its center to decorate clothes. See their picture above.

कुछ दिखायी तो नहीं दिया पर चूहे के कमरे में इधर उधर घूमने की आवाज अभी भी आ रही थी।

फिर उसको लगा कि कोई चूहा उसके पलंग पर चढ़ा और उसकी ओढ़ने वाली चादर के अन्दर आ गया। वह उसका चेहरा सहलाने लगा था। उसके मुँह से चूहे की छोटी छोटी चीं चीं की आवाज निकल रही थी।

राजकुमारी की हिम्मत नहीं हो रही थी कि वह कुछ बोले। बस वह चुपचाप काँपती सी बिस्तर पर एक कोने में सिकुड़ी पड़ी रही।

अगली सुबह जब वह उठी तो वह उस महल में फिर से घूमी पर वहाँ तो कोई नहीं था। उस रात को भी खाने की मेज पहली रात की तरह ही लगी हुई थी सो उसने खाना खाया और सो गयी।

एक बार फिर उसने कमरे में चूहे के भागने की आवाज सुनी। वह चूहा अबकी बार उसके चेहरे के ऊपर आ गया पर उसकी बोलने की हिम्मत उस दिन भी नहीं हुई और उस दिन भी वह वैसे ही चुपचाप पड़ी रही।

तीसरी रात को जब उसने चूहे के घूमने की आवाज सुनी तब उसने हिम्मत कर के गाया — "अफसोस ओ मेरे चूहे, तुमसे मेरी नफरत अब तुमको पाने की इच्छा में बदल गयी है।"

तभी एक आवाज ने कहा — "लैम्प जलाओ।"

राजकुमारी ने एक मोमबत्ती जलायी तो उसने देखा कि वहाँ कोई चूहा वूहा नहीं था वहाँ तो एक सुन्दर राजकुमार खड़ा था।

वह बोला — "मैं ही हूँ वह बू वाला बड़ी पूँछ वाला चूहा। मेरे ऊपर पड़े जादू से मुझको आजाद कराने के लिये मुझे एक ऐसी लड़की से मिलना जरूरी था जो मुझे प्यार करे और वह सब कुछ सहे जो तुमने सहा।"

राजकुमारी उस राजकुमार को देख कर तो बहुत खुश हो गयी। दोनों फिर वह गुफा छोड़ कर बाहर आ गये और दोनों ने शादी कर ली।

Pig King Like Stories From "The Pig King Like Stories-1"

1. The Pig King
2. The Enchanted Pig
3. King Krin
4. Prince Mercassin

Pig King Like Stories From "The Pig King Like Stories-2"

1. Serpent King
2. The Enchanted Snake
3. Sir Fiorante, The Magician
4. The Snake Prince
5. Snake Chief
6. The Guardian of the Pool
7. The Girl and the Snake
8. The Serpent-Zarevich and His Two Wives
9. The Enchanted Tzarevich
10. Cupid and Psyche
11. The Unseen Bridegroom
12. The Man Who Came Out Only at Night
13. The Frog Prince-1
14. The Frog Prince-2
15. The Enchanted Frog
16. Three Feathers
17. The Mouse With the Long Tail

Pig King Like Stories From "The Pig King Like Stories-3"

1. Beauty and the Beast
2. Zelinda and the Monster
3. A Hut in the Forest
4. The Bear Prince
5. The Brown Bear of Norway
6. East of the Sun and West of the Moon
7. The Black Bull of Norroway
8. The White Wolf
9. The Lame Dog
10. The Daughter of the Skies
11. The Little Green Rabbit
12. The Crab Prince
13. The Hoodie-Crow
14. The Iron Stove
15. The Padlock

Books in "One Story Many Colors" Series

1. Cat and Rat Like Stories (20 stories)
2. Bluebeard Like Stories (7 stories)
3. Tom Thumb Like Stories (13 stories)
4. Six Swans Like Stories
5. Three Oranges Like Stories (11 stories)
6. Snow White Like Stories
7. Sleeping Beauty Like Stories
8. Pig King Like Stories – 3 parts
9. Puss in Boots Like Storie (15 stories)
10. Hansel and Gratel Like Stories (4 stories)
11. Red Riding Hood Like Stories
12. Cinderella Like Stories in Europe (14+11 stories)
12. Cinderella in the World (21 stories)
13. Rumplestiltuskin Like Stories (22 stories)
14. Ali Baba and Forty Thieves Like Stories (4 stories)
15. Crocodile and Monkey Like Stories
16. Lion and Man Like Stories (14 stories)
17. Pome and Peel Like Stories (6 stories)
18. Soldier and Death Like Stories
19. Tees Maar Kahan Like Stories (11 stories)
20. Lion and Rabbit like Stories
21. Frog Princess Like Stories (7 stories)

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" कम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022